प्रकाशक—
महालचन्द बयेद ।
ओसवाल प्रेस ।
१६ सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता ।

मुद्रक—
महालचन्द बयेद ।
ओसवाल प्रेस
१६ सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता ।

भूमिका ।

श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बियों में तेरापन्थी सम्प्रदाय वालों के लिये इस पुस्तक का परिचय प्रदान अनावश्यक है।

प्रातः स्मरणीय श्रीमदाचार्य्य स्वामी भिक्षुजी महाराज एक क्षण जन्मा महापुरुष थे। पुरातन शिथिलाचारों को दूर करके सनातन सत्य प्रकाश के लिये उन्होंने जो सङ्कल्प किया उसको कितनी बाधा विपत्तियां सहते हुए भी पूर्ण किया सो इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक महापुरुष का अलौकिक जीवन वृत्तान्त तो है ही; साथ साथ उनके सम सामयिक धर्ममतों का पता भी इस से चल सकता है। इस के कर्ता श्रीमद् जीतमलजी स्वामी हैं। जो आचार्य्य श्री के चतुर्थ पट धर हुए।

भाषा मारवाड़ी है। वर्त्तमान काल के ढंग से यह नहीं लिखा गया है। पर हमारी समझ में यही इसका विशेषत्व है। ऐतिहासिक वा भाषा तत्वविद् पण्डितों के लिये इस पुस्तक का समादार इसी लिये होना चाहिये। क्योंकि कोई धर्म मत के प्रचारक महात्मा की जीवनी, उनकी जीवनकालिक घटनावली तथा उसकी उपदेशावली यथा सम्भव उसी समय की भाषा में होने से उसका यथार्थ स्वरूप ठीक २ मालूम हो सकता है।

तेरापन्थी मात्र इस पुस्तक को सादर अपनावेंगे इसमें कोई शंका नहीं, परन्तु अन्यान्य मत वाले इस पुस्तक से तेरापन्थी मत के प्रति-

ज्ञाता के धार्मिक जटिल प्रश्नों पर सरल व सहज दृष्टान्त द्वारा समाधान की शैली देख के मुग्ध होंगे।

स्थानक वासी सम्प्रदाय से अलग होने के वक्त पूज्यपाद श्रीमद् भिक्षु स्वामी के अनुयायी साधु व श्रावक बहुत ही थोड़े थे। साम्प्रदायिक व धार्मिक मत भेद से भारत के जल वायु के प्रभाव से भीषण ईर्षा द्वेष उत्पन्न होता है, यह इस देश के लोगों का स्वभाव सा ही है। परन्तु प्रबल बाधा के सम्मुखीन होकर जो महा पुरुष अपने ध्येय व लक्ष्य पर अटल अचल रहकर पहुंचते हैं वे क्रमशः लोगों के वन्दनीय व नमस्य हो जाते हैं। भारत के या जगत के प्रसिद्ध २ जितने धर्म मतप्रचारक महापुरुष आविर्भूत हुए हैं प्रायशः प्रथम जीवन में उनको विषम बाधाओं का सामना करना पड़ा है। पर यह सब बाधायें उनका अन्तर्निहित अदम्य तेज को अधिकतर प्रज्वलित किया ज्यों ज्यों बाधाये बढ़ी है त्यों त्यों महापुरुषों का महत्व का अधिकाधिक परिचय मनुष्य मात्र पाकर चकित विस्मित व पुलकित हुए हैं। जो लोग प्रारम्भ में विद्वेषी थे वही शेष में महापुरुषों का धैर्य्य, क्षमा, अदम्य अध्यवसाय, दृढ़चित्तता, सत्यपरआस्था और अलौकिक भावों से मुग्ध हो उनके भक्तों में सम्मिलित हुए हैं ऐसा दृष्टान्त इतिहास में बहुत मिलते हैं और यह पुनः आचार्य्य प्रवर श्रीमद् भिक्षु स्वामी के जीवन में भी परिस्फुट है।

भारत की आर्य्य-भूमि आध्यात्मिक उन्नतिप्रयासी महापुरुषों का आविर्भाव क्षेत्र है। युग युगान्तर से यह बात बार बार सिद्ध हो चुका है। अवश्य कुछ लोकमान्य महापुरुष नवीन मत के प्रवर्तक होकर अनेक शिष्य व भक्त पाये हैं और अब भी उन लोगों का मत प्रचलित है। परन्तु जैन धर्म जैसा "अहिंसा" का दृढ़ भित्ति पर स्थापित सनातन शाश्वत धर्म को शताब्दियों का शिथिलाचार से मुक्त करके प्रबल प्रतिद्वन्द्वियों के सामने खड़ा होनेका साहस अकेला भिक्षु स्वामी ही किया था। सिंह विक्रम से उन्हों ने सबका कुतर्क-जाल छिन्न भिन्न करके अपना मत का प्रचार किया। जहां पहले पहल १३ साधु

व इतने ही श्रावक थे आज वहां सैकड़ों श्रमण श्रमणी व लाखों श्रावक श्राविका श्री पूज्य भिक्षु स्वामी के मार्गको अङ्गीकार किये हुए हैं।

जैन आगमोंका रहस्य सरल सुबोध्य भाषा में साधारण मनुष्य के समझाने के उद्देश्य से ढाल दोहा चौपाई आदि नाना छंदों में आचार्य्य प्रवर के भाषणों का सार संग्रह करके रचा गया है। साधारण अल्प ज्ञान वाले निरक्षर व्यक्ति भी सुललित पद्यबंध धर्म ग्रन्थ को सहज में कण्ठस्थ रख सके इस लिये प्रायशः साधारण जनता में इसका आदर होता है। हिन्दीमें तुलसीदास जी का रामायण, वङ्गला में कृत्तिवासी रामायण काशीरामदास का महाभारत, चैतन्य चरितामृत आदि ग्रन्थ जैसा आबाल वृद्ध वनिता आदर की दृष्टि से देखते हैं वैसे ही जैन समाज में भी धार्मिक कथा व उपदेशावली अधिकतर पद्य में ढाल दोहा चौपाई आदि में होने के सबब आदरनीय है।

इस ग्रन्थ का कर्त्ता परम पूज्य श्री १००८ श्री जीतमलजी स्वामी (जो "जय गणि" नाम से प्रख्यात है) का संक्षेप में परिचय देना यहां अप्रासंगिक न होगा। आपका शुभ-जन्म "मारवाड़ में रोयट ग्राम में ओसवाल वंश में गोलेछा जाति में सं० १८६० । आश्विन शुक्ला २ को हुआ था। श्रीमद् भिक्षु स्वामी का स्वर्गवास १८६० भाद्र शुक्ल १३ को हुआ था। अतः ग्रन्थकर्त्ता श्री मज्जयाचार्य्य भिक्षु स्वामी के जीवन-चरित्र जो भिक्षु यश रसायण नामसे प्रकाशित किया वह प्रमाणिक होने में कोई सन्देह नहीं हो सकता। साधुओंकी रीति अनुसार आचार्य्य के जीवन की प्रधान प्रधान घटनावली का उल्लेख करके रखा जाता है। इसके अलावे श्रीमद् भिक्षु स्वामी के समसामयिक साधु मुनिराजों से श्रवण करके ग्रन्थ रचा गया इस लिये इसमें वर्णितघटनावली बड़ी ही प्रमाणिक मानी जाती है।

श्री मज्जयाचार्य्य का पाण्डित्य का वर्णना करना मादृश अल्प बुद्धि वालों के लिये असंभव है। उनका रचा हुआ "भ्रम विध्वंसन' ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी मत का एक बड़ा ही अमूल्य ग्रंथ है।

तेरापन्थी मत से दूसरे सम्प्रदाय वालों का जो जो बातों में फरक है उसका समाधान शास्त्रीय प्रमाणों से बड़ा ही विस्तार से करके हर-एक की शंका दूर करने का सहज व सरल उपाय रख गये। आप श्री भगवतीसूत्र की भाषा में जोड़ करके अपनी अपूर्व प्रतिभा व पांण्डित्य का निदर्शन रख गये हैं। आपका रचा हुआ लगभग ३-३॥ लाख गाथा होगा। इसीसे आपका विद्वत्व ; कवित्व व पांण्डित्य का सामान्य दिग्दर्शण हो जायगा।

इस ग्रंथ की भाषा मैंने ऊपर में ही कहा है कि "मारवाड़ी" है। इसलिये शुद्ध संस्कृत बहुल हिन्दी भाषा जाननेवाले इसके बहुत से शब्दों के वर्णविन्यास से चौंक न उठें, मारवाड़ी भाषा के अनुसार ही शब्दों के वर्ण विन्यास है। व्याकरण दोष नहीं है।

हिन्दी व बङ्ग भाषा के विद्वानों से प्रार्थना है कि वे मारवाडी भाषा के इस महापुरुष की जीवनी पठन व अध्ययन करके अन्यान्य भाषा के चरित्र ग्रंथ से इसको तुलनात्मक समालोचना करें। धर्म मत के परीक्षा के लिये नहीं परन्तु मतप्रचारक के जीवन से उनके उपदेशावली से लाभ उठाने के उद्देश्य से इसे अपनावें। जैनमत के खास कर तेरापन्थी सम्प्रदाय के आचार्य्य तथा साधु महाराजों के बनाये हुए बहुत से ग्रंथ विद्वानों के देखने व मनन करने लायक है। इन ग्रंथों से ऐतिहासिकों को भाषा तत्वविदों को धर्म्म मत समालोचकों को, दार्शनिकों को बहुत सी सामग्री उनके गवेषणा के लिये मिलेगी। तेरापन्थी सम्प्रदाय के वर्त्तमान आचार्य्य श्रीमद् भिक्षु स्वामी के अष्टम पट्टधर परमपूज्य श्री १००८ श्री कालूरामजी स्वामी का व उनके शिष्य वर्ग का दर्शन सेवा करने से अन्य मतावलम्बी विद्वानों को जैन श्वे० तेरा पन्थी सम्प्रदायके अमूल्य ग्रंथराजि का परिचय पा सकेंगे। साथ साथ साधुओं का दैनन्दिन कार्य्य कलाप व उपदेश व्याख्यान सुनकर कृतार्थ होंगे। जिन महापुरुष की जीवन कथा को दृष्टान्त में रखके जिनका जश रसायण से उत्तरोत्तर अधिक तर पाण्डित्य व प्रतिभाशाली अधिक तर तपस्वी, वैरागी, त्यागी,

मुनिराजों ने वर्त्तमान में तेरापन्थी संप्रदाय को अलङ्कृत कर रखा है उनके दर्शण की आकांक्षा इस वर्त्तमान पुस्तक के पठन से होगा यह स्वभाविक है। तेरा पंथी संप्रदाय के साधु-मुनिराज संसार से बिलकुल विरक्त रहते हैं। पुस्तकादि कुछ छपवाते नहीं। समस्त ग्रन्थ हस्तलिखित रखते हैं। कोई कोई श्रावक अध्यवसाय पूर्वक उनको कंठस्थ कर दूसरा हस्तलिखित प्रति बनवा के पीछे छपाते हैं। श्रीयुक्त महालचंदजी बड़ा ही परिश्रम व उद्योग करके यह पुस्तक छपाया है। आशा है समाज में तो उनका इस पुस्तक का आदर होगा ही परन्तु दूसरे समाज वाले इसका यथोचित पठन व आलोचना करके इस पर योग्य सम्मतियां देंगे एवं तेरापंथी समाज के अन्यान्य प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थराजि पर औतसुक्य प्रगट करेंगे।

निवेदक—

छोगमल चोपड़ा।

प्रकाशक के दो शब्द ।

यद्यपि यह ग्रन्थ पहले भी बम्बई के किसी छापेखाने में छप चुका है। किन्तु वह किसी प्रयोजन का नहीं हुआ। छपा न छपा एक सा ही रहा। प्रूफ संशोधन तो नाम मात्र का भी नहीं हुआ। कहीं २ तो पंक्तिये और गाथे भी छूटे हुए हैं। सारांश यह कि सम्पूर्ण ग्रन्थ में दो चार पंक्तिये भी शुद्ध मिलनी मुश्किल है। ऐसी दशा में स्वामी जी के शिक्षा वाक्य और दृष्टान्तों का वास्तविक आनन्द इस पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ से प्राप्त होना और जीवनकालिक घटना का जानना एक प्रकार दुर्लभ सा हो गया है। ऐसी दशा इस ग्रन्थ रत्न को देख कर इच्छा हुई कि यदि मूल पड़त से मिलान कर इसका संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाय तो श्रावकों के लिये एक परम उपयोगी वस्तु होगी। क्योंकि संसार में शायद ही कोई ऐसा बुद्धिमान मनुष्य होगा जिनको अपने धर्माचार्य की जीवनकालिक-घटना-जानकारी की अभिलाषा न हो। इस ग्रन्थ से स्वामीजी की जीवन घटनावली की जानकारी तो होगी ही साथ २ स्वामीजी के दृष्टान्त, चरचा करने में बहुत कुछ सहायक होंगे।

संशोधन करना तो अपने वश की बात थी सो कर लिया गया। किन्तु प्रकाशित करनेका साहस किसी प्रकार नहीं हुआ। होता भी कैसे जहां भ्रमविध्वंसनम् और सुदर्शन चरित्र जैसे उत्तम ग्रन्थों की क्रमशः २, ४ वर्षों में ३०० और १०० पुस्तकों की खपत हो वहां प्रकाशक का साहस कहांतक हो सकता है यह पाठक ही विचारें। हर्ष की बात है कि श्रीयुक्त बाबू ईशरचन्दजी चोपड़ा, मगन भाई जवेरी दानचन्दजी चौपड़ा, रायचन्दजी सुराना, कस्तूरचन्दजी सूरजमलजी चौधरी और कुम्भकरणजी टीकमचन्दजी चौपड़े ने अपनी २ इच्छानुसार थोक पुस्तकें लेनी स्वीकार की। यह उपरोक्त उत्साही सज्जनों की सद्प्रेरणा का ही फल है कि आज मैं इस ग्रंथ रत्न का संशोधित संस्करण लेकर आप लोगों की सेवा में उपस्थित हो सका हूं।

इस पुस्तक के संशोधन करने में, भरसक सावधानी से काम लिया गया है; तथापि भूल करना मनुष्य का स्वभाव है अतः थोड़ो या बहुत भूलें प्रायः प्रत्येक मनुष्य से हो हो जाती है। यदि प्रमादवश या मेरी अल्पज्ञता के कारण कुछ भूल चूक या त्रुटियां रह गई हों तो उदारहृदय पाठक मुझे क्षमा करें।

निवेदक—महालचन्द बयेद।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

भिक्षु जश रसायण

॥ दोहा ॥

सिद्ध साधु प्रणमी सखर, आणी अधिक उलास ।

सुख दायक आखूं सरस, चारू भिक्खु विलास ॥१॥

गुणवंतना गुण गावतां, उत्कृष्ठ रसायण आय ।

पद तीर्थंकर पामिये, कह्यो सुज्ञाता मांय ॥२॥

शासन वीर तणे शमण, कह्या अधिक अधिकाय ।

गुण बुद्धि तप अरु ज्ञान करि, चउदश सहंस सुहाय ॥३॥

सर्वज्ञ जिन मुनि सत सय, अवधि तेर सय आण ।

मन पज्जव सय पञ्च मुनि, चिउंसय वादी पिछाण ॥४॥

पूर्वधर तिण सय पवर, वैक्रे सत सय साध ।

समणी सहंस छतीस शुद्ध, चउदश सय निरुपाधि ॥५॥

सुधर्म्म जम्बू तिलक शिव, अन्य मुनि अमर विमाण ।

हिवडाँ पञ्चम कालमें, भिक्खु प्रगट्या भाण ॥६॥

चतुर्थ आरा नां मुनि, नयणाँ देख्या नांय ।

धन २ भिक्खु चरण धर, प्रत्यक्ष दर्शन पाय ॥७॥

किहाँ उपना जन्म्या किहाँ, परभव पद किहाँ पाय ।
क्रिया चौमासा किण बिधे, सांभलज्यो सुखदाय ॥८॥
चिउंसय सत्तर वर्ष लग, नन्दीवर्द्धन निहाल ।
त्याँ पीछे विक्रम तणो, साम्प्रत संवत् संभाल ॥९॥

॥ ढाल पहली ॥

सुण बाई श्रूप मणहेरूो लागै ॥ पदेशी ॥

सकल द्वीप शिरोमणिरे लाल। जम्बू द्वीप सुतंत । अष्टमी चन्द्कला इसोरे लाल भरत क्षेत्र भलकंत । भवजीवांरे ॥ रूड़ो लागै भिक्खु ऋष-राय । रूडो लागै स्वाम सुखदाय ॥ १ ॥ बतीस सहंस देशां मझैरे लाल । नरधाम मरुधर देश । कांठै नगर कंटालियोरे लाल, कमधज राज करेस ॥२॥ साह बलूजी तिहां वसैरे लाल, ओसवंस अवतंस । जाति संकलेचा जाणज्योरे लाल, बड़े साजन सुप्रशंस ॥३॥ दीपांदे तसु भारज्यारे लाल, सरल भद्र सुखकार । उदरे भिक्खु उपनारे लाल, देख्यो सुपन उदार ॥ ४ ॥ मृगपति महा महिमा निलोरे । पुण्यवंत सुत सुपसाय । सफल स्वप्न सुखदायकोरे लाल, देखी हरषी माय ॥५॥ यशधारी सुत जन्मियोरे लाल, अनुक्रम अवसर आय । सम्वत् सतरैसे तियासियै रे लाल, पञ्चाग लेखै ताहि ॥ ६ ॥ आषाढ़ सुदी

पख ओपतोरे लाल, तेरस तिथ जणाय। सर्व्व सिद्धा त्रयोदशीरे लाल, कहै जगत् में वाय ॥ ७ ॥ दशां माहिलो दीपतोरे लाल, नक्षत्र मूल निहाल। पायो चौथा परवरोरे लाल, जन्म थयो तिण काल ॥ ८ ॥ जन्म कल्याण थयां पछैरे लाल, बाल भाव मुकाय। उत्पत्तिया बुद्धि अति घणीरे लाल, विविध मेलवै न्याय ॥ ९ ॥ सुन्दर इक परणया सहीरे लाल, सुख-दाइ सुविनीत। भिक्खु ने परभव तणोरे लाल, चिन्ता अधिको चित्त ॥ १० ॥ केता दिन गछवास्यां कन्हेरे लाल, जाता कुल-गुरु जाण। पाछे पोत्याबंध कन्हेरे लाल, सुणवा लाग्या बखाण ॥ ११ ॥ पछै धारया रुघनाथजीरे लाल, छोड्या पोत्याबंध। ते हिवडां संजम सरधै नहींरे, नसरधै सामायक संध ॥ १२ ॥ काल कितोक बित्यां पछैरे लाल, शील आदरियो सार। भीक्खु ने तसु भारज्यारे लाल, चारित्रनी चित्त धार ॥ १३ ॥ लेवां संजम त्यां लगैरे लाल, एकान्तर अवधार। अभिग्रह एहवो आदर्योरे लाल, विरक्त पणै सुविचार ॥ १४ ॥ तठा पछै त्रिया तणोरे लाल, पड़ियो ताम वियोग। वर सगपण मिलता बहुरे लाल, भिक्खु न वंछ्या भोग ॥ १५ ॥ दीक्षा ने त्यारी थयारेलाल, अनुमति न दिये माय। रुघनाथजो

ने इम कह्योरे लाल, म्हे सिंह स्वप्न देखाय ॥ १६ ॥ तब बोल्या रुघनाथजीरे लाल, सांभल बाई वाय । सिंह तणी पर गूंजसीरे लाल, ए स्वप्नोछै चवदां मांय ॥ १७ ॥ अनुमति मा आपी तदारे लाल, सहंस रोकड़ उन्मान । भिक्खु दिया जननी भणी रे लाल, चारित लेवा ध्यान ॥ १८ ॥ दीख्या महोछव दीपतोरे लाल, बगड़ी शहर बखाण । द्रव्ये चारित्र धारियोरे लाल, भावे चरण म जाण ॥ १९ ॥ सम्वत् अठारै आठै समैरे लाल, घर छोड्यो विष जाण । द्रव्य गुरु धारंया रुघनाथजीरे लाल । पिण नाई धर्म्म नी छाण ॥ २० ॥ प्रथम ढाल प्रगट पणैरे लाल, कह्यो भिक्खु नो जन्म कल्याण । बाल द्रव्य दीक्षा वरणवीरे लाल, वारुं आगै बखाण ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

अल्प दिवसरे आंतरैं, सिख्या सूत्र सिद्धन्त ।
तीव्र बुद्धि भीक्खु तणी, सुखदाई शोभन्त ॥१॥
विविध समय रस वांचतां, वारुं कियो विचार ।
अरिहंत वचन आलोचतां, ऐ असल नहीं अणगार ॥२॥
यां थापिता थानक आदरया, आधाकर्म्मी अजोग ।
मोल लिया माहे रहे, नित्य पिण्ड लिये निरोग ॥३॥

पडिलेह्यां विण रहै पडया, पोथ्यां रा गञ्ज पेख ।
विण आज्ञा दीक्षा दिये, विवेक विकल विशेष ॥४॥
उपधि वस्त्र पात्र अधिक, मर्य्यादा उपरन्त ।
दोष थापै जाण जाण ने, तिण सूं ऐ नहीं सन्त ॥५॥
सरधा पिण साची नहीं. असल नहिं आचार ।
इण विध करै आलोचना, पिण द्रव्य गुरु सूं अति प्यार ॥६॥
पूछ्यां जाब पूरो न दे, काल कितौ इम थाय ।
पीत द्रव्य गुरुसूं परम, ते करै शोभ सवाय ॥७॥
पूछै बात आचारनीं, जाणै वैरागी जेह ।
तिण सूं पूछै बलिवली, पिण नहीं ओर सन्देह ॥८॥
पठधारक भिक्खु प्रगट, हद आपस में हेत ।
इतलै कुण विरतन्त हुओ, सुणज्यो सहू सचेत ॥९॥

॥ ढाल २ जी ॥

परभवो मन में चिन्तवे मुझ भांग ॥ एदेशी ॥

इह अवसर मेवाड में, राज नगर सुजाण । राज समुद्र पासै बस्यो, अधिका त्यां आइठांण ॥ १ ॥ त्यां बस्ती घणी महाजनां तणी, जाण सूत्राना जेह । वंदणा छोडी निज गुरु भणी, दिल में पड़िओ संदेह। मुरधर में रुघनाथजी ॥ २ ॥ सांभली सहु बात, भिक्खु ने तिहां भेजिया । शङ्का मेटण साख्यात ॥ ३ ॥ बुद्धिवंत विण भ्रम ना मिटै, तिण सं थे बुद्धि-

वान। जाय शङ्का मेल्यो जेहनीं, इम कहि मेल्या ते स्थान ॥ ४ ॥ टोकरजी हरनाथजी, वीरभाणजो साथ। भिक्खु ऋष भारीमालजी, दीक्षा दी निज हाथ ॥ ५ ॥ ए साथ लेई भिक्खु आविया, राज नगर मझार। संवत् अठारै पनरै समें, चौमासो गुणकार ॥ ६ ॥ चूंप धरी चरचा करी, भायांथी तिण बार। ते कहै बात भिक्खु भणी, आप देखो आचार ॥ ७ ॥ आधाकरमी-थानक आदरया, मोल लिया प्रसिद्धि। उपधि वस्त्र पात्र अधिकही, आ पिण थे थाप कीधी ॥ ८ ॥ जाणा किंवाड़ जड़ो सदा इत्यादिक अवलोक। म्हें वन्दना करां किण रीतसूं, थेतो थाप्या दोष ॥ ९ ॥ द्रव्य गुरुनो बैण राखवा, भिक्खु बुद्धिना भण्डार। अकल चतुराई करी तदा, दिया जाब तिवार ॥ १०॥ कला बिविध केलवी करी, त्यांने पगां लगाया। ते कहै शंक मिटी नहीं, पिण निसुणो मुझ वाया ॥ ११ ॥ आप बैरागी बुद्धिवंत छो, आपरो परतीत। तिण कारण वंदना करां, आप जगतमें वदीत ॥ १२ ॥ इम कहिनें वंदना करी, इह अवसर मांय। भिक्खु रे असाता वेदनी, उदय आवी अथाय ॥ १३ ॥ अधिक ताव अति आकरो, सीओदोहरो सहणो। उत्तम नर नें ते

अवसरे, रूड़े चित रहणो ।। १४।। अधम पुरुष दुःख उपना, करे हायतराय । समचित्त वेदन ना सहे, पापे पिण्ड भराय ।। १५।। तीव्र तापनी वेदना, भिक्खु ने अधिकाय । तिण अवसर में आविया, एहवा अध्यवसाय ।। १६ ।। म्हे साचां ने तो जूठा किया, श्री जिन वचन उठाय । आउ आवे इह अवसरै, तो माठी गति पाय ।। १७ ।। द्रव्य गुरु काम आवै कदी, तो हिवे बात बिचारूं । कारण मिटियां निर्पक्षसू, साचो मारग धारूं ।। १८ ।। जेम सिद्धंत में जिन कह्यो, चूंप धरी तिम चालूं । कारण न राखूं केहनी, झट जिन मारग झालूं ।। १९ ।। एहवो अभिग्रह आदरयो, भिक्खू ताव मझार । उत्तम पुरुष ने आवै घणो, भय पर भवनो अपार ।। २० ।। दूजो ढाले आविया, राज नगर सुरीत । आंख अभ्यन्तर उघड़ी, निर्मल धारी नीत ।। २१ ।।

॥ दोहा ॥

तुरत ताव तब उतर्यो, विधसूं कियो विचार ।
हिवै साचो मत आदरी, करूं आतम तणो उद्धार ।।१।।
रखे जूठ लागेला मो भणी, तो करणी पकी पिछाण ।
इम चिंतवि सिद्धंतने, वाच्या अधिक सुजाण ।।२।।

जो साचा ने झूठा कहूं, तो परभवरे मांय ।
जीभ पामणी दोहिली, विविध पणौं दुख पाय ॥३॥
पख राखी द्रव्य गुरु भणी, जो कहूं सांचा सोय ।
तो पिण परभवने विषे, काम कठिन अति होय ॥४॥
ओ दृष्टान्त ओखांडो अछै, एहवी मन में धार ।
दोय बार सूत्रां भणी, वांच्या धर अति प्यार ॥५॥
सूत्र विविध निर्णय करी, गाढी मन में धार ।
सम्यक्त चारित बिहुं नहीं, एहवो कियो विचार । ६॥
भायां ने भिक्खु कह्यो, थें तो साचा सोय ।
म्हे झूठा गुरु सूं मिली, शुद्ध मग लेस्यां जोय ॥७॥
भाया सुण हरष्या घणा, बोल्या एहवी वाय ।
अब म्हांरी शंका मिटी, दिल में रही न कांय ॥८॥
प्रतीत आप तणी हुंती, जिसी म्हांरा मन मांय ।
तिसी दिखाडी तुरत ही, इम कही हरषत थाय ॥६।

॥ ढाल ३ जी ॥

(राणी भाखै सुणरे सूड़ा ॥ एदेशी ॥)

राजनगर थी कियो विहार । चौमासो उतरियां सार । आवै मुरधर देश मझाररे । मन प्यारा भिक्खु जश रसायण सुणिजै ॥ १ ॥ साधां में सहु बात सुणाई । सरधा किरिया ओलखाई । ते पिण सुण हरष्या मन मांहीरे ॥ २ ॥ टोकरजी हरनाथजी ताय

भारीमाल घणा सुखदाय। समझी लागा पूजरे पाय रे ॥ म० ॥ ३ ॥ वीरभाणजी पिण तिणवार। आदरचा भिक्खु वयण उदार। आवै सोजत शहर मझार रे ॥ म० ॥ ४ ॥ बीचै गाम नान्हा जाणी सोय। दोय साध किया अवलोय। सीख इणं पर दीधी जोयरे ॥ म० ॥ ५ ॥ वीरभाणजी ने कहै वाय। जो थे पहिलां जावो गुरु पाय। तो या बात म करज्यो कांय रे ॥ म० ॥ ६॥ पहिलां बात सुणयां भिड़काय। मनखञ्च हुवै मन मांय। तो पछै सम-झाया दोरा जायरे ॥ म० ॥ ७ ॥ नेम तो ते आपां रा गुरु है। मन खंच्यां समझणा दुकर है। विग-ड़ियां पछै काम न सरहै रे ॥ म० ॥ ८ ॥ कला विनय करी हूं कहस्यूं। दिल श्रद्धा बैसाड़ी देसूं। युक्ति सूं समझाई लेसूं रे ॥ म० ॥६ ॥ स्वामी एम त्यांने समझाया। वीरभाणजी आगूंच आया। रुघनाथजी सोजत पायारे ॥ म० ॥ १० ॥ करजोड़ी ने वन्दना कीधी। पूछै द्रव्य गुरु प्रसिद्धि। भायांरी शङ्का मेट दीधी रे ॥ म० ॥ ११ ॥ वीरभाणजी बोल्या वायो। भाया तो साचो भेदज पायो। मन शङ्क हुवै तो मिटायो रे ॥ म० ॥ १२ ॥ आधाकर्मी थानक अशुद्ध आहार। बिन कारण नित्यपिण्ड वार। आपें भोगवां

ए अणाचार रे ॥ म० ॥ १३ ॥ वस्त्र पात्र अधिका सेवां । विन आगन्यां दीख्यां देवां । विवेक विकल ने मूंड लेवां रे ॥ म० ॥ १४ ॥ दिन रात्रि में जड़ां किंवाड़ । इत्यादिक वहु दोष विचार । त्यांरी थाप आपांरे धार रे ॥ म० ॥ १५ ॥ भाया तो कहै साची साख्यात । तिणमें झूठ नहीं तिलमात । द्रव्य गुरु निसुणी ए वात रे ॥ म० ॥ १६ ॥ द्रव्यगुरु कहै यूं कांई वोलै । वीरभाणजी पाछो झखोले । कुड़ो तो भिक्खु पास अतोल रे ॥ म० ॥ १७ ॥ म्हारे कन्हें तो वानगी तास । कूड़ो रास भीखणजी पास । इम सांभल हुआ उदासरे ॥ म० ॥ १८ ॥ वीरभाणरे नहीं समाही । तिणसूं आगूंच वात जणाई । हिवै आया भिक्खु झषराईरे ॥ म० ॥ १९ ॥ तंत ढाल कही ए तीजी । वीरभाण नी वात कहीजी । झष भिक्खु नी वात रहीजी रे ॥ म० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

हिव भिक्खु द्रव्य गुरु भणी, वन्दे वेकर जोड़ ।
माथे हाथ दियो नहीं, चश्मा देख्या ओर ॥१॥
जब भिक्खु मन जाणियो, आगूंच आखी वात ।
पहिलीं मनड़ो फिर गयो, तो पूछूं साख्यात ॥२॥
कर जोड़ी ने इम कहै, यूं क्यूं स्वामी नाथ ।

चित्त उदास तिण कारणे, माथे न दियो हाथ ॥३॥
द्रव्य गुरु भाखै तांहरे, शंक पड़ी सुविचार ।
तिण सूं कर शिर ना दियो, मन पिण फाटो धार ॥४॥
वलि थांरे ने म्हांहरे, भेलो नहीं आहार ।
वचन सुणी भिक्खु कहै, शंक मेटो इहवार ॥५॥
वलि भिक्खु मन चिन्तवे, म्हांमें यांमें जाण ।
सञ्जम समगत को नहीं, पिण हिवड़ा न करणी ताण ॥६॥
प्राछित लेई एहनें, यूं प्रतीत उपजाय ।
पछे खपकर समझायनें, आणूं मारग ठाय ॥७॥
इम चिन्तव द्रव्य गुरु भणी, बोले एहवी वाय ।
शंक जाणो तो मुझ भणी, प्राछित दो सुखदाय ॥८॥
इम प्रतीत उपजायने, भेलो कियो आहार ।
हिवै समझावे किण विधे, ते सुणज्यो विस्तार ॥९॥

॥ ढाल ४ थी ॥

(हे राणो ने हो समझावे पण्डिता धाय एदेशी)

हिवे द्रव्य गुरुने हो समझावे भिक्खु स्वाम ।
निसुणो वात अमाम । सूत्र वयण दिल सरदहो ॥
१ ॥ अरि अघ हणिवे हो देव कह्या अरिहन्त । गुरु
जाणो निग्रन्थ । धर्म्म जिनेश्वर भाखियो ॥ २ ॥
साची सरधा हो ए जाणो तंत सार । पामै तिण सूं
पार । आज्ञा बारै धर्म को नहीं ॥ ३ ॥ या तीनूं में

हो भेल म जाणो लिगार। अन्तर आंख उघार।
सूत्र सीख सरधो सही ॥ ४ ॥ और वस्तुमें हो भेल
पड़ै जो आय। तो रूड़ी पिण विगड़ाय। तो पुन्य
पाप भेला किम हुवै ॥ ५ ॥ अशुभ जोगां सूं हो
वंधै पाप एकन्त। शुभ सूं पुण्य वंधंत। पुण्य पाप
भेला किसा जोग सूं ॥ ६ ॥ एके करणी हो वंधै
पुन्य के पाप। तिणमें मिश्र म थाप। करणी तीजी
जिण ना कही ॥ ७ ॥ भिक्खु भाखै हो द्रव्य गुरुने
अवलोय। जिन वच साहमो जोय। ग्रही टेक ने
परिहरो ॥८॥ शुद्ध श्रद्धा हो हाथ न आई श्रीकार।
असल नहीं आचार। थाप दीसै घणा दोषरी ॥ ९
॥ जो थे मानो हो सूत्र नी वात। तो थेइज म्हारा
नाथ। नहिंतर ठीक लागै नहीं ॥१०॥ म्हे घर छोड्यो
हो आतम तारण काम। और नहीं परिणाम।
तिण सूं वार वार कहूं आपने ॥ ११ ॥ आप मानो
हो स्वामी सूत्रानी वात। छोड़ देवो पक्षपात। इक
दिन परभव जावणो ॥ १२ ॥ पूजा प्रशंसा हो लही
अनन्ती वार। दुर्लभ श्रद्धा श्रीकार। निर्णय करो
आप एहनो ॥ १३ ॥ विविध विनय सूं हो आख्या
वयण उदार। मान्या नहीं लिगार। क्रोध करी
उलटा पड़्या ॥ १४ ॥ भिक्खु भारी हो स्वामी वुद्धि

ना भगडार। मन सूं कियो विचार। ए हिवड़ा न दीसै समझता ॥ १५ ॥ धोरे २ हो समझावस्यूं धर पेम। आप विचारो एम। तिण सूं आहार पाणी तोड़्यो नहीं ॥ १६ ॥ भिक्खु भाखै हो भेलो करां चौमास। चरचा करस्यां विमास। साच झूठ निर्णय करां ॥ १७ ॥ साची सरधा हो आदरस्यां सुख दाय। झूठी देस्यां छिटकाय। तब बोल्या रुघनाथ जी ॥ १८ ॥ म्हारा साधां ने हो तूं लेवै फंटाय। जो चौमासो भेलो थाय। भिक्खु कहै राखो जढ़ बाज ने ॥ १६ ॥ ते चरचा में हो समझै नहीं लिगार। करो चौमासो ओकार। दुलभ सामग्री ए लही ॥ २० ॥ इण विध कोधा हो भिक्खु अनेक उपाय। तो पिण नाया ठाय। कर्म घणा तिण कारणे ॥ २१ ॥ वलि मिलिया हो भिक्खु दूजी बार। बगड़ी शहर मझार। आय द्रव्य गुरु ने इम कहै ॥ २२ ॥ स्वामी भूला हो शुद्ध श्रद्धा आचार। मनमें करो विचार। विविध प्रकारे समझाविया ॥ २३॥ पिण नहीं मानी हो द्रव्य गुरु बात लिगार। जाण लियो तिणवार। ए तो न दिसे समझता ॥ २४ ॥ निज आत्म नो हो हिव हूँ करूं निस्तार। एहवी मन में धार। आहार पाणी तोड़ निसर्या ॥ २५ ॥ चौथी ढाले हो आख्यो

चरचा सरूप । आछो रीत अनूप । आगलि बात सुहामणी ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

थानक बारै निसरया, तड़के आहारज तोड़ ।
जब द्रव्यगुरु मन जाणियो, बात हुई अति जोर ॥१॥
रहिवा जागां ना मिलै, तो फिर थानक आय ।
सेवक फिरियो शहर में, जागां म दीज्यो काय ॥२॥
जो रहिवा भिक्खु भणी, जागां दीधी जाण ।
सर्व साथ सुणज्यो सही, संघ तणी छै आण ॥३॥
कड़ली कुबुद्धिज केलवी, आसी पाछा एम ।
जब भिक्खु मन जाणियो, करिवो विचार केम ॥४॥
पुर में जागां ना दिये, जो फिर थानक जाय ।
तो पाछो फन्द में पड़ूं, दुखे निसरणो थाय ॥५॥
एहवी करे विचारणा, विहार कियो तिण वार ।
शूरवीर सिंह नी परै, न डरया मूल लिगार ॥६॥
आया बगड़ी बारणे. बावल अधिक विशेष ।
बाजी तब पग थांभिया, भिक्खु परम विवेक ॥७॥
जैतसिंहजी री जिहां, छत्रया अधिक उदार ।
देखी ने आया जिहां, बैठा छतया मझार ॥८॥
पुर मांहे जाण्यो प्रगट, सुणयो द्रव्य गुरु सोय ।
आया छत्रया ने विषै, साथे बहुला लोय ॥९॥

॥ ढाल ५ मीं ॥

(राम कहै सुग्रीवने रे लङ्का केतिक दूर परदेशी)

वगड़ी री छत्र्यां मझेंरे, बहु लोक बोलै इम वाय। टोलो छोड़ी मत निकलोरे। धैर्य धरो मन मांय। चतुर नर भिक्खु बुद्धि ना भण्डार ॥ १ ॥ रुघनाथजी इसड़ी कहै रे, थे मानो भीखणजी बात। अबारू आरा पांचमुं रे, नहीं निभोला साख्यात ॥ च० ॥ २ ॥ भिक्खु बलता भाखै भलो रे, म्हे किम मानां तुझ बात। म्हें सूत्र बांच निर्णय किया रे, शङ्का नहीं तिल मात ॥ च० ॥ ३ ॥ तीर्थ श्रीजिन-वर तणो रे, छेहड़ा तांई विचार। श्री जिन आणा सिर धरी रे, शुद्ध पालस्यूँ संजम भार ॥ च० ॥ ४ ॥ ए बचन सुणी द्रव्य गुरु भणी रे, तूटी आश तिवार। मोह आयो तिण अवसरै रे, चिन्ता हुई अपार ॥ च० ॥ ५ ॥ सामजी ऋष नो साध थो रे, उदैभाण कहै एम। टोला तणा धणी वाजने रे, आंसू पच करो केम ॥ च० ॥ ६ ॥ किणरो एक जावै तरै रे, आवै फिकर अपार। म्हांरा पांच जावै सही रे, गण में पड़ै बिगाड़ ॥ च० ॥ ७ ॥ मोह देखी द्रव्य गुरू भणी रे, दृढ़ चित्त भिक्खु धार। मैं घर छोड्यो तिण दिने रे, मुझ माता रोई अपार

॥ च० ॥ ८ ॥ भागलां भेलो हूँ रहूं रे, तो परभव में पेख । विवध परे रोवणु पड़े रे. पामें दुःख विशेष ॥ च० ॥ ९ ॥ कठिन छाती इण विध करी रे, वारू ज्ञान विचार । सैंठा रह्या तिण अवसरै रे, उत्तम जीव उदार ॥ च० ॥ १० ॥ द्वेष स्यूं तुरत नर ना डीगैरे, राग दे तुरत चलाय । द्रव्य गुरू मोह आणयो सही रे, पिण कारी न लागी कांय ॥ च० ॥ ११ ॥ फिर बोल्या रुघनाथजी रे. जासी कीतियक दूर । आगो थांरो ने पूठो मांहरो रे, लोक लगावस्यूं पूर ॥ च०॥ १२ ॥ परीषह खमण री मुझ मन मझे रे, भिक्खु भाखै विशाल । इम तो डरायो नहीं डरूं रे, जीवणुं कितोएक काल ॥ च० ॥ १३ ॥ विहार कियो बगड़ी थकी रे, द्रव्य गुरु लारैं देख । चरचा करी बड़लु मझे रे, सांभलज्यो सुविशेष ॥ च० ॥ १४ ॥ रुघनाथजो इसड़ी कहै रे, सांभल भिक्खु वात । पूरो साधपणुं नहीं पलै रे, दुखमकाल साख्यात ॥ च० ॥ १५ ॥ भिक्खु कहै इम भाखियो रे, सूत्र आचाराङ्ग मांय । ढीला भागल इम भाखसीरे, हिवड़ा शुद्ध न चलाय ॥ च० ॥ १६ ॥ बल संघयण हीणा घणा रे, पञ्चम काल प्रभाव । पूरो आचार पलै नहीं रे, नहिं उत्सर्ग प्रस्ताव ॥ च० ॥ १७ ॥ आगूंच

जिनजी भाखियां रे, इम कहसी भेषधार । ए जाय सुणी रुघनाथजी रे, कष्ट हुवा तिणवार ॥ च० ॥ १८ ॥ गुरु चेलांरे हुई घणीरे, चरचा मांहो मांहि । संक्षेप मात्र कही इहां रे, पूरी केम कहाय ॥ च० ॥ १६ ॥ इण्य गुरु कहे भिक्खु भणी रे, दोय घड़ी शुभ ध्यान । चोखो चारित्र पालियां रे, पामें केवल ज्ञान ॥ च० ॥ २० ॥ भिक्खु कहै इण विध लहै रे, वे घड़ी केवल ज्ञान । तो दोय घड़ी तांई रहूं रे, श्वास रूंधी धरूं ध्यान ॥ च० ॥ २१ ॥ प्रभव सिज्जंभव आदि दे रे, वे घड़ो पाल्यो के नाहिं । केवल त्यांने न उपनो रे, सोच विचारो मन मांहि ॥ च० ॥ २२ चवदे सहंस शिष्य वीरना रे, सात सौ केवली सोय। तेर सहंस ने तीन सो रे, छद्मस्थ रहिया जोय ॥ च० ॥ २३ ॥ त्यांने केवल नहीं उपनो रे, त्यां वे घड़ी पाल्यो के नाहिं । थांर लेखें त्यां पिण नहीं पालियो रे, वे घणी चरण सुहाय ॥ च० ॥ २४ ॥ बारे वर्ष तेरह पख रे, वीर रह्या छद्मस्थ । थारे लेखें त्यां पिण नहीं पालियो रे, दोय घड़ी चारित ॥ च० ॥ २५ ॥ इत्यादिक हुई घणी रे, चरचा मांहो मांहि । समझाया समझ्या नहीं रे, किया अनेक उपाय ॥ च० ॥ २६ ॥ पवर ढाल कही पांचमी रे, चर्चा विविध

प्रकार। हिव भिक्खु किण रीत सूं रे, करै आत्तम नो उद्धार॥ चतुर नर सांभलो भिक्खु विलास ॥ २७॥

॥ दोहा ॥

द्रव्य गुरु तो समभ्या नहीं, खप बहु कीधी ताहि ।
जैमलजी काका गुरु, आया त्यांरे पाहि ॥१॥
भद्र सरल प्रकृति भली, जैमलजी री जाण ।
भिक्खु तास भली परैं, समभावैं सुविहाण ॥२॥
जैमलजी रे युक्ति सूं, दी सरधा बैसार ।
भिक्खु रे साथे भला, ते पिण हो गया त्यार ॥३॥
वात सुणी रुघनाथजी, भांग्या तसु परिणाम ।
फकीर वालो दुपटो हुसी, न हुवै थांरो नाम ॥४॥
बुद्धिवन्त साधु साधवी, लेसे त्यांनि लार ।
लाडे कोडे घर छोडिया, और होसी निराधार ॥५॥
थाने रोसी सहु जणा, थें म विचारो वात ।
थारे बहु परिवार छै, घणा तणा थे नाथ ॥६॥
थांरा साधा रा जोग सूं, होसी भिक्खु रो काम ।
टोलो भिक्खु रो बाजसी, थारो न हुवै नाम ॥७॥
इत्यादिक वचनां करी, पाड्या तसु परिणाम ।
तब जैमलजी बोलिया, सुणो भीखणजी आम ॥८॥
गलां जितो हूं कल गयो, थे शुद्ध पालो सोय ।
पंडितां रे जाणी वतें, इम बोल्यां अवलोय ॥९॥

॥ ढाल ६ ठी ॥

(सुण सुण रे शिष्य सयाणा एदेशी)

शिष्य भिक्खु ना महा सुखकारी। भारीमाल सरल भद्र भारी॥ त्यांरो तात कृष्णोजी तास। बेहुं घर छोड़या भिक्खु रे पास॥ सुण सुणरे शिष्य सयाणा रूड़ो भिक्खु जश रसाणा॥ भिक्खु जश रस अमृत भारी। शिव सम्पति सुख सहचारी॥ १॥ आसरै दशमें वर्ष आया। भारीमाल सरल सुखदाया॥ भेषधार्यां माहिं छता सोय। सुत तात भिक्खु शिष्य होय॥ सु०॥ २॥ त्यांरे चेला तणी छै रीत। तिण सूं शिष्य किया धरि प्रीत॥ त्यांमें रह्या आसरै वर्ष चार। पछै निसरिया भिक्खु लारै॥ सु०॥ ३॥ कृष्णाजी री प्रकृति करड़ी जाणी। भारीमाल भणी वदै वाणी॥ संजम लायक नहीं तुझ तात। तुम तो उत्तम जीव विख्यात॥ सु०॥ ४॥ आपां नवी दीख्या लेस्यां सोय। लागू होता दिसै बहु लोय॥ आहार पाणी वचनादिक ताय। कृष्णां जीने दुक्कर अधिकाय॥ सु०॥ ५॥ तुझ मन मुझ पास रहिवा रो। के निज जनक कन्हे जावारो॥ इम पूछ्यो भिक्खु धर प्रेम। भारीमाल उत्तर दियो एम॥ सु०॥ ६॥ म्हांरे तात थकी कांई काम। हूं तो

आप कन्हें रहस्यूं ताम ॥ संजम पालस्यूं रूड़ी रीत। मोने आप तणी परतीत ॥ सु० ॥ ७ ॥ कृष्णाजीने भिक्खु कहै ताम । थांसूं मूल नहीं म्हारे काम ॥ चारित्र पालणो दुक्कर कार । तिण सूं थाने न लेवां लारै ॥ सु० ॥ ८ ॥ किस्नोजी कहै मोने न लेवो । तो म्हारो पुत्र मो ने सूंप देवो ॥ सुत ने राख सूं मुझ साथ । इण ने लेजावा न देऊं विख्यात ॥ सु० ॥ ९ ॥ भिक्खु कहै पुत्र ए थांरो । आवै तो न बरजां लिगारो ॥ जब आयो भारीमाल पास । और जागां लेईगयो तास ॥ सु० ॥ १० ॥ भारीमाल पिताने भाखै । कृष्णाजी री काण न राखै ॥ थांरे हाथ तणुं अन पाण । म्हांरै जाव जीव पचखाण ॥ सु० ॥ ११ ॥ भारीमाल अभिग्रह कीधो भारी । दिन दोय निसरया तिवारी ॥ रह्या सुरगिर जेम सधीरा हलुकर्मी अमूलक हीरा ॥ सु० ॥ १२ ॥ तव बाप थाको तिण वार। भिक्खु ने आण सूंप्यो उदार ॥ थांसूंइज राजी छै एह । म्हांसूं तो नहीं मूल सनेह ॥ सु० ॥ १३ ॥ इण ने आहार पाणी आण दीजै । रूड़ा जतन करी राखीजै ॥ म्हांरी पण गति कांइक कीजै । किण ही ठिकाणै मोने मेलीजै ॥ १४ ॥ थे नहीं लियो संजम भारो । जितरे करो ठिकाणो

म्हांरो ॥ भिक्खु सूंप्यो जैमलजीने आण । जैमलजी हरष्या अति जाण ॥ सु० ॥ १५ ॥ जैमलजी बोल्या तिणवारो । देखो भीखणजी री बुद्धि भारी ॥ सूंप्यो कृष्णोजी म्हाने सोय । तीन घरां वधावणा होय ॥ सु० ॥ १६ ॥ कृष्णो हर्ष्यो ठिकाणै हूँ आयो । म्हे पिण हर्ष्या चेलो एक पायो ॥ भिक्खु हर्ष्या टलियो गालो । तीनां घरां वधावणा न्हालो ॥ सु० ॥ १७ ॥ भारीमालरो सङ्कट टलियो । मन वाञ्छत कारज फलियो ॥ छट्ठी ढाल भारीमाल भारी । रह्या अडिग अचल गुणधारी ॥सु०॥१८॥

॥ दोहा ॥

हिव भिक्खु भारीमालजी, संत आदि दे तेर

मनसोबो मोटो कियो, चारित लेणो फेर १

शहर जोधाणा में सही, तेरह श्रावक ताहि

सामायक पोसा करी, बैठा बाजार रे माहिं २

फतेचन्द सिंघी प्रगट, दीवाण पद दीपंत

चोहटै देख्या चालता, प्रत्यक्ष तव पूछंत ३

सामायक पोसा सखर, कीधा चोहटै केम

थानक में क्यूं ना किया, उत्तर आपो एम ४

तज थानक मन थिर कियो, मुझ गुरु महिमावंत.

भिक्खु आप भारी घणा, परहर दियो कुपंथ ५

कहै दीवाण किम निसरया, वलि श्रावक बोलंत
बात घणी थिरता हुवै, जब सुणजो धर खंत ६

दीवान कहै थिरता अबहि, वर्णवो सगली बात
श्रावक तब आखै सकल, विवरा सुध विख्यात ७

आधाकर्मी आदि दे, दूर किया सब दोष
सिंघी सुण हर्ष्यो सही, पायो परम सन्तोष ८

साधु नो ओहिज शुद्ध, मारग मोटो माण
प्रशंसे सिंघी प्रगट, बारुं करै बखाण ९

॥ ढाल ७ मी ॥

(आप हणे नहीं प्राण ने० एदेशी)

फतेचन्द दीवान ते, वलि पूछा करै बारू हो। श्रावक थे केता सही, धार्या धर्म उदारु हो। शिव साधन सारु हो॥ भिक्खु जश सांभलो बारु हो ॥१॥ श्रावक कहै तेरे अछां, आतम तारण हारु हो। सिंघो बलि पूछै सही, संत किता सुखकारु हो। नीका शिव ने तारु हो॥ भि० ॥ २ ॥ श्रावक कहै तेरे सही, साधु सखर श्रद्धालु हो, भिक्खु समण शिरो-मणि, वर भाग विशालु हो ॥ भि० ॥ ३ ॥ सिंघी कहै आछो मिल्यो, वर जोग विचारु हो। श्रावक पिण तेरे सही, तेरे संत तंत सारु हो। भिक्खु बुद्धि ना भण्डारु हो ॥ भि० ॥ ४ ॥ सिंघी मुख प्रशंसा

सुणा, सेवक उभो सुधारु हो। ततखिण तिण जोड़्यो तुको, तेरा पंथ ए तारु हो। विस्तर्यो नाम वारु हो ॥ भि० ॥ ५ ॥

॥ सेवककृत दोहा ॥

साध साधरों गिलो करे, ते तो आप आपरो मंत
सुणजो रे शहर रा लोकां, ए तेरा पन्थी तंत १

॥ ढाल तेहिज ॥

लोक कहै तेरापन्थी, भिक्खु सवली भावै हो। हे प्रभु ओ पन्थ है, और दाय न आवै हो। मन भ्रम मिटावै हो ॥ सो ही तेरापन्थ पावै हो ॥ ६ ॥ पंच महाव्रत पालता, शुद्धि सुमति सुहावै हो। तीन गुप्त तीखी तरे, भल आतम भावै हो। चित्त सूं तेरा ही चाहवै हो ॥ ७ ॥

भिक्षुकृत छन्द ।

गुण बिन भेष कुं मूल न मानत,
जीव अजीवका किया निवेरा।
पुन्य पाप कुं भिन्न भिन्न जानत,
आस्रव कर्मा कुं लेत उरेरा ॥
आवता कर्मा ने संवर रोकत,
निर्जरा कर्मा कुं देत विखेरा।
बन्ध तो जीव कुं बांधिया राखत,
शाश्वता सुख तो मोक्ष में डेरा ॥

इसी घट प्रकाश किया,
भव जीव का मेट्या मिथ्यात अंधेरा ।
निर्मल ज्ञान उद्योत कियो,
ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥१॥
तीन सौ तेसट्ठ पाखण्ड जगतमें,
श्रीजिन धर्म सूं सर्व अनेरा ।
द्रव्य लिंगी केई साध कहावत,
त्यां पिण पकड्या त्यांराइज केड़ा ॥
ताहि कुं दूर तजै ते संत,
विधि सूं उपदेश दिया रुड़ेरा ।
जिन आगम जोय प्रमाण किया,
जब पाखण्ड पन्थ में पड्या विखेरा ॥
व्रत अव्रत दान दया वतावत,
सावद्य निर्वद्य करत निवेरा ।
श्रीजिन आगन्या मांहिं धर्म वतावत,
ए तो है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा ॥२॥

ढाल तेहिज ।

पन्थ अनेरा में रह्यो, तिण सूं भमण भमावै हो। प्रभु अव आयो तेरा पन्थ में तेरी आज्ञा सुहावै हो । तेह थी शिव पद आवै हो ॥ ८ ॥ तेरा वचन आगै करी, चारू धर्म चलावै हो । तेहिज छै तेरापन्थी, थिर कीरत थावै हो । भिक्खु समचित भावै हो ॥ ९ ॥ हिन्सा झूठ अदत हरे, मैथुन परिग्रह मिटावै हो । तीन करण तीन जोग सूं, त्याग करी तन तावै

हो। बारु व्रत बसावै हो॥ १०॥ इर्या भाषा एषणा रूड़ो रीत रखावै हो। आयाण भण्ड नखेवणा, पर ठण जैणा करावै हो। सखरी सुमति सुहावै हो॥ ११॥ अशुद्ध मन नहीं आदरै, वच सावज वस लावै हो। पाडुइ काया परिहरै, तीन गुप्त तंत लावै हो। थिरता पद चित्त थावै हो॥ १२॥ सखर ढाल आ सातमी, गुण भिक्खु ना गावै हो। नाम तेरा-पन्थ निर्मलो, अर्थ अनुपम आवै हो। सखरो सुजश सुणावै हो॥ १३॥

॥ दोहा ॥

भारी बुद्धि भिक्खु तणी, निर्मल मेल्या न्याय।
अरिहन्त आज्ञा थाप ने, श्रद्धा दी ओलखाय॥१॥
चरचा कर त्यारी हुवा, तेर जणा तिणवार।
नाम कहूं हिव तेहना, भिक्खु गण श्रृङ्गार॥२॥
थिरपालजी फतेचन्दजी, वड़ा तात सुत बेह।
भिक्खु आचारज भला, ज्ञान कला गुण गेह॥३॥
टोकरजी हरनाथजी, भारीमाल सुविनीत।
सरल भद्र सुखदायका, परम पूज्य सूं प्रीत॥४॥
वीरभाणजी सातमो, लिखमीचन्दजी लार।
बखतराम ने गुलाबजी, दूजो भारमल धार॥५॥
रूपचन्द ने पेमजी, ए तेरां रा नाम।
नवी दीक्षा लेवा तणा, तेरां रा परिणाम॥६॥
रुघनाथजी रा पञ्च छै, छः जयमलजी रा जोय।
दोय अन्य टोला तणा, ए तेरह ही होय॥७॥

चर्चा केयक बोलसी, करी माहोमा तास ।
केइक अल्पज चरचिया, ऊपर आयो चौमास ॥८॥
चौमासा सगलां भणी, भिक्खु दिया भलाय ।
आसाढ़ सुदि पुनम दिने, संजम लीज्यो ताय ॥९॥

॥ ढाल ८ मीं ॥

सोहल नृप कहै चन्दने ॥ पदेशी ॥

भिक्खु मुख सूं इम भणै, मुणिन्द मोरा। चौमासो उतरयां जाण हो । सरधा आचार मीढ्यां पछै मु० भेलो करस्यां आहार पाण हो । सखर गुण कर शोभतो ऋष भिक्खु गुण निलो मु० अधिक ओजागर आप हो ॥ १ ॥ जो श्रद्धा आचार मिली नहीं मु० तो भेलो न करां आहार हो । इम पहलां समभाविया मु० आया देश मेवाड़ हो ॥ २ ॥ सम्वत् अठारै सतरे समै, मु० पश्चाङ्ग लेखे पिछाण हो । आसाढ़ सुदी पुनम दिने, मु० केलवै दीक्षा कल्याण हो ॥ ३ ॥ अरिहन्त नी लेई आगन्या, मु० पचख्या पाप अठार हो । सिद्ध साखे करी स्वामजी, मु० लीधो संजम भार हो ॥ ४ ॥ हरनाथजी हाजर हुंता, मु० टोकरजी भिक्खु पास हो । परम भगता भारीमालजी, मु० पूरो ज्यांरो विश्वास हो ॥ ५ ॥ सतरोतरे केलवा मभै, मु० प्रथम चौमासो पेख हो। देवल अंधारी ओरी तिहां, मु० कष्ट सह्यो सुविशेष

हो ॥ ६ ॥ हिवै चौमासो उतरयो, मु० भेला हुवा सहु आण हो। बखतराम ने गुलाबजी, मु० काल-वादी हुवा जाण हो ॥ ७ ॥ नव तत्वमें तर्क ऊपजी, मु० इक जीव आठ अजीव हो। जे सिद्धा में वस्त पावै नहीं, मु० सरधै काल सदीव हो ॥ ८ ॥ थिर-पालजी फतेचन्दजी, मु० भिक्खु ऋष जग भाण हो। टोकरजी हरनाथजी, मु० भारीमाल बहु जाण हो ॥ ६ ॥ रूड़ै चित्त भेला रह्या, मु० वर षट संत वदीत हो। जाव जीव लग जाणज्यो, मु० परम माहोंमाहि प्रीत हो ॥ १० ॥ सात जणा भेला ना रह्या, मु० केयक धुर ही थी न्यार हो। कोयक पाछै न्यारो थयो, मु० थेट न पोंहता पार हो ॥ ११ ॥ वर्ष किता वीरभाणजी, मु० रह्या भिक्खु रे हजूर हो। अविनय अवगुण आकरो, मु० तिण सूं निषेध ने कियो दूर हो ॥ १२ ॥ पछै श्रद्धा पिण फिर गई, मु० वीरभाणरी विशेष हो। इन्द्रियां सावज श्रद्धने, मु० द्रव्य भाव जीव एक हो ॥ १३ ॥ अनेक बोल ऊंधा पड्या, मु० बिगड़ी अविनय थी बात हो। वर्ष बतीसे गण बारै कियो, मु० पछै मैणाने मूंड्यो साख्यात हो ॥ १४ ॥ षट रह्या तेरां मांहेला, मु० सात हुवा इम दूर हो। पिण पुण्य प्रबल भिक्खु

तणा, मु० दिन दिन चढ़ते नूर हो ॥ १५ ॥ शूरा सिंह तणी परे, मु० सुर-गिर जेम सधीर हो। अङ्गज ओजागर अति घणा, मु० विड़द निभावण वीर हो ॥ १६ ॥ टोला छोडी ने निसरचा, मु० त्यांरी पिण नहीं तमाय हो। ग्रन्थ हजारां जोड़ीने, मु० श्रद्धा दीधी ओलखाय हो ॥ १७ ॥ अतिशय धारी ओपता, मु० शासण शिरमणि मोड़ हो। आचार्य इण कालमें, मु० अवर न एहनी जोड़ हो ॥ १८ ॥ सावद्य निर्वद्य शोधने, मु० दान दया ओलखाय हो। व्रत अव्रत वर वारता, मु० भिन्न २ भेद बताय हो ॥ १९ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, मु० आछी अधिक अनूप हो। दृष्टान्त विविधज दीपता, मु० चित्त चरचा अति चूंप हो ॥ २० ॥ ढाल भली ए आठमी, मु० भिक्खु गुणारा हो। उमङ्ग करी चरण आदरचो, मु० समण शिरोमणि सार हो ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

स्वाम मारग साचो लियो, करवा जन्म कल्याण।
कुगुरु कुबुद्धि अति केलवी, जन भरमाया जाण ॥१॥
भागल भेष धारयां तणे, उपनो द्वेष अत्यन्त।
लोकां भणी लगाविया, विविध वचन विलपन्त ॥२॥
कोई सङ्ग यांरो कीज्यो मती, लाग जावेला लाल।
निन्हव छै ए निकल्या, कोई कहै जमाली गोसाल ॥३॥

यां देव गुरु ने उत्थापिया, दान दया ने उत्थाप ।
जीव बच.वे तेह में, ए कहै अठारै पाप ।।.।।
भगु भिड़काया पुत्रां भणी, साधाँ में चूक बताय ।
ज्यूं भिक्खु सूं भिडकाविया, ओहिज मिलियो न्याय ।।५।।
जिहां जिहां भिक्खु विचरता, आगूंच जोवे थाट ।
कह्यो कन्हें जायज्यो मती, थोड़ा में होय जाय थाट ।।६।।
केई तो प्रश्न पूछवा, केयक देखण काज ।
कुगुरां रा भरमाविया, ऊंधा बोलता नाणे लाज ।।७।।
उपसर्ग अनेक दे रह्या, वदै वचन विकराल ।
पिण क्षमा भिक्खु तणी, वारु अधिक विशाल ।।८।।
अधिक नीत आचारनी, सुमति अधिक उपयोग ।
अधिक गुप्त गुण आगला, जशधारी शुभ जोग ।।६।।

।। ढाल ६ मी ।।

(व्रज वासी लाला कान्ह तैं मेरी गागर कांय भांरी -एदेशी)

भिक्खु स्वाम भारी, जगत उद्धारक जशधारी ।। ए आंकड़ी ।। भारी रे खिम्यां गुण भिक्खु ना भाल २ । निर्लोभी मुनि निर्मल न्हाल ।। भि० ।। १ ।। कपट रहित शुद्ध सरल कहाय २ । निरहंकार रूड़ी नरमाय ।। भि० ।। २ ।। लाघव कर्म उपधि वर लाज २ । सत्य वचन स्वामी सुख साज ।। भि० ।। ३ ।। वारु रे भिक्खु नो संजम वाह वाह २ । लीधो मनुष्य जनम नो लाह ।। भि० ।। ४ ।। वारुरे भिक्खु

नो तप तह तोक २ । रूड़ै चित्त मुनि महा रमणीक ॥ भि० ॥ ५ ॥ बार रे दान मुनि ने दे आण २ । नित्य प्रति गोचरी करत प्रधान ॥ भि० ॥ ६ ॥ घोर ब्रह्म भिक्खु नो सार २ । सङ्ग रहित तिहुं जोग श्री कार ॥ भि० ॥ ७ ॥ इर्या धुन भिक्खु मुनिराज २ । जाणके चाल रह्यो गजराज ॥ भि० ॥ ८ ॥ भाषा सुमति भिक्खु नी भाल २ । निर्वद्य निर्मल सुधा सम न्हाल ॥ भि० ॥ ९ ॥ एषणा अधिक अनुपम सार २ । देखन हारो पामै चमत्कार ॥ भि० ॥ १०॥ वस्त्रादि लेतां जैणा विशेष २ । म्हेलतां अति उपयोग संपेख ॥ भि० ॥ ११ ॥ पंचमी सुमति भिक्खु नी पिछाण २ । सावचेत भिक्खु सुविहाण ॥ भि० ॥ १२ ॥ मन वच काया गुप्त गुणवन्त २ । सत दत शील दया निर्ग्रंथ ॥ भि० ॥ १३ ॥ अष्ट सम्पदा गुण अधिकार २ । आचार्य भिक्खु अणगार ॥भि० ॥ १४ ॥ आचारज ना गुण सुछतीस २ । भिक्खु में शोभै निश दिस ॥ भि० ॥ १५ ॥ पञ्च महाव्रत निर्मल पालंत २ । चयार कषाय भिक्खु टालंत ॥ भि० ॥ १६ ॥ वश करै इन्द्रिय पञ्च विचार २ । पञ्च सुमति त्रिण गुप्ति उदार ॥ भि० ॥ १७ ॥ आचार पञ्च भिक्खु ना अमोल २ । बाड़ सहित

ब्रह्म अधिक अतोल ॥ भि० ॥ १८ ॥ उत्पत्तिया वुद्धि भिक्खु नी उदार २। ततूक्षण जाब दिये तंतसार ॥ भि० ॥ १६ ॥ अन्यमति स्वमति सुणै वच सार २। चित्त माहें पामें चमत्कार ॥ भि० ॥ २० ॥ वारु रे भिक्खु थारा दृष्टन्त २। आश्चर्यकारी अधिक अत्यन्त ॥ भि० ॥ २१ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ वुद्धि ना जाब २। पूछता उत्तर देवै सिताब ॥ भि० ॥ २२ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ वीर्य आचार २। तें कियो उद्यम अधिक उदार ॥ भि० ॥ २३ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ नीन बैराग २। तूं प्रगट्यो बहु जन ने भाग ॥ भि० ॥ २४ ॥ बारु रे भिक्खु तूं गिरवो गम्भीर २। तूं गुण-दधि कुण पामे तीर ॥ भि० ॥ २५ ॥ वारु रे भिक्खु तुझ मुद्रा ऐन २। पेखत पामे चित्तमें चैन ॥ भि० ॥ २६ ॥ सांवली सूरत दीर्घ देह विशाल २। लाल नयण गज हस्ती नो चाल ॥ भि० ॥ २७ ॥ जीव घणा तिरणा इण काल २। आगूंच देख्या दीन दयाल ॥ भि० ॥ २८ ॥ त्यां जीवां रे तरण रे साज २। तूं प्रगट्यो मोटो मुनिराज ॥ २६ ॥ याद आवै भिक्खु दिन रैन २। तन मन विकसावे मुझ नैन ॥ भि० ॥ ३० ॥ मरणान्तक धार्यो शुद्ध माग २। भ्रम भञ्जन मुनि

तू महा भाग ॥ भि० ॥ ३१ ॥ अनघ अथग गुण भिक्खु मझार २ । मैं संक्षेप कह्यो सुविचार ॥ भि० ॥ ३२ ॥ नवमी ढाले भिक्खु ऋष न्हाल २ । महिमागर मोटा गुण माल ॥ भि० ॥ ३३ ॥

॥ दोहा ॥

भारी गुण भिक्खु तणा, कह्या कठा लग जाय ।
मरण धार शुद्ध मग लियो, कमिय न राखी काय ॥१॥
परम दुर्लभ श्रद्धा प्रगट, आखी श्रीजिन आप ।
तीजे उत्तराध्ययन तन्त, थिर भिक्खु चित्त थाप ॥२॥
बहुलकर्मी जीव बहु, उपजिया इण आर ।
दिलमें बैसणी दोहिली, श्रद्धा महा सुखकार ॥३॥
परम पूरी धूर-पगथियो, श्रीजिन श्रद्धो सार ।
शुद्ध सरध्यां समकित सही, भिक्खु कियो विचार ॥४॥
धर्म तणा द्वेषी घणा, लागू बहुला लोग ।
समझाया समझे नहीं, अधिका मूढ़ अयोग ॥५॥
अब भिक्खु मन जाणियो, कर तप करूं कल्याण ।
मग नहीं दिखे चालतो, अति घन लोग अजाण ॥६॥
घर छोड़ी मुझ गण मझे, सञ्जम कुण ले सोय ।
श्रावक ने वलि श्राविका, हुंता न दिसे कोय ॥७॥
एहवी करे आलोचना, एकन्तर अवधार ।
आतापन वलि आदरी, संता साथै सार ॥८॥
चौविहार उपवास चित्त, उपधि ग्रही सहु तंत ।
आतापन लेवन मझे, तप कर तन तावंत ॥९॥

॥ ढाल १० मी ॥

(पूज्यजी पधारो हो नगरी सेविये एदेशी)

थिरपालजी स्वामी फतेचन्दजी, संत दोनूं सुखकार हो महामुनि। तात सुत दोनूं तपसी भला, सरल भद्र सुविचार हो ॥ म० ॥ थे भला ने अवतरिया हो भिक्खु भरत क्षेत्र में ॥ १ ॥ टोला में छतां बड़ा स्वामी भिक्खु थकी, त्यांने बड़ा राख्या भिक्खु स्वाम हो। म०। यांने छोटा करने हूं बड़ो होऊं, इण में सूं परमार्थ ताम हो ॥ म० ॥ २ ॥ एकान्तर भिक्खु तप भला, लेवै आतापना लाभ हो । म० । व्रत अव्रत लोकां ने बतावता, जन हर्षे सुण जाव हो । म० ॥ ३ ॥ सरल भद्र केक लागा समझवा. चारु केक बुद्धिवान हो । म०। ओलखणा आई श्रद्धा आचारनी, पायो धर्म प्रधान हो । म० ॥ ४ ॥

सोरठिया ।

पंच वर्ष पहिछाण रे, अन पण पूरो ना मिल्यो।
बहुल पणे वच जाणरे, घी चोपड़तो जिहांई रह्यो ॥

ढाल तेहिज ।

थिरपालजी फतेचन्दजी इम कहै, स्वामी भिक्खु ने सोय हो। म०। क्यूं तन तोड़ो थे तपस्या करी,

समझता दिसै बहु लोय हो । म० ॥ ५ ॥ थे बुद्धि-वान थारी थिर बुद्धि भली, उत्पत्तिया अधिकाय हो । म० । समझावो बहु जीव सैणा भणो, निर्मल बतावी न्याय हो । म० ॥ ६ ॥ तपस्या करां म्हे आतम तारणी, अधिक पोंच नहीं और हो । म० । आप तरो थे तारो अवर ने, जाजो बुद्धि नो जोर हो । म० ॥ ७ ॥ संत बड़ारो बचन भिक्खु सुणी, धाख्यो धर चित्त धीर हो । म० । न्याय विशेष बतावता निर्मला, हरष्यो हिवड़ो हीर हो । म० ॥ ८ ॥ दान दया हद न्याय दीपावता, ओलखावता आचार हो । म० । जिन वच करी प्रभु माग जमावता, समझ्या बहु नर नार हो । म० ॥ ९ ॥ प्रगट मेवाड़ में पूज्य पधारिया, युक्ति आचार नी जोड़ हो । म०। अनुकम्पा दया दान रे ऊपरे, जोड़ां करी धर कोड़ हो । म० ॥ १० ॥ अति उपकार करी पूज्य आविया, मुरधर देश मझार हो । म० । सखर पणै बर जोडां सुणावता, इम करता उपगार हो । म० ॥ ११ ॥ व्रत अव्रत मांड बतावता, सखरी रीत सुचङ्ग हो । म० । श्री जिन आज्ञा में धर्म श्रद्धावता, सुण जन पावै उमङ्ग हो । म० ॥ १२ ॥ यशधारी भिक्खु नो जगत में, बाध्यो जश विख्यात हो । म० । बुद्धि प्रबल

गुण पुण्य पोरसो, स्वाम भिक्खु साख्यात हो । म० ॥ १३ ॥ भद्र प्रकृति बुद्धि पुण्य गुणे भला, परम पूज्य सूं प्रीत हो । म० ॥ १४ ॥ दशमी ढाल पूज्य दयाल नो, झाझी कीरति जाण हो । म० । देश प्रदेश मांहें जश दीपतो, विस्तरियो सुविहाण हो । म० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, सखर भला सुविनीत ।
समणी न हुई स्वामरे, वर्ष किता इम बीत ॥ १ ॥
किण ही भिक्खु ने कह्यो, तीर्थ थारे तीन ।
साध श्रावक ने श्राविका, समणी नहीं सुचीन ॥२॥
तिण कारण छे थांहरे, मोदक मोटो माण ।
समणी त्रिण खाण्डो सही, प्रत्यक्ष देख पिछाण ॥३॥
भिक्खु ऋष भाषे इसो, लाडू खाण्डो लेख ।
पण चौगुणी तणो, पवर, स्वाद अनूप संपेख ॥४॥
आछी बुद्धि उत्पात सूं, उत्तर दियो अनूप ।
दिन केते हुई दीपती, समणी तीन सद्रूप ॥५॥
तीन बायां त्यारी हुई, संजम लेवा साथ ।
भिक्खु ऋष भाषै भली, सुन्दर सीख साख्यात ॥६॥
सञ्जम लेवो साथ त्रिण, पण तीनां में पेख ।
वियोग एक तणुं हुवां, स्यूं करिवो सुविशेष ॥७॥
सलेषणा करणी सही, त्यां दोयां ने ताम ।
करार पक्को इम करी, सञ्जम दीधो स्वाम ॥८॥
कुशलांजी मटू कही, त्रीजी अजबू ताय ।
एक साथ अदरावियो, साध पणुं सुखदाय ॥९॥

॥ ढाल ११ मी ॥

(स्वामी ऋष रायचन्द राजा । एदेशी)

गजब गुण ज्ञान करी गाजैरे, गजब गुण ज्ञान करी गाजै । गुरु भिक्खु पै अजब छटा हद भारी-माल छाजै ॥ ए आंकड़ी ॥ सरल भद्र भल श्रमण शिरोमणि, ऋष रूड़ा राजै । चर्ण कर्ण धर समर्थां चित्त सूं, भ्रम कर्म भाजै ॥ ग० ॥ १ ॥ चान्त दांत चित्त शांति खरालज, उभय थकी लाजै । परम विनीत प्रीत हद पूरण, शिव रमणी साजै ॥ ग० ॥ २ ॥ जोड़ी गोयम वीर जिसी वर, शिष्य वारु बाजै, कार्य भलायां बेकर जोड़ी, करत मुक्ति काजे ॥ ग० ॥ ३ ॥ परम पीत पूज्य सुजल पयसी, पद भव दधि पाजै । कठिन बचन गुरु सीख कहै तो, समचित मुनि साजै ॥ ग० ॥ ४॥ उत्तराध्ययन छत्रीसे अध्य-यने, उभां छता अधिकारी । वार अनेक गुणियां विध सूं, धुर गुरु आज्ञा धारी । गजब गुण ज्ञान गरब गारीरे ॥ ग० ॥ गुरु भिक्खु पै अजब छटा हद भारीमाल भारी ॥ ५ ॥ भिक्खु भाषै भारी-माल ने, सांभल सुखकारी । काढै खूंचणो गृहस्थ कोई तो तेलो डंड त्यारी ॥ ग० ॥ ६ ॥ भारीमाल भाखै भिक्खु ने, साचो कहै सारी । तब तो तेलो

तन्त खारी, पिण द्वेष जगत् धारी ॥ ग० ॥ ७ ॥
झूठो नाम लिये कोई जन, लागू अति लारी । सूं
करिवो ते स्वामी प्रकाशो, आज्ञा अधिकारी ॥ ग० ॥
८ ॥ भिक्खु कहै जो साचो भाषै, तो तेलो त्यारी ।
अणहुंतो कोई आल दिये, तो संचित सम्भारी ॥
ग० ॥ ९ ॥ पूर्व संचित पाप उदय नो, तेलो तंत
सारी । स्वामी नो वच श्रद्ध कियो कर जोड़ी अंगी
कारी ॥ ग० ॥ १० ॥ भारीमाल सुवनीत इसा भड़,
सुगुणा सुखकारी । पुण्य प्रबल थी भिक्खु पाया,
ममत मान मारी ॥ ग० ॥ ११ ॥ घोर घटा घन
गरजारवसी, वाण सुधा उवारी । भिन्न २ भेद भली
पर भाषत, दाखत दमितारी ॥ ग० ॥ १२ ॥ हद
बचनामृत सुण जन हर्षत निरखत नर नारी । नयना
नन्दन कुमति निकन्दन, पद सूरत प्यारी ॥ ग० ॥
२३ ॥ हिये निर्मल हरनाथ मुनि, टोकरजी तंत
सारी । परम विनीत भारमलजी भल संत साता
कारी ॥ ग० ॥ १४ ॥ घर छोड़ी बहु थया मुनि,
धन्य ज्ञान गर्व गारी । समणी पिण बहु थई सयाणी
स्वाम शरण भारी ॥ ग० ॥ १५ ॥ दिन २ भिक्खु
नो मग दीपत, शासण शिणगारी । पंचम काल स्वाम
प्रगटिया, हूं तसु बलिहारी ॥ ग० ॥ १६ ॥ एकाद-

शमो ढाल अनोपम, वारु विस्तारो। कठे तलक भिक्खु गुण कहिये, पामत किम पारो ॥ ग० ॥१७॥

आगम रहिंस अनुपम लही, स्वाम भिक्खु सार।
शुद्ध श्रद्धा शोधी सही, वलि आचार विचार ॥ १ ॥
दान सुपात्रे दाखियो, संत मुनीने सार।
असंजती ने आपियां, एकंत पाप असार ॥ २ ॥
भगवती अष्टम शतक भल; षष्टम उद्देशे आप।
असंजती ने अहार दे, प्रभु कह्यो एकंत पाप। ३ ॥
दे गृहस्थ ने दानते, अनुमोदे अणगार।
निशीथ पनरमें निरखल्यो, डंड चौमासी धार ॥ ५ ॥
सावज दान प्रशंसियां, हिन्सारो वांछण हार।
सूयगड़ा अंग सूत्रमें, आख्यो मुनि आचार ॥ ५ ॥
श्रावक सामायक मझे, अधिकरण अति जाण।
भगवती सप्तम शतक भल, प्रथम उद्देशे पिछाण ॥ ६ ॥
व्यावच गृहिनी वर्णवी, अणाचारमें आम।
दशवेकालिक देखल्यो, तीजे अध्येने ताम ॥ ७ ॥
श्रावक नो खाणो सर्व, अव्रत में अधिकार।
वर्ण उववाई बीसमें, वलि सूगडांग विचार ॥ ८ ॥
इत्यादिक जिनवर अखी, शोधी भिक्खु स्वाम।
बले संक्षेपे वर्णऊं, सूत्र साख सुख ठाम ॥ ९ ॥

ढाल १९ मी।

(पूज्यने नमै शोभो गुण करै ए देशी)

पुत्र भगुनो परवरो, उत्तराध्ययन उमंग। सुज्ञानी रे। विप्र जिमायां तमतमा, चउदमे अज्झयण सुचंग सुज्ञानी रे॥ श्रद्धा दुर्लभ देवां

कही ॥ १ ॥ आद्रमुनि इम आखियो, सूगडांग छट्ठे सम्भाल। सु०। ब्राह्मण बे सहंस जिमावियां नरय तणा फल न्हाल। सु० ॥ श्रद्धा० ॥ २॥ आणन्द श्रावक लियो अभिग्रहो, सातमें अंग श्रीकार।सु। अन्य तीर्थी ने आपूं नहीं, असणादिक च्यारू आहार। सु० ॥३॥ प्रत्यक्ष गोसालाने आपिया, सकडाल सेज्भा संथार।सु०। उपासग सातमें प्राखियो नहीं धर्म तप लिगार। सु० ॥ ४॥ देतो लेतो वर्त्तमान देखने, मून कही तिणकाल। सु०। पंचम अध्येने परवरो, सूयगड़ा अंग संभाल। सु० ॥ ५॥ दुःखी मृगालोढा देखने, प्रभुने गोतम पूछन्त। सु०। 'किंदच्चा' इण दान किसो दियो, विपाक सूत्रमें बृतन्त।सु० ॥ ६ ॥ अव्रत भाव शस्त्र भाखियो, ठाणाअंग दशमें ठाण। सु०। कोई अव्रत सेवायां धर्म कहै, जिन मारग रा अजाण। सु० ॥ ७ ॥ नव प्रकारे पुण्य नीपजै, नवमा ठाणा में न्हाल। सु०। समचै नवूं ही कह्या सही, समचै मन वचन संभाल। सु० ॥ ८ ॥ करणी धर्म अधर्म नी कही, जुजूई दोनूं सुजाण। सु०। आचारंग चौथा अध्ययनमें, तीजी मिश्रनी करणी म ताण। सु० ॥ ६ ॥ आज्ञा माहें धर्म आखियो, बोलबो जुगतो न बाहार। सु०।

उत्कृष्टी चरचा आचारङ्गमें । छट्ठे अध्ययन रे दूजे विचार ॥ सु० ॥ १० ॥ जिन आज्ञा तणा अजाणने, समकित दुर्लभ सुजाण । सु० । आचरङ्ग चौथे अध्ययनमें, चौथे उदेशै पिछाण । सु० ॥ ११ ॥ उद्यम करै आज्ञा बिना, आज्ञामें आलस आय । सु० । सुगुरु कहै बे बोल होज्यो मती, आचरङ्ग पांचमांरे छट्ठा मांय । सु० ॥ १२ ॥ आज्ञा लोपी छान्दै चालै आप रै, ज्ञान रहित गुण हीण । सु० । आचारङ्ग दूजा अध्ययनमें, छट्ठे उदेशै सुचीन ॥ सु० ॥ १३ ॥ प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्था, वीर कह्या आज्ञाबार अवधार । सु० । आचारंग चौथा अध्ययनमें, पिण धर्म न कह्यो आज्ञा बार । सु० ॥ १४ ॥ साधां छोड्यो उन्मार्ग सर्वथा, आदर्‍यो मार्ग उदार । सु० । आवसग चौथा अध्ययनमें, साधां छोड्यो ते अधिक असार । सु० ॥१५॥ चार मंगल उत्तम शर्णा चिहुं, केवली परूप्यो धर्म मंगलीक । सु० । एहिज उत्तम शरणा पिण एहनो तंत आवसगमें तहतीक ।सु०। ॥ १६ ॥ इत्यादिक बोल अनेक छै, आगम में अधिकाय । सु० । स्वामी भिक्खु शोध शोधने, आछी रीत दिया ओलखाय ॥ सु० ॥ १७ ॥ पाखण्डियां प्रभु पन्थ उत्थापियो, उलट्यो जिन वचन अमोल

। सु० । भिक्खु आगम न्याय शोधो भला, प्रगट कोधी पाखण्डी री पोल । सु० ॥ १८ ॥ सावद्य दानमें धर्म श्रद्धायने, मतिहीन न्हाखे फन्द मांय ।सु०। स्वामी सूत्र न्याय सम्भालने, व्रत अव्रत दीधो बताय । सु० ॥ १६ ॥ धर्म आगन्या बारै धारने, भेषधारयां मांड्यो भ्रम जाल । सु० । थिर नीव आज्ञा भिक्खु थापने, बारु जिन बच थाप्या विशाल । सु० ॥ २० ॥ आगन्या-बारै धर्म पाखण्ड्यां आद-र्यां, वर भिक्खु पूछ्यो इम वाय ।सु० । आगन्या बारै धर्म किण परूपियो, इणरो मोने नाम बताय । सु० ॥ २१ ॥ विकल कहै म्हारी माता बांजणी, दियो तिणरो दृष्टान्त । सु० । वेश्याना पुत्र तणुं बलि, खरा न्याय मेल्या धर खन्त । सु० ॥ २२ ॥

भिक्खु स्वाम कृत ।

जिण धर्म री जिन आज्ञा दिये, जिन धर्म सि-खावै जिनराय । भविक जन हो । आज्ञा बारै धर्म केणे सिखावियो, इणरी आज्ञा देवै कुण ताय । भ० । श्री जिण धर्म जिन आज्ञा तिहां ॥ १ ॥ कोई कहै म्हांरी माता है बांजणी, हूं छूं तिणरो अंग जात । भ० । ज्यूं मूरख कहै जिन आज्ञा बिना, करणी कियां धर्म साख्यात । भ० ॥ २ ॥ मा विन बेटारो

जन्म हुवै नहीं, जनमें ते बांझ न होय। भ०। धर्म छ तो जिन आगन्या, आज्ञा नहीं तो धर्म नहीं कोय। भ० ॥ ३ ॥ वेश्या पुत्रने पूछा करै, थांरी कुण माय ने कुण तात। भ। तो ओ नाम बतावै किण तात रो ज्यूं आ आगन्या बारला धर्म नो बात। भ० ॥ ४ ॥ वेश्या रो अंग जात ऊपनो, उणरो कुण हुवै उदेरी ने बाप। भ०। ज्यूं आगन्या बारै धर्मने पुण्य तणी, जिन धर्मी तो कुण करै थाप। भ० ॥ ५ ॥ वेश्या रो अंग जात ऊपनो, उण लखणो हुवै उदेरीने बाप। भ०। ज्यूं आज्ञा बारै धर्मने पुण्य तणी भेषधारी कर रह्या थाप। भ० ॥ ६ ॥ इण आज्ञा बारला धर्म रो कुण धणी, कुण आज्ञा देवै जोड्यां हाथ। भ०। देव गुरु मून साफ न्यारा हुवा, इणरी उत्पत्ति रो कुण नाथ। भ० ॥ ७ ॥ दुष्ट जीव मंजारी ने चीतरा, छल सूं करै पर प्राणी नो घात। भ०। ज्यूं दुष्ट हिंसा धर्मी जीवड़ा, छल सूं घाले लोकांरे मिथ्यात। भ० ॥ ८ ॥

ढाल तेहिज।

इत्यादिक आज्ञा ऊपरै, स्वामी न्याय मेल्या सुखदाय। सु०। भाख्या भिन्न २ भेद भली परै, कसर न राखी काय। सु० ॥ २३ ॥ वारु ढाल कही

ए बारमी साखा दान आज्ञा ऊपर सार। सु०।
वलि श्रद्धा तणी बहु बारता, तिणमें सूत्र साख तंत सार। सु० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

पुण्यरी करणी परवड़ी, श्री जिन आगम सिन्ध।
भिक्खु तास भली परे, प्रगट करी प्रवन्ध ॥ १ ॥
निर्जरारी करणी निमल, जिन आज्ञामें जाण।
ते शुभ जोग निर्वद्य त्यां, पुण्य बन्ध पहिछाण ॥ २ ॥
विरुई आज्ञा बारली, सावद्य करणी सोय।
पाप बन्धे तेहथी प्रगट, जिण थी पुण्य म जोय ॥ ३ ॥
शुद्ध वहिरावे साधने, कहि निर्जरा एकन्त।
भगवती अष्टम शतक भल, छट्ठे उद्देशे सुचिन्त ॥ ४ ॥
शुभ लाम्बो आऊ सखर, तसु बन्ध तीन प्रकार।
हिन्सा झूठ सेवै नहीं, संत भणी दे सार ॥ ५ ॥
वहिरावे वन्दना करि, आहार मनोज्ञ उदार।
भगवती पंचम शतक भल, छट्ठे उद्देश विचार ॥६॥
वन्दणा ना फल वर्णव्या, नीच गोत क्षय नाश।
ऊंच गोत नो बन्ध इम. उत्तराध्ययन उजास ॥ ७ ॥
व्यावच कीधां बन्ध वलि, तीर्थंकर पुण्य ताम।
गुणतीसम ज्ञानी कह्यो, उत्तराध्ययने आम ॥ ८ ॥
इत्यादिक आज्ञा तिहां, पुण्य नो बन्ध पिछाण।
समय शोध भिक्खु सखर, आखी उज्झम आण ॥९॥

॥ ढाल १३ मी ॥

(पुण्य निपजे शुभ जोग सूं रे लाल एदशी)

दाखी व्यावच दश प्रकार नी रे लाल। ठाणा अंग दशमें ठाण हो। भविकजन। प्रगट दशों ही

साध पिछाणज्योरे लाल। जिण सूं पुण्य बन्धे निर्जरा जाण हो। भ०॥ स्वामी श्रद्धा देखाई श्रीजिन वयण सूं रे लाल॥ १॥ कालोदाई पूछ्यो कर जोड़ने रे लाल। भगवती में भाख्यो भगवन्त हो। भ०। पाप स्थानक अठारह परहर्‌यां रे लाल। कल्याणकारी कर्म बन्धन्त हो। भ०॥ स्वा०॥ २॥ सेवै पाप स्थानक अठारह सही रे लाल। बन्धे पाप कर्म विकराल हो। भ०। सातमें शतक सम्भाल ज्यो रे लाल। दाख्यो दशमें उद्देशै दयाल हो। भ०॥ ३॥ कर्कस वेदनी पिण इमहिज कही रे लाल। अठारह पाप सेव्यां असराल हो। भ०। न सेव्यां अकर्कस भर्त नो परै रे लाल। भगवती सातमा रे छट्ठे भाल हो। भ०॥ ४॥ आख्यो ज्ञाता रे आठमा अध्ययनमें रे लाल। वीस वोल तीर्थङ्कर पुण्य वन्धाय हो। भ०। वीसूं ही निर्वद्य वर्णव्यारे लाल। श्री जिन आज्ञासें शोभाय हो। भ०॥ ५॥ सूत्र विपाकमें सुबाहु तणो रे लाल। गोतम पूछा करी प्रभु पास हो। भ० 'किं दच्चा' इण दान किसो दियो रे लाल। वारु निर्वद्य करणो विमास हो। भ०॥६॥ अणुकम्पा सर्व जीवांरी आणियां रे लाल। प्राणी ने दुख नहीं उपजाय हो। भ०। सातावेदनी तिणरै

बन्धै सही रे लाल। शतक सातमें भगवती सुहाय हो। भ० ॥ ७ ॥ करणी आठ कर्म बन्धनो कही रे लाल। भगवती आठमारे नवमे भेद हो। भ०। तिणमें निर्वद्य करणी पुण्य तणी रे लाल। सावद्य पापरी करणी संवेद हो। भ० ॥ ८ ॥ जयणा सूं साधु अहार करै जिहांरे लाल। पाप न बन्धै पिछाण हो। भ० ॥ ९ ॥ साधुरी गोचरी असावज सही रे लाल। दशवैकालिक देख हो। भ०। अध्ययन पंचमें आखियो रे लाल। बाणुमी गाथा विशेष हो। भ० ॥ १० ॥ सात कर्म ढीला पड़े सहीरे लाल। शुद्ध आहार करतां सार हो। भ०। पहिले शतक भगवती नवमें पेखल्यो रे लाल। एहवा श्रीजिन बचन आराध हो। भ० ॥ ११ ॥ इत्यादिक बहु बोल अनेक छै रे लाल। श्रीजिन आज्ञामें सोय हो। भ०। तिणसूं निर्जरा हुवै पुण्य बन्धै तिहांरे लाल। स्वामी ओलखाया सूत्र जोय हो। भ० ॥ १२ ॥ सावज करणी आज्ञा बारै सही रे लाल। प्रगट थाप्यो पाखण्डयां पुण्य हो। भ०। भिक्खु आगम न्याय शोधो भला रे लाल। ज्यांरी श्रद्धा देखाई जबून हो। भ० ॥ १३ ॥ तंत ढाल कही ए तेरमी रे लाल। निर्विद्य करणी पुण्य री निर्दोष हो। भ०।

भिक्खु ओलखाई भांत भांत सूं रे लाल। मिलै तिण सूं अविचल मोक्ष हो। भ० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

सूत्र में समचै कही, अणुकम्पा अधिकार।
भिक्खु तास भली परै, शोध लागा तंतसार ॥ १ ॥
जीव असंजती जेहनो, जीवण वान्छै जाण।
सावज अनुकम्पा सही, मोहराग मंहि माण ॥ २ ॥
मरणो वंछ्यां द्वेष मंहि, जीवण राग जिवार।
पाप अठारामें प्रगट, भ्रमण करावे सार ॥ ३ ॥
मोहराग अनुकम्प में, आज्ञा न दिये आप।
इण कारण सावद्य छै, प्रगट राग है पाप ॥ ४ ॥
तरणो वांछै ते सही, श्रीजिन आज्ञा सार।
पाप टलावे पार को, ते निर्वद्य इकतार ॥ ५ ॥
निर्वद्य करुणा निर्मली, सावज अधिक असार।
विविध सूत्र निर्णय सखर, स्वाम दियो तंतसार ॥ ६ ॥
प्राश्चित आवे प्रगट, अरिहन्त आज्ञा बार।
अनुकम्पा सावज छै, बारु हिये विचार ॥ ७ ॥
गाय भेंस आक थोर नो, ए चारुं ही दूध।
ज्यूं अणुकम्पा जाणज्यो, मनमें राखी सुध ॥ ८ ॥
आक दूध पीधां थकां, जुदा हुवै जीव काय।
ज्यूं सावज अणुकम्पा कियां, पाप कर्म बंधाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल १४ वीं ॥

(दया धर्म श्री जिनजी री वाणी एदेशी)

अनुकम्पा त्रस जीवनी आणी, बान्धै छोडे साधु तिण वारोजी। छोड़ताने अनुमोद्यां चौमासी, निशीथ

वारमें निरधारोजी ॥ स्वाम भिक्खु निर्णय कियो सूत्र सूं ॥ १ ॥ बाघ सिंह हिंसक जीव विलोकी, मार न कहै मतिवन्तोजी । मति मार नहीं कहै राग आणी मुनि, सूगडांग इकवीसमें संतोजी ॥ २ ॥ वार असंजम जीतब वरज्यो, दशमें सूगडांग दयालोजी । दशमे ठाणै वलि आचारंग में, वारु बचन अनेक विशालो जी ॥३॥ उत्तराध्ययन बावीस में अध्येने, नेम पाछा फिरया जीव न्हालोजी । इतारा जी हणै सुक्ष अर्थे, बारु फल पर भवन विशालोजी ॥४॥ मिथिला नगरी बलती जाण नमि मुनि, स्हामो न जोयो सोयोजी । उत्तराध्ययन रे नवमें अध्ययने, करणा सावज नाणी कोयोजी ॥ ५ ॥ मनुष तिर्यंच देव मांहो मांहीं, विग्रह देखी विशेषोजी । जीत हार बांछणी बरजी जिन, दशवैकालिक सात में देखोजी ॥ ६ ॥ बायरो वर्षा शीत तावड़ा कलह उपद्रव रहित सुकालोजी । बोल सानूं हो बांछणा बरज्या, दशवैकालिक सात में दयालोजी ॥ ७ ॥ दूजे आचारंग अध्ययन दूसरे प्रथम उद्देशे सुपन्थोजी । मांहोमा गृहस्थ लड़ता देखी ने मुनि, मार मत मार न कहै महन्तोजी ॥ ८ ॥ तीन आत्मरक्षक तीजा ठाणा रे तीजे, देणो उपदेश हिन्सक देखीजी । न समझे

तो सून राखणो निरमल, वलि एकन्त जाणो विशे-षीजी ॥ ६ उत्तराध्ययन रे इकवीस में अध्ययने, तस्कर ने मारतो देखो तायोजी । समुद्रपाल लियो वर संजम, मोह कुणा नाणो मन मांयोजी ॥ १० ॥ समच्चे अनुकम्पा कही ते साम्भलो, लखण आज्ञा थको मींढ लीज्योजी । प्रभु आज्ञा देवै तेतो निर्वद्य प्रत्यक्ष, आज्ञा नहीं ते सावज ओलखीज्योजी ॥११॥ अणुकम्पा सुलसांरी आणी, सुर हरण गवेषो सोयोजो । पुत्र देवकीरा म्हेल्या प्रत्यक्ष. अन्तगढ़ में अवलो-योजी ॥ १२ ॥ ईंट उपाड़ मूको कृष्ण आंवत, अणु-कम्पा पुरुष नी आणीजो । अन्तगढ़दशा में पाठ अनोपम, जिन आगन्या नहीं जाणीजो ॥ १३ ॥ उत्तराध्ययन बारमें अध्ययने, अणुकम्पा हरकेशी नी आणीजी । छात्रांने ऊंधा पाड्या यक्ष छलकर, प्रत्यक्ष सावद्य पिछाणीजी ॥१४॥ रेणा देवीरी करुणा करी जिन ऋष, स्हामो जोयो सात्नातोजी । नवमें अध्ययने ज्ञाता मांहे न्हालो, अनर्थ दुःख उपा-तोजी ॥ १५ ॥ 'कोई कहै कलुणरस छै करुणा अणुकम्पा नहीं आखीजी । अनुकम्पा करुणा दया अनुक्रोस ए कलुण रसना नाम अमर साखोजी ॥ १६ ॥ करो नेम जीवांरी अनुकम्पा, अनुक्रोस पाठ

आछोजी। तिण अनुक्रोस नो अर्थ कुरणा टीका में, सावज निर्वद्य कलुणरस साचोजी ॥ १७ ॥ सम्यक्त्व जिन मेघ गज भव साम्प्रत, अणुकम्पा सुखकारी आणोजी। प्रत संसार मनुष्य आयु प्रगट, प्रथम अध्ययन ज्ञाता में पिछाणोजी ॥ १८ ॥ निज गर्भरी अणुकम्पा निमते, रूड़ो भोगव्यो धारणी राणीजी। प्रथम अध्ययन ज्ञाता मांहो प्रत्यक्ष, जिहां जिन आगन्या किम जाणीजी ॥ १९ ॥ अभयकुमार नी कर अणुकम्पा, दोहलो पूरयो धारणी रो देवोजी। ए पिण ज्ञाता रे प्रथम अध्ययने, साम्प्रत सावज जाणो स्वयमेवोजी ॥ २० ॥ शीतल तेजू लेश्या म्हेली स्वामी, अनुकम्पा गोशाला री आणीजी। सूत्र भगवती पनरमें शतके, वृति माहें सराग वखाणीजी ॥ २१ ॥ पन्नवणा सूत्र रे छत्रीसमें पद, लब्धी तेजू फोड्यां क्रिया लागैजी। तिणरा दोय भेद उष्ण शीतल तेजू छै, शीतल तेजू फोड़ी वीर सागैजी ॥ २२ ॥ कहो साधुरी हर्ष छेद्यां वैद्य ने क्रिया, नहीं साधुरे क्रिया निहालोजी। पिण धर्म अन्तराय साधु रे पाड़ी वैद्य, भगवती सोलमारे तीजे भालोजी ॥ २३ ॥ इत्यादिक बोल अनेक आख्या छै, समचै सूत्र मांही सोयोजी। जिन आज्ञा नहीं

ते सावज जानो, आज्ञा ते निर्वद्य अवलो-योजी ॥ २४ ॥ नेम समुद्रपाल ने नमि ऋषि आतम ऋष अवधारोजी । निर्वद्य आगन्यां मैं छै निर्मल, सावज भ्रमण संसारोजी ॥ २५ ॥ स्वाम भिक्खु ए सूत्र शोधी, अनुकम्पा ओलखाईजी । विविध हेतु न्याय जुगति बताया, कुमिथ न राखी कांईजी ॥२६॥ भेषधारी भ्रम पाड़े भोलाने, दया मोहरागने दिखाईजी । सिद्धन्तरा जोर सूं भिक्खु स्वामी, असल श्रद्धा ओलखाईजी ॥ २७ ॥ चवदमी ढाल सुन जन चातुर, अनुकम्पा निर्वद्य आदरजोजी । रूड़ी आसता भिक्खुनी राखी, पाखण्ड मत परहरोजी ॥ २८ ॥ दान दया सूत्र साख देखाई, खण्ड प्रथम धर खंतोजी । सूत्र नेश्राय ए ज्ञान स्वामनो, मति ज्ञान नो भेद सुतंतोजी ॥ २९ ॥

कलश ।

जय जश कारण दुख विडारण, सुमग धारण स्वामजी । शुद्ध सुमति सारण कुमति वारण, जगत तारण कामजी । प्राक्रम मृगपति सखर धर चित्त, ज्ञान नेत्रे ऋषि गुणी । जिन मग्ग केतु हद सुहेतु, नमो भिक्खु महा मुनि ॥

द्वितीय खण्ड ।

सोरठा ।

प्रथम खण्ड पहिछाण रे, रचियो रूड़ी रीत सूं ।
खण्ड दूजे गुण खाण रे, दृष्टन्त कहूं दयाल ना ॥

॥ दोहा ॥

आख्यो दान दया असल, जिम भाख्यो जिनराज ।
बुद्धि उत्पत्तिया महावली, साध्यो शिव पन्थ साज ॥ १ ॥
मति ज्ञान महिमा निलो, दोय भेद तसु देख ।
सूत्र नेश्राय सिद्धन्त छै, सूत्र विना सम्पेख ॥ २ ॥
सूत्र कहीजे वात सहु, निर्मल सूत्र नेश्राय ।
बुद्धि सूं मिलती वात वर, सहु असूत्र नेश्राय ॥ ३ ॥
सूत्र साख श्रद्धा सखर, स्वाम दिखाई सार ।
सूत्र तणो नेश्राय शुद्ध, आगम अर्थ उदार ॥ ४ ॥
चार बुद्धि सूं चिन्तवी, दिये विविध दृष्टान्त ।
असूत्र नेश्राय ओलखो, वर नन्दी विरतंत ॥ ५ ॥
हिवे असूत्र नेश्राय हद, दिया स्वाम दृष्टान्त ।
मति ज्ञान महा निर्मलो, स्वाम तणो शोभंत ॥ ६ ॥
केवल उत्तरतो कह्यो, मति ज्ञान महाराज ।
पज्जवा लेख पिछाणज्यो, सूत्र भगवती साज ॥ ७ ॥
सखरो भिक्खु स्वाम नो, महा मोटो मति ज्ञान ।
साचा न्यायज शोधिया, दृष्टान्त देई प्रधान ॥ ८ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि सूं अख्या, मिलता न्याय मुणन्द ।
केशी नी परे शुद्ध कथा, दृष्टान्त अति दीपंत ॥ ९ ॥

॥ ढाल १५ मी ॥

(अभड़ भड़ रावणा इन्दा सूं अड़ियो रे एदेशी)

पाखण्डियां सावज दान परूपियो, त्याने भिक्खु पूछ्यो तिणवार। सावज में पुन्य अछियो, एक सांभलज्यो हेतु उदार ॥ स्वामी बुद्धि सागरु, बारु मेल्या न्याय विशाल। अधिक बुद्धि ना आगरु भल उतपत्तिया बुद्धि भाल ॥ १ ॥ पांच सीरी वायो खेत परवरोजी, चणा तणो चित्त धार। नाज पांचसौ मण चणा निपना, तव मतो कियो तिणवार ॥ २ ॥ घर मांहें तो धन आपांरे घणुंजी, करां दान धर्म कहि वार। एक जणै सौ मण चणा आपिया, बहु भिख्यारयां ने बोलाय ॥ ३ ॥ दिया सौ मण चणारा दूसरे, सेकाय भूंगरा सोय। त्यांरी गुगरी तीजे कराय‍ने, जिमाया भिखारयां ने जोय ॥ ४ ॥ चौथे रोट्यां सौ मण चणा तणी, कडी पाखती कराय। भिखारी रांकादिक भणी, जुगति सूं दिया जिमाय ॥ ५ ॥ सौमण चणा पांचमें वोसराविया, तिणरे हाथ लगावा ना त्याग। कहो धर्म पुन्य घणो केहने, सखरो उत्तर देवो सताव ॥ ६ ॥ भगवन्तरी आज्ञा किण भणी, कुण आज्ञा बार कहात। एम सुणने उत्तर आयो नहीं। ऐसी भिक्खुनी बुद्धि उत्पात ॥७॥

दान ऊपर दृष्टान्त दूसरो, स्वाम भिक्खु दियो सुख दाय। हलुकर्मी सांभल हर्षे घणा, भारीकर्मी द्वेष भराय ॥ ८ ॥ भिख्या मांगतो डोकरो, भम रह्यो अभ्यागत दुखियो एक। धर्मात्मा भूखाने धान द्यो, बिरुआ बोलै बचन विशेष ॥ ९ ॥ एक जणे अणुकम्पा आण ने, सेर चणा दिया सोय। गुणग्राम भिखारी करै घणा, आशीश देवै अवलोय ॥ १० ॥ आगै जाई एम बोलियो, सेर चणा दीधा सेठ एक। पिण दान्त नहीं कोई पीस दो, बारु छै कोई धर्मी विशेष ॥ ११ ॥ एक बाई अणुकम्पा आण ने पीस दियो कहते पाण। बलि आगै जाई इम बोलियो, छै कोई धर्मी पिछाण ॥ १२ ॥ एक सेठ सेर चणा आपिया, पीस दिया दूजी पुण्यवान। आटो फाकणी आवै नहीं, जिण सूं रोटी कर दो धर्म जान ॥ १३ ॥ अनुकम्पा तीजी आणने, सेर चूणारा फांफड़ा सोय। सिन्धो घाल कर दीधा सही जीमी तृप्त होगयो जोय ॥ १४ ॥ तृषा लागी तिण अवसरे, आगै जाई बोल्यो बान। सेर चणा दिया एक सेठ, पीस दिया दूजी पुन्यवान ॥ १५ ॥ झट रोट्यां कर तीजी जीमावियो अति लागी है तृषा अथाय। है धर्मात्मा एहवो, प्राण जाताने पाणी

पाय ॥ १६ ॥ चोथी बाई अणुकम्पा चित्त धरी, पायो त्रस सहित काचा पाणी । कहो धर्म घणो हुवो केहने, पाछै कह्या च्यारूं ही पिछाणी ॥ १७ ॥ आज्ञा बारला दान ऊपरै, दियो स्वामी भिक्खु दृष्टन्त । प्रत्यक्ष कारण पापनो, किण विध पुन्य कहंत ॥१८॥ हलुकर्मी सांभल हर्षे हिये, भारी कर्मी भिड़कन्त । सूत्र न्याय साचा सही, धारे उत्तम पुरुष धर खंत ॥ १९ ॥ पवरढाल कही पनरमी, स्वामी थापी है श्रद्धा सार । उत्पत्तिया बुद्धि ओपती, वलि आगलि बहु विस्तार ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

जाव सुणी बुद्धिवान जन, चित्त पामे चमत्कार ।
सांभल केइक समझिया, पाम्या हर्ष अपार ॥ १ ॥
केयक वलि इण पर कहै, थे दान दया दी उथाप ।
श्रद्धा किहां ही ना सुणी, प्रत्यक्ष श्रद्धो पाप ॥ २ ॥
भिक्खु वलता इम भणै, पज्जुसणा में पेख ।
आखा आटो आदि दे, आपै नहीं अशेष ॥ ३ ॥
पर्व दिवस पज्जुसणा, धर्म्म तणा दिन धार ।
अधिक धर्म्म तिहां आदरे, पाप तणो परिहार ॥ ४ ॥
दान अनेरा ने दियां, जाणै धर्म्म जिवार ।
कीधो बंध किण कारणे, चित्त सूं करो विचार ॥ ५ ॥
ए बात है आगली, परम्परा पहिछाण ।
कहो ए थाप करी किणे, चारु करो विनाण ॥ ६ ॥

हूं तो हिवड़ाइज हुवो, जद तो नहीं थो जाण ।
जाव दियो अति जुगत सूं, सुण हरख्या सुविहाण ॥ ७ ॥
सूत्र न्याय शुद्ध परम्परा, सखर मिलावे स्वाम ।
जग पूर्व धारी जिसा, ओजागर अभिराम ॥ ८ ॥
अपर दान रे ऊपरै, दीधा वलि दृष्टान्ति ।
विविध न्याय वर वारता, सांभलजो चित्त शांति ॥ ९ ॥

ढाल १६ मी ।

(घोड़ी री देशी)

शहर खेरवै पधाख्या स्वामी, ओटो शाल प्रश्न पूछ्यो एम । श्रावक कसाई गिणो थे सरीखा, कहै खोटी श्रद्धा इसड़ी धारां म्हें केम ॥ स्वाम भिक्खु रा दृष्टांत सुणजो ॥ १ ॥ स्वाम कहै किम गिणां सरीखा, जब ते कहै श्रावक ने दियां पाप जाणो । कसाई ने दिया पिण पाप कहो छो, प्रत्यक्ष दोनूं सरीखा इण न्याय पिछाणो ॥ २ ॥ स्वाम कहै इम नहीं सरीखा, श्रावक कसाई बे जुआ संपेख । ओटो कहै दोनूं थया सरीखा, दोयां ने दियां पाप कहो ते लेख ॥ ३ ॥ पूज कहै थारी माता ने पायो, सचित पाणी री लोटी भर सोय । कहो तिण में थारो निपनो कांई, ओटो कहै पाप छै अवलोय ॥४॥ पुनरपि स्वाम ओटा ने पूछ्यो, पाणी लोटी भर बेश्या ने पायो । धर्म्म थयो के पाप हुवो थाने, ओटो

कहै तिण में पिण पाप थायो ॥ ५ ॥ पूज कहै दोयां में पाप थायो, थारी माता ने वेश्या सरीखी थारे न्यायो । जो माता वेश्या ने न गिणो सरीखी, तो श्रावक कसाई सरीखा न थायो ॥ ६ ॥ अति कष्ट थयो लोक कहै ओटेजी. माता ने वेश्या सरीखी मानी । चित्त मांहें चमत्कार लहे चातुर, अणहुंता अवगुण धारै अज्ञानी ॥ ७ ॥ संवत् अठारै पैंतालीसे स्वामी, प्रगट चौमासो कियो पींपार । जनक हस्तु कस्तु नो जगु गांधी, वांरु चरचा सूं श्रद्धा चित्त धार ॥ ८ ॥ भेषधारी तिण ने लागा भड़कावा, खोटी श्रद्धा भीखणजी री खार । एक गृहस्थ श्रावक ने वासती आपी, पाप कहै तिण माहीं अपार ॥ ९ ॥ वलि किण गृहस्थ री वासती चोर ले गयो, तिण रो पिण गृहस्थ ने पाप बतावे । श्रावक ने चोर गिणै इम सरीखो, जब जगु स्वामी जी ने पूछ्यो प्रस्तावै ॥ १० ॥ पूज कहै उणनेज पूछणो, चद्दर थारी एक ले गयो चोर । एक चद्दर थे श्रावक ने आपी, जद थाने डंड किण रो आवै जोर ॥ ११ ॥ तस्कर चद्दर लेई गयो तिण रो, प्राश्चित मूल न सरधै संपेख । श्रावक ने दिधां रो प्राश्चित सरधै, जद तो दैणोज खोटो ठहर्यो त्यांरे

लेख ॥ १२ ॥ जाव सुणी समज्यो जगु गांधी, ऐसी स्वामी जी री बुद्धि उत्पात। सिद्धंत री सरधा ने थापण साची, न्याय विवध मेलव्या स्वामी नाथ ॥ १३ ॥ सोलमी ढाल में भिक्खु स्वामी री, ओलखाई बुद्धि श्रद्धा उदार। श्रीजिन आगन्या धारी सिर पर, सरधा दिखाय दीधी तंत सार ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धे सावज दान में, पुन्य मिश्र एकंत।
पूछ्यां कहै मुझ मून है, केई इसड़ो कपट करंत ॥ १ ॥
पूछ्यां न कहै पाधरो, पुन्य मिश्र पख एक।
आंख्यो हेतु ओपतो, वारु स्वाम विशेष ॥ २ ॥
किण ही पुरुष पूछा करी, नार भणी पिउ नाम।
थारे धणी रो नाम कुण, स्यूं पेमो है ताम ॥ ३ ॥
कहै पेमो क्यांने हुवे, वलि पूछ्यो तिणवार।
नाथू नाम है तेहनो, कंत तणो अवधार ॥ ४ ॥
कहै नाथू क्यांने हुवै, वलि पूछ्यो सुविशेष।
पाथू है नाम तेहनो, तुझ पोतम संपेख ॥ ५ ॥
कहै पाथू क्यांने हुवै, इम बहु नाम विचार।
सागे नाम आयां थकां, रहै अबोली नार ॥ ६ ॥
सैणो तब जाणै सही, इण रा पिउ रो नाम।
एहिज छै तिण कारणै, मून रही इण ठाम ॥ ७ ॥
जो सावज दान में पाप है, कहै क्यांने हुवे पाप।
मिश्र पूछ्यां पिण इम कहै, क्यांने है मिश्र थाप ॥ ८ ॥
पुन्य पूछ्यां सूं मून रहै, न करै तास निखेह।
सैणो जब जाणै सही, इणरी श्रद्धा एह ॥ ९ ॥

॥ ढाल १७ मी ॥

(प्रभवो मन में चिन्तवै ए देशी)

पूज्य भीखणजी पधारिया, वर इक गाम विमास। साध अमरसिंघजी तणा, पूज आया त्यां पास ॥ १ ॥ प्रश्न भिक्खु स्वाम पूछियो, अणुकम्पा मन आण। मरता ने मूला दिया, जिणमें सूं हुवो जाण ॥ २ ॥ तामस आणी ते कहै, प्रश्न इसो पूछन्त। जे मिथ्याती जाणिये, भिक्खु वलि भापंत ॥ ३ ॥ पूछण वाले पूछियो, समकती होवे सोय। अथवा मिथ्याती मानवी, जे पिण पूछै जोय ॥ ४ ॥ उत्तर आवै एहनो, जो मिथ्याती होय जाय। उत्तर तो आपो मति, नहीं तो आखो न्याय ॥ ५ ॥ तव ते बोल्यो लड़क ने, मूला मांहें पाप। पूज्य कहे पुन्य पाप बिहुं, कै केवल पाप किलाप ॥ ६ ॥ देण वाला ने दाखिये, पुन्य पाप पिछाण। जाव न देवै जाण ने, वलि भिक्खु कहे वाण ॥ ७ ॥ केई मूला खवायां मिश्र कहै, इम पूछयां कहै आम। मिश्र कहै ते पापी सही, तव स्वामी कहै ताम ॥ ८ ॥ केई मूला खवायां पाप कहै, वलि ते बोल्यो वाण। पाप कहै ते पापिया, झूठा एकन्त जाण ॥ ९ ॥ फिर स्वामी पूछा करी, मूला

खवायां माण । कई एक पुन्य कहै सही, तब ते बोल्यो जांण ॥ १० ॥ पुण्य कहै सोही पापिया, सुण ने स्वाम विचार । श्रद्धा पुन्य रो दीसै सही, बात तीनूं ई बार ॥ ११ ॥ बलि मन भिक्खु बिचारियो, कहिण वाला ने कह्यो पापी । पिण श्रद्धण वाला पुरुष नी. थिर पूछा करूं थापी ॥ १२ ॥ पूज इम चिन्तवी पूछियो, अनुकम्पा आण । मूला देवै ते मनुष्य ने, पुन्य केई श्रद्धे पिछाण ॥ १३ ॥ स्वाम तणो पूछा सांभली, बलि बोल्यो ते बाण । मन आसो ज्यूं सरधसी, जब स्वाम लियो जाण ॥ १४ ॥ इम चिन्तवी स्वामी उचरे, मूला खवायां माण । प्रगट पुन्य प्ररूपो नहीं, पिण श्रद्धा पुन्यरी पिछाण ॥ १५ ॥ इत्यादिक जाब अनेक सूं, कष्ट कियो अधिकाय । आया ठिकाणे आपणे, स्वामी महा सुखदाय ॥१६॥ मोटी मति महाराजनी, बारु बुद्धि सुविचार । जाब लियो अति जुगत सूं, ऊपर सूं अवधार ॥१७॥ सखर ढाल कही सतरमी, आगे बहु अधिकार । स्वाम दृष्टान्त सुणी करी, चतुर लहै चमत्कार ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

भीखणजी स्वामी भणी, किणही पूछा कीध ।
दान असंजती ने दियां, पाप कहो प्रसिद्ध ॥ १ ॥

कड़वा फल किण कारणे, निर्मल बतावो न्याय ।
कहै भिक्खु किण सेठ रे, नवली कड़ी बंधाय ॥ २ ॥
ते नवली रुपया तणी, तस्कर देखी ताम ।
सेठ तणै लारे हुवो. रुपया लेवण काम ॥ ३ ॥
पूठै तस्कर पेखने, साहुकार न्हासंत ।
लारै तस्कर दौड़तो, इतलै पग अखड़ंत ॥ ४ ॥
पग आखुड़ हेठो पड़्यो, चित्त खिलखाणो चोर ।
इतले किण ही मानवी, अमल खवायो जोर ॥ ५ ॥
अमल खवाय पायो उदक. सेंठो कियो शूर ।
दुश्मन ते तिण सेठ नो, साझ दियो भरपूर ॥ ६ ॥
अमल खवायो ते पुरुष, वैरी सेठ नो वाध ।
साझ दियो वैरी भणी, अरि थी हुवै उपाधि ॥ ७ ॥
ज्यूं छकाय ना हिंसक भणी, जे नर पोषे जाण ।
ते वैरी षट काय नो, प्रत्यक्ष हिये पिछाण ॥ ८ ॥
हणणहार षट काय नो, तसु पोषे कियो शूर ।
तिण कारण जीवां तणो, वैरी ते भरपूर ॥ ९ ॥

॥ ढाल १८ मी ॥

(सीता दिये रे ओलंभड़ो० ए देशी)

सावज दान अन्धायवा दियो भिक्खु दृष्टान्त । खेत बायो एक करसणी, पाको खेत अत्यन्त । तंत दृष्टान्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ इतले धणी रे बालो हुवो,, दूखणी आयो देख । किणहिक औषध दे करी, सांतरो कियो विशेष ॥ तं० ॥ २ ॥ ताजो हुवो तिण अवसरै, खेत काट्यो धर खन्त । साझ

देण वाला ने सही, लागै पाप एकन्त ॥ ३ ॥ कहै पाप हुवै खेत काटियां, तो काटण वाला ने सोय। साझ दई ने साझो कियो, तिण ने पिण पाप जोय ॥ ४ ॥ तिमहिज और पापी तणे साता कीधी विशेष। तिण माहें धर्म किहां थकी, दिल माहें देख ॥ ५ ॥ कैकेइक भेषधारी कहै, धन दीधा धर्म। वले कहै ममता उतरी, भोलारे पाड़े भ्रम ॥६॥ पूज्य भिक्खु तिण ऊपरै, निरमल मेला न्याय। भ्रम लोकां रो भांजवां, स्वामी महा सुखदाय ॥ ७ ॥ किणही मनुष्य रे खेती हुंतो, बीस विघा विचार। दश विघा ब्राह्मण ने दिया, धर्म अर्थे धार ॥ ८ ॥ बीस हलांरी खेती विषै, दश हल खेती दीध। ए पिण ममता उतरी, तिणरे लेखे प्रसिद्ध ॥ ९ ॥ कह्यो परिग्रह नव प्रकार नो, दोपद चौपद देख। पांच दास्यां दीधी पर भणी, पांच गाया संपेख ॥ १० ॥ ए पिण ममता उतरी, तिणरै लेखै तहतीक। धर्म कहै रुपया दियां, तो इण में पिण धर्म ठीक ॥११॥ दास्यां खेती गायां दियां, पुन्य रो अंश म पेख। इमहिज रुपया आपियां, धर्म पुन्य म देख ॥ १२ ॥ पाप अठारामें पंचमो, परिग्रह महा विकराल। सेव्या सेवायां पाप छै, भगवती में सम्भाल ॥ १३ ॥

सावद्य साता करै सही, इण सूं पाप एकन्त। जिन आज्ञा वाहिर जाणज्यो, सूयगड़ा अङ्ग शोभंत ॥१४॥ भिक्खु स्वाम भली परै ओलखाया ऐन। हलुकर्मी हरख्या घणा, चित्त में पाम्या चैन ॥ १५ ॥ आखी ढाल अट्ठारमी, वारु स्वामी ना वोल। वोल साराही सुहामणा, आछा ने अमोल ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, असंजती अवलोय।
तिण ने दान देवा तणा, त्याग करावो मोय ॥ १ ॥
भिक्खु स्वामी इम भणै, सरध्या मुझ वच सोय।
प्रतीतिया रुचिया पवर, जिण सूं त्याग सुजोय ॥ २ ॥
के म्हाने भाण्डण भणी, करै इसा पचखाण।
इम कही कष्ट कियो अति हि, सखर स्वाम बुद्धिवान ॥३॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, टोला वाला नाहि।
प्रत्यक्ष पुन्य प्ररूपे नहीं सावज दान रे माहि ॥ ४ ॥
स्वाम कहै कोई असतरी, जल लोटो भर जाण।
म्हारे हाटे सूं पज्यो, कही किणी ने वाण ॥ ५ ॥
नाम पिड नो ना लियो, पिण सूंप्यो कर सान।
इम सानी कर पुन्य कहै, पुन्य री श्रद्धा पिछाण ॥ ६ ॥
किणहिक स्वामी ने कह्यो, पड़िमाधारी पेख।
दान निर्दोषण तसु दियां, सूं फल कहो विशेष ॥ ७ ॥
स्वाम कहै ले सूझतो, पड़िमाधारी पिछाण।
तसु फल होवै ते सही, देणवाला ने जाण ॥ ८ ॥
लेण वाला ने पाप कहै, पाप लगायो दातार।
तिण में पुन्य किहां थकी, स्वाम जाव श्रीकार ॥ ६ ॥

॥ ढाल १६ वीं ॥

(वीर सुणो मोरी बिनती ए देशी)

काचो पाणी पायां मांहिं पुन्य कहै, स्वामी दीधो हो तेहने दृष्टन्त । कोई खाई लुटावै पारकी, थारै लेखै हो इणमें पुन्य एकन्त ॥ संत दृष्टन्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ खांई लुटायां जो पाप है, पाणी पायां हो किम होसी पुन्य। दोनूं बरोबर देखल्यो, सावद्य दोनूं हो कण रहित है सुन्य ॥ सं० ॥ २ ॥ अव्रत में अन धन दियां, भेषधारी हो थापे धर्म ने पुन्य । स्वाम भिक्खु दियो शोभतो, हद हेतु हो सुणज्यो तन मन ॥ ३ ॥ लायमां सूं काढ़ दूजी लायमें, धन न्हाख्यांहो काम न आवै ते धार । आप कन्हे धन अव्रत में हुंतो. अव्रती ने हो दियो अव्रत मझार ॥ ४ ॥ लाय लागां गृहस्थरो घर जलै, बलतो देखी हो किण ही धन काढ्यो बार । ले न्हाख्यो दूजी लायमें, ततखिण आयो हो सेठ पास तिवार ॥ ५ ॥ अहो सेठजी तुझ घर आग थी, सखरी वस्तु हो धन काढ्यो म्हे सार । सेठ सुणी हरख्यो सही, ते धन किहां छै हो आपो वस्तु उदार ॥ ६ ॥ ओ कहै न्हाख्यो दूजी आगमें, सेठ जाण्यो हो परो मूरख सोय । लायमां सूं काढी

न्हाख्यो लायमें. काम न आवै हो तिण लेखै कोय ॥ ७ ॥ अव्रत रूप लाय हुंती आपरै, अव्रती ने हो दीधो और ने धन। लाय लगाई और रे, प्रत्यक्ष देखो हो तिण में किम हुवै पुन्य ॥ ८ ॥ श्रावकरे त्याग तेतो व्रत सही, अव्रत जाणो हो बाकी रह्यो आगार। अव्रत सेवावै और री, तिण माहें हो धर्म नहीं लिगार ॥ ६ ॥ अव्रत व्रत न ओलखै, भेषधारी हो करै भेल संभेल। दृष्टान्त स्वाम दियो इसो, घी तम्बाकू हो भेला कदेय न मेल ॥ १० ॥ औषध जीभ आंख्यां तणो, आहमो साहमो हो घाल्यां दोनूं विलाय। ज्यूं अव्रत में धर्म सरधियां, पाप व्रत में हो सरध्यां दुर्गति जाय ॥ ११ ॥ शोरो-गर रा घरमें शोर बासदी, न्यारा राख्यां हो घर विणसै नांय। ज्यूं व्रत अव्रत फल जु जूआ, जन जाणयां हो समकित न जलाय ॥ १२ ॥ प्रगट पसारी रे पारखा, न्यारा राखै हो मिश्री सोमल न्हाल। ज्यूं धर्म अधर्म खातो जू जुवो, सैंठी समकित हो शुद्ध सरध्यां संभाल ॥ १३ ॥ कोई कहै गृहस्थरो छान्दो अछे, दान देवै हो गृहस्थ ने देख। भिक्खु कह्यो छान्दा में तो धूल छै; घृत तो छै हो कूड़ी में संपेख ॥ १४ ॥ मैदो खाण्ड घृत शुद्ध मिल्यां

सखरा कहिये हो लाडू सरस सवाद । ज्यूं चित्त वित्त पात्र तीनूं जूड्यां, अतिफल लहिये हो, भव दधि तिरिये अगाध ॥ १५ ॥ घृत खाण्ड विहुं शुद्ध घणा, मैदारी जागां हो लाद है मांय । ज्यूं चित्त वित्त दोनूं चोखा मिल्या, पात्र जागां हो असाधु ने वहिराय ॥ १६ ॥ घृत मैदो चोखा घणा, खाण्ड जागां हो माहें घाली धूल । ज्यूं चित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड़्या, वित्त जागां हो असूझतो विष तुल्य ॥ १७ ॥ खाण्ड मैदो चोख खरा, घृत जागांहो माहें घाल्यो गौ-मूत । ज्यूं वित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड़्या, चित्त जागां हो देवणवालो कपूत ॥ १८ ॥ घृत री ठौर गौमूत है, खाण्ड ठामे हो घाली धूल महा खार । लाद मैदारी जायगां, आवी मिलिया हो तीनूं अधिक असार ॥ १९ ॥ ज्यूं देणवालो ही असूझतो, वस्तु दोधी हो असूझती जबून । अव्रत माहीं लेवाल अंगीकरी, प्रत्यक्ष पेखो हो इणमें किम हुवै पुन्य ॥ २० ॥ चित्त वित्त पात्र चोखा मिल्यां, कर्म निर्जरा हो पुन्य बन्ध कहि-वाय । एक अधूरो तीना मझे, थिर चित्त देखो हो तिण में पुन्य न थाय ॥ २१ ॥ दृष्टान्त ऐसा भिक्खु दिया, स्वामी मेल्या हो सूत्र ने न्याय

सिंध । यां बिन इसड़ी कुण कथै, पूर्वधारी हो जैसा भिक्खु प्रबन्ध ॥ २२ ॥ पंचम आरै प्रगट्या, आप ओजागर हो आप सूं अनुराग । हूं पिण हिवड़ां ऊपनो, साची श्रद्धा हो पामी ए मुझ भाग ॥ २३ ॥ आखी ढाल उगणीसमी, चित्त उमग्यो हो भिक्खु आया चीत । याद आयां हो हियो हुलसै, गुण गावत हो हुवो जन्म पवित्र ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

खरो मारग शोध ने, दियो स्वाम उपदेश ।
कुबुद्धि कुकला केलवी पूछे प्रश्न अशेष ॥ १ ॥
थाने असाध सरध ने, दीधो मैं तुझ दान ।
तिणरो मुझ ने स्यूं हुवो, इम पूछ्यो किण जान ॥ २ ॥
भिक्खु कहै मिश्री भली, किण खाधी विष जाणे ।
मन सुख पावै के मरै, उत्तर एह पिछाण ॥ ३ ॥
ज्यूं थे असाध जाणने, दियो सूझतो दान ।
अजाण पणो घट थांहरे, पात्र उत्तम फल जान ॥ ४ ॥
इत्यादिक बहु आखिया, दान ऊपर दृष्टन्त ।
किंचित् मात्र मैं कथ्या, बधतो जाणी ग्रन्थ ॥ ५ ॥
त्रिविध दया ऊपर वलि, हेतु महा हितकार ।
आक थोहर रा दूध सम, सावज दया असार ॥ ६ ॥
अनुकम्पा इहै लोकरी, जीवणो वांछे जाण ।
मोह राग माहें तिका, तिणमें धर्म म ताण ॥ ७ ॥
जे आरम्भ सहित जीवणो, असंजती रो अंभ ।
जिण वांछ्यो ए जीवणो, तिण वांछ्यो आरम्भ ॥

सूत्रे श्री जिन बरजियो, असंजम जीतव भास।
भिक्खु स्वाम भली परे, मेल्या न्याय बिमास ॥ ६ ॥

॥ ढाल २० मी ॥

(नगर सोरीपुर राजवी रे० ए देशी)

केई पाखण्डी इम कहै रे, लाय बुझावै लोयो। अल्प पाप बहु निर्जरारे, दम्भ करी थापै दोयो॥ दम्भ करी दोय थापै बेशर्मो, तेउ जीव मुआ ते पाप कर्मो। आगला जीव बच्या तिणरो धर्मो। भोलां तणे मन पाड़े भ्रमो जी, सहु कोई जी हो ॥ १ ॥ उत्तर भिक्खु आपियो रे, सांभलज्यो चित्त लायो। हलुकर्मी सुण हर्षिये रे, भारी कर्मी भिड़कायो। भारीकर्मी भिड़के लहै तापो। तेउ जीव मुवां रो कहै पापो। और बच्या तिण रो धर्म थापो। कर रह्या मूरख कूड़ किलापो। तिणरी श्रद्धा रो लेखो सुणो आपो। नाहर मार्यां एकलो नहीं पापो जी ॥ २ ॥ नाहर हिलयो एक आकरो रे, करै मनुषां रो खैगालो। गायां भैस्यां अजा बाकरा रे, सांभर रोझ सियालो। सांभर रोझ सियाल पिछाणो। प्रत्यक्ष लूट रह्यो पर प्राणो। जीव घणा रो करै घमसाणो। पङ्क प्रभा उत्कृष्टी पयाणो जी॥ स०॥ ३ ॥ किणही बिचार इसो

कियो रे, एतो है मांस आहारी । ए जीवियां जीव मारै घणारे, एहवा अध्यवसाय धारी । एहवा अध्यवसाय सूं सिंह मारी । उणरी श्रद्धा रे लेखे विचारी । नाहर रो पाप हुवो निरधारी । और बच्यारो धर्म हुवो भारी जी ॥ स० ॥ ४ ॥ बीजो दृष्टन्त भिक्खु दियो रे, जै एक पापी कसाई । पांच पांचसो भैंसा ने मारतो रे, करुणा न आणै काई । मन माहें करुणा आणै न काई । किण ही विचार कियो मन मांहो । एहने मार्‌यां बहु जीव बचाई । एम विचारी ने मार्‌यो कसाई, घणा जीवांने बचावण तांई जी ॥ स० ॥ ५ ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिणरी श्रद्धा रे लेखो । कसाई ने मार्‌यां पिण मिश्र छे रे, पोतानो श्रद्धा पेखो पोतारी श्रद्धा पेखो निज नैणो । पाप कसाई नो ए सत्य वैणो । जीव घणा बच्यां रो धर्म लेणो । पोतारी श्रद्धा लेखै कहिदेणो, कसाई ने मार्‌यां एकन्त पाप न कहिणो जी ॥ स० ॥ ६ ॥ तीजो दृष्टन्त स्वामी दियो रे, उरपुर एक अजोगो । घणा ऊंदरां रा गटका करै रे, मनुष्य पहुंचावै परलोको । मनुष्य मार परलोक पहुंचावै । घणा पंख्यां ना अण्डा पिण खावै । सर्प घणा जीवां ने सतावै,

उत्कृष्टे धूमप्रभा लग जावै जी ॥ स० ॥ ७ ॥ किण हो बिचार इसो कियो रे, सर्प घणा ने सतावै। एक सर्प मार्‍यां थकां रे, जीव घणा सुख पावै। जीव घणा सुख पावै सुजाणी। अनुकम्पा बहु जीवांरी जाणी। सर्प मार बचाया बहु प्राणी। लाय बुझायां कहै मिश्र वाणी, तिणरे लेखै इणमें मिश्र पिछाणोजी ॥ स० ॥ ८ ॥ चौथो दृष्टान्त स्वामी दियो रे, कोई पुरुष नो एहवो आचारो। बाप मुवां पहली कह्यो रे, काल करतां तिणवारो। काल करतां सुत कहो थी वाणो। सुखे तुम्हारा निसरो प्राणो। थां लारै अटव्यादिक बालस्यूं जाणो, घणा ग्राम नगर बाल करस्यूं घमसाणोजी ॥ स० ॥ ९ मनुष्य ढांढा घणा मारस्यूं रे, बाप ने एहवो सुणायो। पिता पहुंतो परलोकमें रे, पछै करवा लागो सहु तायो। करवा लागो छै जीवां रो घमसाणो। किणहिक मनमें बिचार्‍यो जाणो। एक मार्‍यां सूं बचै बहु प्राणो, इम चिन्तव ते पुरुष ने मार्‍यो अयाणो जी ॥ स० १० ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिणरे लेखै ए पिण मिश्र होयो। एक मार्‍यो पाप तेहनो रे, बहु बचिया तिणरो धर्म जोयो। बचिया रो धर्म त्यांरे लेखै बाजे। अल्प

पाप बहु पुन्य फल राजे। एक मार्‌यो घणा रावण काजे, इण में पिण मिश्र कहितां कांय लाजे जी॥ स० ॥ ११ ॥ पूज्य कह्यो वलि पांचमो रे, दृष्टान्त अधिक उदारो। कोई तुरकादिक आकरो रे, साथ सेना ले अपारो। सेना लेई देश ऊपर आयो। ग्राम नगर कतल करवाने ध्यायो। मनुष्य तिर्यंच मारण उमाह्यो, सेन्य अधिकारी ना हुक्म थी थायो जी॥ स० ॥ १२ ॥ किण ही विचार इसो कियो रे, करसी घणा जीवांरो संहारो। सेन्य अधिकारी ने मारियां रे, सर्बजीव बचै इणवारो। जीव बचै कतल नहीं हुवै तायो। इम जाण अधिकारी ने परभव पहुंचायो। मार्‌या ते पाप बच्यो पुन्य थायो, तिण रे लेखै इण में पिण मिश्र कहिवायो जी॥ स० ॥ १३ ॥ बचियांरो धर्म बताय ने रे, कहै लाय बुझायां धर्म। जीव अग्निरा जीविया रे, तिणसूं घणा मरै ते अधर्म। अग्नि जीव्यां घणा मरै ते पापो। इण विध कर रह्या कूड़ किलापो। अग्नि जीव हणियां मिश्र थापो। तेहनो न्याय सुणो चुप चापो, तिणरे लेखै गायां मार्‌यां केवल न पापो जी॥ स० ॥१४॥ गायां भैंस्यां आद जीवसी रे, तेपिण घणी छः काय हणतो। मनुष्यादि पवन छतीस छै रे, मच्छा-

दिक जलचर जन्तो। जन्तु मच्छादिक जलचर जाणी। ते पिण हणै छःकाय ना प्राणी। अग्नि जीवने हणयां मिश्र माणी, तिणरे लेखै ए सर्व हणया मिश्र जाणी जी ॥ स० ॥ १५ ॥ संसार मांहें साधु बिनां रे, सर्वहिंसा रा त्याग न दीसै। पन्नवणा पद वीस में रे, भाख्यो श्री जगदीश। श्री जगदीश भाखी इम रेंसो। प्राणातिपात वेरमण सु अशेषो। मनुष्य बिनां और रे न कहेसो। बुद्धिवन्त जोय बिचारज्यो रेंसो जी ॥ स० ॥ १६ ॥ साधु बिना संसारी सहुरे, हिंसक जीव कहायो। त्यां सगला ने मारियां रे, एकलो पाप न थायो। किण ही ने मार्यां एकलो पापो। जण ने मार्यो तिणरो महा तापो। और बच्या तिणरो पुन्य मिलापो। साधु ने मार्यां रो एकन्त पापो। खोटी श्रद्धाग लेखा री ए, थापो जी ॥ स० ॥ १७ ॥ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिणरी श्रद्धारे न्यायो। हिंसक ने मारण तणा रे, त्याग करावण नहीं तायो। त्याग करावे छै किण न्यायो। हिंसक बच्या घणा जीव हणायो। हिंसक मार्यां मिश्र धर्म थायो। ऊंधी सरधा रो तो ओहिज न्यायोजी ॥ स० ॥ १८ ॥ दृष्टन्त स्वाम भिक्खु दिया रे, सूत्र न्याय तंत सारी। जीव बच्या धर्म

थापने रे, भूल गया भेषधारी। भङ्ग गया भ्रम में भेषधारी। मोहराग माहें दया विचारी। भिक्खु ओलख तसु कियो परिहारी। तिरणो बले निज पर नो निवारी, तिण माहें धर्म कह्यो तंतसारी जी॥ स०॥ १९॥ बोसमी ढाल विषे कह्या रे, दया ऊपर दृष्टन्तो। सूत्र सिद्धन्तरा जोर सूं रे, न्याय मिलाया तंतो। स्वाम भिक्खु शुद्ध न्याय मिलायो। दानदया रूड़ी रीत दिखायो हलुकर्मी सुण २ हर्षायो, भारी कर्मा रे तो मन नहीं भायो जी॥ स०॥ २०॥

॥ दोहा ॥

पाली शहर पधारिया, पूज्य भवोदधि पाज।
एक जणो तिहां आवियो, चरचा करवा काज॥ १॥
ऊंधो बोलतो कहै, दुष्ट श्रावक तुझ देख।
फांसी कोई रा गलहुंती, काढे नहीं संपेख॥ २॥
थारा म्हारा मति करो, स्वामी भाखै सोय।
समचे बात करो सहो, न्याय हिये अवलोय॥ ३॥
फांसी ली किण दुःख थी, देख्यो जावत दोय।
काढ़ै नहीं ते केहवो, काढ़ै ते केहवो होय॥ ४॥
ते कहे फांसी काढ़ले, उत्तम पुरुष ते तंत।
जाणहार शिव स्वर्ग नो, दयावंत दोपंत॥ ५॥
नहिं काढ़ै ते नरक रो, जाणहार दौभाग।
भिक्खु कहै तुम तुझ गुरु, जाता दोनूं माग॥ ६॥
कुण फांसी काढ़ै कहो, कहै हूं काढ़ूं तिहां जाय।
मुझ गुरु तो काढ़ै नहीं, मुनि ने कल्पे नांय॥ ७॥

स्वाम कहै शिव स्वर्ग नो, जाणहार तूं पेख।
तुझ गुरु नरक निगोदना, जाणहार तुझ लेख ॥ ८ ॥
सुण ने कष्ट हुवो घणो, जाब देन असमर्थ।
ऐसी बुद्धि स्वामी तणी, उर में अधिक ओपंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल २१ मी ॥

॥ पर नारी संग परिहरो ए देशी ॥

सावद्य उपकार संसार तणा छै, तिण में म जाणज्यो तंतो। पूज्य भिक्खु ओलखायवा प्रगट दियो इसो दृष्टन्तो॥ स्वाम भिक्खु रा दृष्टांत सुणज्यो ॥ १ ॥ एक नृपति चोर पकड़्या इग्यारह, दुवो मारण रो दीधो। साहुकार एक अरज करी इम, सांभलज्यो प्रसिद्धो ॥ स्वा० ॥ २ ॥ पंच पंच सौ रुपया, प्रगट, इक इक चोर ना लीजे। आप कृपानिधि अरज मानी ने, चोर इग्यारा छोड़ीजे ॥ स्वा ॥ ३ ॥ राजा भाखै महा अपराधी, दुष्ट घणाई दुख दाता। छोड़वा जोग नहीं छै तस्कर, मान मछर मद माता ॥ स्वा ॥ ४ ॥ सेठ कहै दश मूको स्वामी, लाभ रुपयां रो लीजे। तो पिण नृप नहीं छोड़े तस्कर, कहे चोरा री पख नहीं कीजै ॥ स्वा ॥ ५ ॥ नव तस्कर मूको कृपानिधि, आठ सात आदि जाणी। इण पर अरज करी अधिकेरी, महिपति तो नहीं मानी ॥ स्वा ॥ ६ ॥ रोकड़ा पांचसौ देई राजा

ने, चोर एक छोड़ायो । ते पिण विनती अधिक करी तब, तस्कर मूक्यो तार्यो ॥ स्वा ॥ ७ ॥ पुर ना लोक करै गुण प्रगट, सेठ तणा सहुकोयी । धन्य धन्य लोक कहै यो धर्मी, हर्ष हिये अति होयो ॥ स्वा ॥ ८ ॥ बंधीछोड़ लोकां में बाजै, अधिक कियो उपगारो । तस्कर पिण गुण गावै तेहना, सुयश फैल्यो संसारो ॥ स्वा ॥ ९ ॥ महिपति दश चोरां ने मराया, इक निज स्थानक आयो । समाचार न्यातीला ने सुनाया, परियण दुख अति पायो ॥ स्वा ॥ १० ॥ तस्कर दश ना न्यायतीला ते, भारी द्वेष भराणा । बैर वाल ने भेला हुवा, बहु प्रत्यक्ष ही प्रगटाणा ॥ स्वा ॥ ११ ॥ चोर सारां ने साथ लई चाल्यो, पुर दरवाजे पिछाणो । चिट्ठी बांध लोकां ने चेतायो, सांभलज्यो सहु वाणो ॥ स्वा ॥ १२ ॥ मुझ तस्कर दश मारया तिणारो, इग्यारे गुणो बैर गिणस्यूं । मनुष्य एक सौ दश मार्यां स्यूं, पछै बिषटालो करस्यूं ॥ स्वा ॥ १३ ॥ साहुकार ना पुत्र सगा ने, मित्र भणी नहीं मारूं । अवर न छोड़ूं उराणे आयो, पंथ रह्या पिण पारूं ॥ स्वा ॥ १४ ॥ एम कही जन मारण उमग्यो, सुत किण ही रो संहारै । किण ही रो तात भाई हणै किण रो माता

किण री मारै ॥ स्वा ॥ १५ ॥ किण री नार हणै अति कोप्यो, बहन कोई री विणसै। किण ही री भूवा भतीजी किण री, तस्कर इम जन त्रासे ॥ स्वा ॥ १६ ॥ प्रबल भयंकर नगर में प्रगट्यो, होय रह्यो हा हा कारो। सेठ ने निंदवा लागा सहु जन, प्राभवै बचन प्रहारो ॥ स्वा ॥ १७ ॥ साहुकार रे घर जाई सगला, रोवे लोग लुगाई। कोई कहै मुझ माता मराई, कोई कहै प्रिय भाई ॥ स्वा ॥ १८ ॥ रे पापी तुझ घर धन बहु थो, तो कूवा में क्यों नहीं न्हाख्यो। चोर छोड़ाई म्हारा मनुष मराया, तस्कर जीवतो राख्यो ॥ स्वा ॥ १९ ॥ सेठ लातरियो शहर छोड़ी ने, बीजे गाम वस्यो जाई। इण भव फिट २ हुवो अधिको, परभव दुर्गति पाई ॥ स्वा ॥ २० ॥ जे जन गुण करता था तेहिज, अवगुण करत अथागो। संसार नो उपगार इसो छै, मोख तणो नहीं मागो ॥ स्वा ॥ मोख तणो उपगार है मोटो, सुर शिव पद संचरिये। जिण अगन्या तिण माहें जाणी, उलट धरी आदरिये ॥ स्वा ॥ २२ ॥ भिक्खु स्वाम भली पर भाख्यो, दया ऊपर दृष्टन्तो। उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अनोपम, हलुकरमी हरषंतो ॥ स्वा ॥ २३ ॥ इक बीसमी ढाल में आख्यो, अघ हेतु

उपगारो । प्रत्यक्ष ही फल सेठज पाया आगलि बहु अधिकारो ॥ स्वा ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

शिव संसार तणा सही, कह्या दोय उपगार ।
भिक्खु तिण ऊपर भला, दृष्टन्त दिया उदार ॥ १ ॥
उरपुर खाओो एक ने, उजाड़ में अवधार ।
किण झाड़ो देई करी, ताजो कियो तिवार ॥ २ ॥
पिता कहै मुझ सुत दियो, भाई बहिन भाषंत ।
ते म्हाने भाई दियो, त्री कहै दीधो कंत ॥ ३ ॥
चूड़ो चूंदड़ी अम रही, ते थारो उपगार ।
इम कहै मंत्रणहार ने, स्वजन सगा परिवार ॥ ४ ॥
ए उपगार संसार नो, तिण में नहीं तंतसार ।
कर्म बंध कारण कह्यो, नहीं धर्म पुण्य लिगार ॥ ५ ॥
उरपुर खाधो एक ने, साधां ने कहै सोय ।
यन्त्र मन्त्र बूंटी जड़ी, औषध आपो मोय ॥ ६ ॥
संत कहै कल्पे नहीं, बलि बोल्यो ते बान ।
करामात हो तो कहो, के लियो भेष तुफान ॥ ७ ॥
करामात मुनि कहै इसी, दुखी कदे नहीं थाय ।
ते कहै मुझ ते पिण कहो, अणशण मुनि उचराय ॥ ८ ॥
शरणा सूंस दिया घणा, शिवगामी सुर थाय ।
मोख तणो उपगार ए, स्वाम दियो ओलखाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल २२ मी ॥

डाभ मुंजादिक नी ड़ोरी ए देशी ।

दूजो दृष्टन्त भिक्खु दीधो, सांभलज्यो प्रसिद्धो । लोक मोक्ष ने मग नहीं मेले, तेतो कठे ही न थावे

भेल ॥ १ ॥ साहुकार रे स्त्रियां दोय, एक श्राविका शुद्ध अवलोय । वैराग अत्यंत बखाण, किया रोवण रा पचखाण ॥ २ ॥ दूजी धर्म्म में समझे नाहीं, चित्त काम भोग री चाहि । केतलाइक काल विचार, पर-देश माहें भरतार ॥ ३ ॥ काल कर गयो ते किण वार, बात सांभली छै बेहु नार । जिण रे रोवण रा छै त्याग, ते तो रोवे नहीं धर राग ॥ ४ ॥ समताधार बैठी सोय, कियो नेम न भांगै कोय । शुभ अशुभ कर्म्म स्वभावै, प्रत्यक्ष ओलख लियो प्रभावे ॥ ५ ॥ दुःख पाप प्रभावे देखै, बलि कर्म्म बांधू किण लेखै । उदै बांध्या जिसाइज आय, इम चित्त ने दियो समझाय ॥ ६ ॥ बीजी रोवे करत विलाप, कहै कवण उदय हुवा पाप । छाती माथो कूटे तन झाड़े, अति रोवती बांगा पाड़े ॥ ७ ॥ हाहाकार हुवो तिण वेलां, लोक हुवा सैकड़ा भेला । रोवे तिण ने अधिक सरावै, पतिव्रता ये दुःख पावै ॥ ८ ॥ बले बोले घणा लोग लुगाई, धन्य धन्य ये नार सुहाई । इण रे प्रीतम स्यूं अति प्यार, तिण स्यूं रोवै छै बांगां पाड़ ॥ ६ ॥ नहीं रोवे तिण ने जन निन्दे, आतो पापणी थी अपछंदे । आ तो मुवोज बांछती कंत, आंख में आंसू नहीं आवंत ॥ १० ॥ संसारी रे मन

इम भावै, मोह कर्म्म बसै मुरझावै। साधु कहो किण ने सरावै, परमारथ बिरला पावै ॥ ११ ॥ मोख ने लोक रो मग न्यारो. बुद्धिवंत हिया में विचारो, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टांत, प्रत्यक्ष देखाया दोनूं पंथ ॥ १२ ॥ इम ही संसार नो उपगारो, मोक्ष रा मारग सूं न्यारो। बांरु मोख तणो उपगार, संसार ने छेदणाहार ॥ १३ ॥ ऐसा भिक्खु उजागर भारी, न्याय मेलविया तंतसारी। कही ढाल बावीसमी सार, भिक्खु रा गुणा रो नहीं पार ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

श्रद्धा उपर स्वामजी, दिया घणां दृष्टांत।
कहि २ ने कितरो कहूं, न्याय मिलाया तंत ॥ १ ॥
बलि आचार रे ऊपरै, न्याय मिलाया सार।
ग्रन्थ वधतो जाण ने, न कियो बहु विस्तार ॥ २ ॥
इन्द्री वादी ऊपरै, काल वादी पर सोय।
दृष्टांत पूज्य दिया घणा, म्हे बहु न कह्या जोय ॥ ३ ॥
प्रस्ताविक प्रगट पणे, हेतु हद हितकार।
आख्या भिक्खु ओपता, उत्पत्तिया अधिकार ॥ ४ ॥
कथा नंदी सूत्रे कही, चार बुद्धि पहिछाण।
तिण कारण दृष्टांत सुण, चमको मति सुजाण ॥ ५ ॥
केसी स्वामी पिण कह्या, सखरा हेतु सार।
इमहिज भिक्खु जाणज्यो, पंचम काल मझार ॥ ६ ॥
मूरख जन दृष्टांत सुण, उलटा बांधे कर्म्म।

खबर नहीं जिन धर्म री, भूला अज्ञानी भ्रम ॥ ७ ॥
हलुकर्मी दृष्टांत सुण, पामे अधिको प्रेम ।
भारी कर्म्मा सांभली, बोले भावे तेम ॥ ८ ॥
विचरत २ आविया, शहर केलवै स्वाम ।
ठाकुर मोहकम सिंहजी, वांदण आया ताम ॥ ९ ॥

॥ ढाल २३ मी ॥

(आगे जातां अटवी ए देशी)

सहु परषदा सुणतां, सिरदार सुहायो रे । मोहकम सिंहजी, बोलै इम वायो रे ॥ भिक्खु ऋष भणी ॥ १ ॥ गाम २ री विनत्यां, अति आपने आवै रे । जन बहु देश नां, सहु आपने चहावै रे, भिक्खु ऋष भला ॥ २ ॥ नर नारी आपने देखी हुवे राजी रे, कर जोड़ी करे, जन कीरत जाझी रे ॥ भि० ॥ ३ ॥ पुण्यवंता प्रत्यक्ष नर नारी निरखै रे । सूरत देखने, हिवड़े अति हर्षे रे ॥ भि० ॥ ४ ॥ घणा लोक लुगायां ने आप वल्लभ लागो रे । ते कारण किसो, थांरे हर्ष अथागो रे ॥ भि० ॥ ५ ॥ इसो गुण कांई आप में, ते मुझ ने बतावो रे । सखर पणे सही, दिल में दरसावो रे ॥ भि० ॥ ६ ॥ भिक्खु इम भाखै, एक सेठ प्रदेशे रे । वर्ष बहु बीतिया, त्रिय छै निज देशे रे ॥ भि० ॥ ७ ॥ ते नार पतिव्रता, शीले गह गहती रे । निज प्रीतम

थको प्रेमे अति रहती रे। भिक्खु ऋष भणै ॥ ८ ॥ घणा महीना हुवा, कागद नवी आयो रे। त्रिय चिन्ता करे, मन प्रीतम माह्यो रे ॥ भि० ॥ ६ ॥ ते सेठ प्रदेश थी, कासीद पठायो रे। खरची दे करी, तिण पुर ते आयो रे ॥ भि० ॥ १० ॥ सेठ तणी हवेली, आय ऊभो तायो रे। किणहिक पूछियो, किण पुर थी आयो रे ॥ भि० ॥ ११ ॥ लियो नाम ते पुर नो, नारी सुण हरषी रे। आवी बारणै, नैण तसु निरखी रे ॥भि०॥ १२ ॥ कासीद ने देखी, हिवड़े हरषाणी रे। सुखसाता सुणी, रुं रुं विकसाणी रे ॥ भि० ॥ १३ ॥ उन्हा पाणी सूं उण रा पग धोवै रे। आनन्द जल भरया, नेत्रां सूं जोवै रे ॥ भि० ॥ १४ ॥ बर भोजन करने, कन्हे बेस जीमावै रे। पूछै बलि बलि; समाचार सुहावै रे॥ भि० ॥ १५ ॥ साहजी डिला में, किसाईक छै जाणी रे। सुख साता अछै, पूछै हरषाणी रे॥भि०॥ १६ ॥ साहजी कठे पोढ़े, किण जागा बैसे रे। बात सारी कहो, सुण ने अति उलसै रे ॥ भि० ॥ १७ ॥ कोई कारण नहीं छै; साहजी रे तन में रे। उत्तर सांभली, त्रिय हर्षे मन में रे ॥ भि० ॥ १८ ॥ साहजी कहो मुझ ने, समाचार कह्या छै रे। इहां

आसी कदे, बर्ष बहोत थया छै रे ॥ भि० ॥ १९ ॥ दिल रात्रि हूं तो, दिल अति चिन्ता करती रे। कागद ना दियो, मन में दुख धरती रे ॥भि०॥ २० ॥ कासीद कहै सुणो, साहजी रा जाबो रे। एम कह्यो सही, आवां छां उतावो रे ॥ भि० ॥ २१ ॥ पिण कोइक कारण सूं, अल्प दिन रेजो रे। मुझ ने मेलियो, सुण बाध्यो हेजो रे ॥ भि० ॥ २२ ॥ समाचार आपने, साहजी कहिवाया रे। म्हे ताकीद स्यूं आया के आथा रे ॥ भि० ॥ २३ ॥ पैदास घणी छै सुख से तुम रहिज्यो रे। किण ही बात री, मन फिकर म कीजो रे ॥ भि० ॥ २४ ॥ समाचार ज्यूं ज्यूं कहै, त्यूं त्यूं मन हरषै रे। राजी हुवै घणी, कासीद ने निरखै रे ॥ भि० ॥ २५ ॥ कासीद ने देखी, हर्षे अति नारी रे। ते कहै पिउ तणी वतका अति प्यारी रे ॥ भि० ॥ २६ ॥ एहवो बिरतन्त देखी, कहे अजाण एमो रे। इण दलिद्री थकी, पतिव्रता नो पेमो रे ॥ भि० ॥ २७ ॥ सुण बोल्यो सैणो, नहीं इण स्यूं प्यारो रे। पिउ समाचार थी, हरषी है नारो रे ॥ भि० ॥ २८ ॥ और भ्रम मति राखो, आ महा गुणवन्ती रे। सत्यवंती सती, शुद्ध माग चलंती रे ॥ भि० ॥ २९ ॥ समाचार प्रयोगे, पतिव्रता हर-

थाणी रे। और भ्रम नहीं, तिमहिज म्हे जाणी रे ॥ भि० ॥ ३० ॥ भगवान रा गुण म्हे, विधि रीत बतावां रे। शिव संसार नो, मारग ओलखावां रे ॥ भि० ॥ ३१ ॥ झीणी २ म्हे. सूत्र रहित बतावां रे। लोभ रहित पणै भिन्न २ दरशावां रे ॥ भि० ३२ ॥ दुःख नरक निगोदना, दूरा टल जावै रे। ते वातां कहां, तिण कारण चाहवै रे ॥ भि० ॥ ३३ ॥ घणा लोग लुगाई, इण कारण राजी रे। गामो गाम थी विनतियां ताजी रे ॥ भि० ॥ ३४ ॥ कवडी नहीं मांगां, शिव पंथ बतावां रे। नर नार्‍यां भणी, इण कारण सुहावां रे ॥ भि० ॥ ३५ ॥ कासीद निर्गुण थो, पिण पिउ समाचारो रे। तिण मुख स्यूं कह्या, तिण स्यं हरषी नारो रे ॥ भि० ॥ ३६ ॥ म्हे महाव्रत धारी जिन वैण सुणावां रे। बहु प्रकार थी, नर नार्‍यां ने सुहावां रे ॥ भि० ॥ ३७ ॥ नरपति सुरपति पिण, राण्यां इन्द्राणी रे। ते मुनिवर भणी, निरखे हरषाणी रे ॥ भि० ॥ ३८ ॥ मुनि नो अभरोसो, कोई नहीं राखै रे। अण समझ तिको, मन आवै ज्यूं भाखै रे ॥ भि० ॥ ३९ ॥ ठाकुर मोहकमसिंह, सुण नें दर्शाणो रे। सत्य वचन आपरा, स्वामी वैण सुहाणो रे ॥ भि० ॥ ४० ऐसा भिक्खु स्वामी, बुद्धि

अधिक उदारी रे । उत्तर अति भला, सुणतां सुख-कारी रे ॥ भि० ४१ ॥ भिक्खु ना जबाब स्यूं, अनुरागी हर्षे रे । भिक्खु गुण भला गुण ग्राही परखै रे ॥ भि० ॥ ४२ ॥ द्वेषी अगुणी जन सुण मुंह मचकोड़े रे । ते अवगुण थकी, आतम ने जोड़े रे ॥ भि० ॥ ४३ ॥ तंत ढाल तेबीसमी, सुणतां सुखदाई रे । स्वाम भिक्खु तणो, वतका मन भाई रे ॥ भि० ॥ ४४ ॥

॥ दोहा ॥

किण ही भिक्खु ने कह्यो, लागूं तुझ बहु लोय ।
अवगुण काढ़ै थांहरा, स्वाम कहै तब सोय ॥ १ ॥
अवगुण काढ़ै मांहरा, छोनी काढ़ना सोय ।
म्हारे अवगुण काढ़णा, माहें न राखणा कोय ॥ २ ॥
कांयक तप संयम करी, अवगुण काढ़ाँ आप ।
कांयक जन अवगुण करे, सम रहि काढ़ाँ पाप ॥ ३ ॥
संवली वेवी स्वामजी, इम बहु वात अनेक ।
देसूरी जांताँ मिल्यो, द्वेषी महाजन एक ॥ ४ ॥
तिण पूछ्यो सूं नाम तुझ, भीक्खण नाम कहीज ।
तिण कह्यो तेरापंथी ते, स्वाम कहै तेहीज ॥ ५ ॥
तब कहै तुझ मुख देखियां, जावै नरक मझार ।
पूज्य कहै तुझ मुख देखियां, किंहा जावै कहोधार ॥ ६ ॥
मुझ मुख देख्या शिव स्वर्ग, तब बोल्या महाराय ।
म्हे तो इसड़ी ना कहाँ, मुख थी नरक शिव पाय ॥ ७ ॥

पिण मुख देख्यो थांहरो, म्हारे तो शिव स्वर्ग ।
म्हारो मुख देख्यो तुम्हें, तुम कहिणी तुझ नर्क ॥ ८ ॥
सुण ने कष्ट हुवो घणो, ऐसी बुद्धि अधिकाय ।
वलि उत्पत्तिया बुद्धि करी, निर्मल मेल्या न्याय ॥ ६ ॥

॥ ढाल २४ मी ॥

(कहै छै रूप श्री नार सुणज्यो ए देशी)

स्वाम भिक्खु सुखदाय, मणिधारी महा मुनि-राय हो ॥ भिक्खु बुद्धि भारी ॥ अति मति श्रुति पर्यव अथाय, जसु गुण पूरा कह्या न जाय हो ॥ भिक्खु बुद्धि भारी ॥ बुद्धि अति अधिक अपारी, ए तो स्वाम सदा सुखकारी हो ॥ भि० ॥ १ ॥ धर देव गुरु ने धर्म्म, पद तीन दिखाया पर्म्म हो ॥ भि० शुद्ध सरध्यां समकित सार, धुर शिव पावड़ियो धार हो ॥ भि० ॥ २ ॥ दियो गुरु ऊपर दृष्टन्त, तकड़ी री डांड़ी रो तंत हो ॥ भि० ॥ तीन बेच डांड़ी रे समीच, बिहु पासे ने इक बीच हो ॥ भि० ॥ ३ ॥ बिचले ह्वै फरकज बाण, कहिये तसु अन्तर काण हो ॥ भि० ॥ तसु बिचलो बेच हुवे तंत, कोई अन्तर काण न कहंत हो ॥ भि० ॥ ४ ॥ ज्यूं देव गुरु धर्म्म जाणी, पद गुरु नो बीच पिछाणी हो ॥ भि० ॥ गुरु होवे शुद्ध गुणवंत, तो देव धर्म्म कहै तंत हो ॥ भि० ॥ ५ ॥ होवे गुरु हीन अचारी, वलि श्रद्धा भ्रष्ट

बिचारी हो ॥ भि० पाडे देव मांहे पिण फेर, धर्म्म में पिण कर दे अंधेर हो भि० ॥ ६ ॥ गुरु मिले ब्राह्मण तत खेव, तो देव कहे महादेव हो भि० अने धर्म्म बतावै एह, जन बिप्र जिमावे जेह हो भि० ॥ ७ ॥ भोपा गुरु मिले भरमाजा, देव कहै देव धर्म्मराजा हो भि० सुरह गायनो बाहरूसावो, धर्म्म पातील्यो भोपा जिमावो हो भि० ॥ ८ ॥ गुरु मिले कांबरिया कहेजी, देव बताय देवै रामदेजी हो भि० धर्म्म कहै कांबर जिमावो, बले जमारी रात्रि जगावो हो भि० ॥ ६ ॥ अरु गुरु मिल जावे मुल्ला, तो देव बताय दे अल्ला हो भि० धर्म्म जबे करण जलपंता, एर चरंति आदि कहंता हो भि० ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

एर चरति मैरूचरति, खेर चरति बहुतेरा।
हुक्म आया अल्ला साहिबरा, गला काटूंगा तेरा ॥ ११ ॥
ए साखी पढ़ पापिया, कती करै पर जीव।
ते पाप उदय आयां छतां, पामै दुःख अतीव ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज ।

जो गुरु मिले हिंसा धर्म्मी, कहै निगुणा देव कुकरमी हो भि० धर्म्म फूल पाणी में थापे, सूत्रांरा वचन उत्थापे हो भि० ॥ १३ ॥ गुरु मिले असल

निग्रन्थ, देव बताय देवै अरिहंत हो भि० धर्म्म जिन आज्ञा में बतावै, इहां अन्तर काण न आवै हो भि० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

गजीमैमूं दिवासती, तीनूं एकण गौत ।
जिण ने जैसा गुरु मिल्या, तिसा काढ़िया पोत ॥ १५ ॥

ढाल तेहिज ।

इण दृष्टन्त गुरु हुवै जैसा, तिके देव बतावै तैसा हो भि० बलि धर्म्म इसोज बतावै, नर समझू न्याय मिलावै हो ॥ १६ ॥ उत्तम पुरुष आचारी, गुरु सप्त बीस गुण धारी हो भि० निर्मल धर्म्म देव निर्दोष, मन सूं सरध्यां लहे मोख हो ॥ १७ ॥ वर लेखा भिक्खु बताया, दिलमें भिन्न २ दरशाया हो भि० ए कही चोवीसमी ढाल भिक्खु यश अधिक रसाल हो ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

अजाण कैयक इम कहै, म्हारे करणी सूं नहीं काम ।
म्हेनो ओघो मुंहपति, वांदां छां सिर नाम ॥ १ ॥
भिक्खु कहै ओघां भणी, वंदणा कियां तिरंत ।
तो ओघो हुवै ऊनरो, ऊन गाडर उपजंत ॥ २ ॥
पग गाडर ना पकरना, जो तिरै ओघा थी तास ।
धिन है माता तूं सही, सो ओघा करे पैदास ॥ ३ ॥

मुंहपति हुवै कपासनी, कपास वणि नो होय ।
जो तिरै मुंह पति वांदियां, तो वणिने वंदनो जोय ॥ ४ ॥
धिन है वणि सो तांहरी, हुवे मुंहपति एह ।
भेष भणी इम वांदियां, भव दधि केम तिरेह ॥ ५ ॥
गुण लारे पूजा कही, तो निगुण पूजता जाय ।
चौड़े भूला मानवो, किम आणीजै ठाय ॥ ६ ॥
जिन मारग में देखल्यो, गुण लारे पूजाह ।
निगुणा ने पूजे तिके, ते मारग दूजाह ॥ ७ ॥
गुण गोली लीरै भरी, पुरस्यां पांत धपाय ।
गुण विन ठाली ठीकरो, देख्यां भूख न जाय ॥ ८ ॥
एक व्रत भागे इसो, दोपण थापै जाण ।
इम इक व्रत भागां छतां, पाचूं जाय पिछाण ॥ ९ ॥

॥ ढाल २५ वीं ॥

(कामण गारो छै कुण ए देशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो रे । किम ए वात मिलाय, एक महाव्रत भांगां छतां रे । पंच बरत किम जाय, सुणज्यो दृष्टंत भिक्खु तणा रे ॥ १ ॥ स्वाम कहै तुमे सांभलो रे, पाप उदे थी पिछाण । इण भव में पिण दुःख उपजै रे, सुण एक हेतु सयान ॥ तंत दृष्टन्त भिक्खु तणा रे ॥ २ ॥ एक भिखारी भीख मांगतोरे फिरतां २ पुरमांहि । पंच रोटी रो आटो पामियो रे, अन्तर भूख अथाय ॥ तं० ॥ ३ ॥ रोटी करण लागो तदा रे, भिख्याचर भाग्य हीन । एक रोटी ने

उतार ने रे, चुला लारे मेली दीन ॥ ४ ॥ स्वान एक आयो तिण समै रे, पाप तणे प्रमाण। लोयो कठोती रो ले गयो रे, जद ते स्वान लारे न्हाठो जाण ॥ तं० ॥ ६ ॥ स्वान लारे भिख्याचर न्हासतां रे, आखुर पडियो अचाण। हाथ माहें जे लोयो हुं-तो रे, ते धूल में बिखरियो पिछाण ॥ तं० ॥ ७ ॥ तत् खिण पाछो आवी तदा रे, देखण लागो तिवार। चूला लारे रोटी पड़ी हूंती रे, लेगई तास मंजार ॥ तं० ॥८॥ तवा तणो तवे बलगई रे, खोरांरी खीर हुय गई छार। पांचूं बिललाई इण रीत सूं रे, पाप तणा फल धार ॥ तं० ॥९॥ इमहिज एक भागां थकां रे, पांच जावे परवार। दोषण थापे जे जाण ने रे, भव २ होवै खुवार ॥ तं० ॥ १० ॥ दोष सेव्यां डंड संपजे रे, डंड जितोई भागंत। नवी दिख्या आवै जेह थी रे, ते दोष सेव्यां सर्व जावंत ॥ तं० ॥ ११ ॥ भिक्खु स्वाम भली परै रे, दीधो वारु दृष्टन्त हलुकर्म्मी सुण हर-षिये रे, भारी कर्म्मा भिड़कंत ॥ तं० ॥ १२ ॥ पचीसमी ढाल परवरी रे, भिक्खु बुद्धि भरपूर। नित्य प्रति हूं वन्दना करूं रे, पौह ऊगंते सूर ॥ तं० ॥ १३ ॥

—

आधा कर्मो जायगा, थानक तिणरो नाम।
एहवा थानक भोगवै, वले कहै निरदोषण ताम ॥ १ ॥
वलि कहै म्हे मुख सूं कद कह्यो, जद बोल्या भिक्खु स्वाम।
जाय जमाई सासरै, ते पिण न कहै ताम ॥ २ ॥
मुझ निमते सीरो करो, इम तो न कहै तेह।
पिण कीधो ते भोगवै, जद दूजी बार करेह ॥ ३ ॥
जो सीरा ना सूंस करै, तो न करै दूजी वार।
त्याग नहीं तिण सूं करै, भोजन विविध प्रकार ॥ ४ ॥
ज्यूं भेषधारी रहै थानक मझे, वले कहै मुख सूं ताम।
थानक मुझ निमते करो, इम म्हे कद कह्यो आम ॥ ५ ॥
त्यां निमते कियो भोगवै, फिर करै दूजी वार।
त्याग करै थानक तणा, तो आरम्भ टलै अपार ॥ ६ ॥
वले डावडो कद कहै, करो सगाई मोय।
पिण सगपण कीधां पछै कुण परणीजे सोय ॥ ७ ॥
वलि बहु वाजे केहनी, घर किणरो मंडाय।
डावड़ा तणोज जाणज्यो, थानक एम गिणाय ॥ ८ ॥
थानक बाजे तेहनो, मांहि पिण रहै तेह।
न कह्यो थानक नो तिणां, पिण सहु काम करेह ॥ ९ ॥

॥ ढाल २६ मी ॥

(कपिरै प्रिया संदेशो कहेय० ए देशी)

गच्छवास्यांरे उपासरे रे, मथेरण तणी पोशाल।
फकीर रे तकियो कहै रे, नाम में फेर निहाल रे ॥
जीव स्वाम बुद्धि विशाल ॥ १ ॥ स्वाम बुद्धि अति
शोभती रे, निर्मल न्याय निहाल रे ॥ जी० ॥ २ ॥
कान फोडां रे आसण कहै रे, भक्तां रे अस्तल भाल।

भक्त फुटकर तेहने रे, मंढी नाम निहाल ॥ ३ ॥
सन्यासां रे मठ कहै रे, रामसनेह्यां रे गेह। राम
दुवारो केईक कहै रे. राम मोहल कहै केह ॥ ४ ॥
घरराधणी रे घर कहै रे सेठ रे. हवेली सुहाय।
कहै गाम धणी रे कोटरी रे, किहांएक रावलो
कहाय ॥ ५ ॥ राजा रे महल कहै सही रे, कांयक
ठौर दरबार। साधां रे थानक बाजतो रे, नाम में
फेर बिचार ॥ ६ ॥ सगलाई घरां घर अछै रे,
कठेएक बुहा कोदाल। किहांयक कनो बुहो सही
रे, आधाकर्म्मी असराल ॥ ७ ॥ आरम्भ तो षट-
कायनो रे. हुवो ज्यूं रो ज्यूं जाण। अरिहंत नी नहिं
आगन्यां रे छः कायनों घमसाण ॥ ८ ॥ घर छोड़्या
मुख सूं कहै रे, गाम २ रह्या घर मांड। तिण घर
रो नाम थानक दियो रे, रह्या भेष ने भांड ॥ ९ ॥
आधा कर्मी थानक भोगव्यां रे. महा सावज किरिया
संभाल। दूजे आचारङ्ग देखल्यो रे, कह्यो दूजे अध्ययने
दयाल ॥ १० ॥ आधा कर्म्मी आदर्‌यां रे, चौमासी
डंड पिछाण। निशीथ दशमें निहालज्योरे, वीर
तणी एह वाण ॥ ११ ॥ आधा कर्म्मी भोगव्यांरे
रुले अनन्तोकाल। पहले शतक भगवती में पेख-
ल्यो रे, नव में उदेशे निहाल ॥ १२ ॥ इत्यादिक

बहु वारतार, आखी आगम माहिं। भिक्खु तास भली परै रे, रुड़ी रीत दीधी ओलखाय ॥ १३ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक उजागर आप। निश दिन मनड़ो मांहरोरे जप रह्यो आप रो जाप ॥ १४ ॥ स्वप्ने सूरत स्वामनी रे देखत ही सुख होय। प्रत्यक्षनो कहिवो किसूं रे, शरण आपनो मोय ॥ १५ ॥ आदि जिणंद तणी परै रे, ओलखायो श्रद्धा आचार। जन्म जन्म किम विसरेरे तुझ गुण अनघ अपार ॥ १६ ॥ बारु ढाल छबीसमी रे, भिक्खु गुण मुझ चित्त। याद आयां हियो हुलसैरे; परम आप सूं प्रीत ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

भारीमाल शोभे भला, पूज्य भीखण जी पास।
बारूं कला वखाणकी, घन जिम शब्द गुंजास ॥ १ ॥
नित्य वखाण दे .नरमलो, ऊपर भिक्खु आप।
दान दया दीपावता, सुणतां टलै संताप ॥ २ ॥
हलुकर्मी हरखे घणा, भारी कर्मी भिड़कन्त।
अलगाही अवगुण करै, विकल वचन विलपन्त ॥ ३ ॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, वर तुमें करो वखाण।
निन्दक ए निन्द्या करै, अलगा बैठ अजाण ॥ ४ ॥
भिक्खु उ::र दे भलो. स्वान तणुंज स्वभाव।
झालर रो झिणकार सुण, रोवण केरो राव ॥ ५ ॥

नीच इती जाणै नहीं, ए झालर अधिकार ।
व्याव तणी वाजै अछे, के मुवांनी धार ॥ ६ ॥
ज्यूं ए पिण जाणै नहीं, वाचै ज्ञान वखाण ।
राजी रहणो ज्यांही रह्यो, अवगुण करै अजाण ॥ ७ ॥
उलटी निन्द्या ए करे, निन्द्या तणोज न्हाल ।
स्वभाव थांरो छै सही, झूठी करे जखाल ॥ ८ ॥
ऐसी वुद्धि उत्पात री, निर्मल अपूर्व न्याय ।
मेले मुनि महिमा निला, स्वाम घणा सुखदाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल २७ मी ॥

(हो म्हारा राजा रा)

स्वाम भिक्खु गुरु महा सुखदाई । भारीमाल शिष्य अति भारी, अमृत वाण सुधासो अनोपम, हद देशना महा हितकारी । हो म्हारा शासण रा शिणगार स्वामी जी भिक्खु भारीमाल ऋष भारी ॥ १ ॥ हद वाण सुणी हलुकर्म्मी हरषै, द्वेषी बोल्या धर्म्म द्वेष धारी । सवादोय पोहर रात्रि आइंसो, थाने कल्पै नहीं इणवारी ॥ २ ॥ भिक्खु कहै दुःखनी रात्रि भूंडी, झट सुख निशा सोहरी जावै । समी सांज माहे मनुष्य मूआं सूं, लोकां में रात्रि मोटी लखावै हो ॥ ३ ॥ संत बखाण देवै ते न सुहावै, ज्यांने रात्रि घणीज जणावै । दंभ मिल्यां तो अधिक न दीसै, आतो पोहर रे आसरे आवै ॥ ४ ॥ दोहा सहित दिया दृष्टन्त दोनूं, पैता-

लीसै शहर पींपार । तंत चौमास सोजत में तेपने, उठै हुवो घणो उपगार ॥ ५ ॥ किणहिक स्वाम भिक्खु ने कह्यो, इम उपगार तो आछो कीधो । जीव घणाने समझाया, जुगति सूं लाभ धर्म्म रो लीधो ॥ ६ ॥ वलता भिक्खु कहै खेती तो बाही, पिण गामरे गोरवें पेखो । सो खर नहीं आय पड़्यां तो टिकसो, बाकी कठिन है अधिक विशेषो ॥ ७ ॥ गधा समान पाखण्डी गिणिये, जिहां जाणो विशेष जिणारो । खेती समान धर्म्म खय करदे, तिण सूं संग न करणो तिणारो ॥ ८ ॥ किणही कह्यो देवो दृष्टन्त करला, स्वामी नाथ बोल्या सुण वायो । करड़ो रोग उपनां गंभीर केरो, मृदु फुजाल्यां केम मिटायो ॥ ९ ॥ हलवाणी रा डाम लागां हुवै हलको, गंभीर रो रोग गिणायो । करड़ो मिथ्यात रोग मिटावण काजै, करडा दृष्टन्त कहायो ॥ १० ॥ किणही स्वामी जी ने पूछा कीधी, कवी बुद्धिवालो समझे न कांई । मुनि भिक्खु कहै दाल मूंग मोंठांरी, फिर दाल चणा री पिण थाई ॥ ११ ॥ पिण गोहांरी दाल हुवै नहीं, प्रत्यक्ष ज्यूं भारी करमा न समझै जाणी । हलुकर्म्मी बुद्धिवान हुवैते, पक्ष छांडै जिण धर्म्म पिछाणी ॥ १२ ॥ शुद्ध जाब दूजो देवे तिण में

न समझे, आपरी भाषा रो ही अजाण। दृष्टन्त स्वाम ते ऊपर दीधो, समझावण काज सयाण॥ १३ ॥ एक बाई बोली म्हारो भर्तार एहवो, अखर लिखे ते अधिक अजोग। बीजा सूं अखर बचे नहीं बिरुआ, मोने ठोठरो मिल्यो संयोग॥ १४॥ इतरे दूजी कहै मुझ पिउ इसड़ो, पोतारा लिख्या अखर पिछाणो। जे पिण पोता सूं बच्या नहीं जावै, अति ही मूर्ख एहवो अजाणो॥ १५॥ ज्यूं आपरी भाषाने आप न जाणै, केवली भाख्यो धर्म्म किम आवै। सरधा तो परम दुर्लभ कही सूत्रे, परबीण हलुकर्म्मी पावै॥ १६॥ पाखंड्यां रो मग गायां री पगडांडी, दूर थोड़ी तो मारग दीसै। आगे उजाड़ मोटी अटवी में, दुष्ट कांटा बिषम दूधरीसे॥ १७॥ ज्यूं दान शीलादिक अल्प दिखाई, पाखण्डी पछै हिंसा पमावै। आगे चले नहीं ये उन्मारग, जाव माहें घणा अटक जावै॥ १८॥ पातशाही रास्ता जिम पंथ प्रभु नो, नहीं अटकै कठेई ते न्यायो। दृष्टन्त पाग तणो स्वाम दीधो, पार थेट तांई पोंहचायो॥१९॥ पाग चोरी ल्यायां पूछ्यां न पूगै, मुदो थेट तांई न मिलाई। साचो कहै मोल लियो कुण सेती, रुड़ी अमकडियां पास रंगाई इम साची सरधा न्याय

किहांई न अटके, झूठी सरधा अटकै, झोला खावै। दृष्टन्त स्वाम भिक्खु एहवा दीधा, दान दया आज्ञा दरशावै ॥ २१ ॥ एहवा भिक्खु स्वाम आप उजागर, ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जावै। इद न्याय सुणो हरषे हलुकर्म्मी, भारी कर्म्मा सांभल भिड़कावे ॥ २२ ॥ सखर ढाल कही सतबोसमी, दृष्टन्त भिक्खु रा दिखाया। मति श्रुत सूं बर न्याय मिलाई, स्वामी जीव घणा समझाया ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, सूंस करावो सोय।
ते लेई भागै तिको, पाप आपने होय ॥ १ ॥
स्वामी भाखे सांभलो, कोयक साहुकार।
वस्त्र किणने वेंचियो, सौ रुपयांरो सार ॥ २ ॥
नफो मोकलो नीपनो, वेंच्यो तास विचार।
वलि वस्त्र लेवालरा, सांभलजो समाचार ॥ ३ ॥
कपड़ो लीधो तिण किया, एक एक रा दोय।
तो पिण नफो उण तणो, वेंच्यो तास न होय ॥ ४ ॥
कपड़ो जो लेई करी, जाले अग्नि मझार।
तोटो पिण उण रै तिको, बेच्यो तसु म विचार ॥ ५ ॥
समझाई म्हे सूंस द्यां, तिणरो नफो अमाम।
हमने तो ते हो गयो, तोटा में नहीं ताम ॥ ६ ॥
सूंस पालसी अति सखर, थिर फल तेहने थाप।
भाग्यां दोषण उण भणी, पिण म्हांने नहीं पाप ॥ ७ ॥

वलि दूजो दृष्टान्त वर, दुमिने किण घृत दीध।
मुनिने वहराई जिय मूआ, पाप तास असिद्ध ॥ ८ ॥
अथवा मुनि अन्य साध ने, घृत दे वन्दे जिन गीत।
तो पिण फल ते मुनि तणे, हिव गृही ने नहिं होत ॥ ९ ॥

॥ ढाल २८ मीं ॥

(आज शहर में बाई० एदेशी)

वैरागी री वाणी सुणयां वैराग वाधै, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टान्तो रे लो। कसुंबो आप गल्यां गालै कपड़ो, आवै रंग अत्यन्तो रे लो, स्वाम भिक्खु तणा दृष्टान्त सुणजो ॥ १ ॥ गांठ कसुंबारी गाढ़ी बांधै, पोते गलियां विण रंग न पमावै रे लो। ज्यूं वैराग हीण तणी वाणी सूं अति वैराग किण विध आवै रे लो ॥ २ ॥ भेषधारी कहै म्हे जीव बचावां, भीखणजी नाहिं बचावै रे लो। भिक्खु कहै थारा रह्या बचावणा, मारणाज छोड़ो मन ल्यायो रे लो ॥ ३ ॥ थानक मांहि रहो किवाड़ जड़ो थे, जीव घणा मर जावे रे लो०। किवाड़ जड़वाणा सूंस किया सूं, बणा जीवांरी घात न थावै रे लो ॥ ४ ॥ चौकीदार हुंतो सो चौकी देणी तो छोड़ी, चोरी करवा लागो छाने छानेरे लो०। कहे लोका ने चौकी द्यूं करूं जावता, मैंनत रा पैसा देवो थे म्हानेर लो ॥ ५ ॥ चौकी रही थारी चोर्यां

छोड़ तूं, बोल्या लोक तिवारे रे लो। दिनरा तो घर हाट देखी जावै, पछै रात्रि समै आय फाड़ै रे लो ॥ ६ ॥ पइसो पइसो तेहने देणां परहो, घर बैठी ने गिणाव्यो रे लो०। ज्यूं भेषधारी कहै म्हे जीव बचावां, मारणा छोड़ो भिक्खु फुरमायो रे लो० ॥ ७ ॥ किणही पूछ्यो ऋषपाल मुनि कह्यां, रिख्या करै किण रीतो रे लो०। भिक्खु कहै ज्यूं छै तिम हिज राखणा, आघा पाछा न करणा अनीतो रे लो ॥ ८ ॥ पशु लिलोती चरता ने मुनि पेखै, किम ऋषपाल कहीजै रे लो०। त्रिविधे त्रिविधे हणवा त्याग्यो ते, रक्षक अभय सर्व ने आपीजै रे लो० ॥ ६ ॥ कोई कहै हिवड़ां पंचम काल छै, पूरो साधपणो न पलायो रे लो०। तब पूज्य कहै चौथा आरा में तेलो कितरा दिनारो कहायो रे लो० ॥ १० ॥ तब ते बोल्या तीन दिनरो तेलो, चौथे आहारै चित्त चाह्यो रे लो०। भिक्खु पूछ्यो एक मूंगारो भोगव्यां, तेलो रहे के भागै ताह्यो रे लो० ॥ ११ ॥ तब ते बोल्यो परहो भागै तेलो, इम चौथे आरा रो तेलो उलखायो रे लो। फेर स्वामी पूछै पंचम आरै किता दिवस रो तेलो कहायो रे लो० ॥ १२ ॥ तब ते बोल्यो तेलो तीन दिनारो, पंचम आरै पिछाणी

रे लो० । भिक्खु कहै एक भूंगरो खाधां, शुद्ध रहे के भागे सो जाणी रे लो० ॥ १३ ॥ तब ते बोल्यो परहो भागे तेलो, बलि पूज बोल्या वायो रे लो । भूंगरा सूं ई तेलो परहो भागै, दोष थाप्यां संजम किम ठहरायो रे लो० ॥ १४ ॥ काल दुखमरे माथे कांय न्हाखो, नेयंठे छहूं चरण ते नीको रे लो० । पंचम चौथा आरा में प्रत्यक्ष, सहुरे त्याग है एक सरीखो रे लो० ॥ १५ ॥ दोष लागांरो डंड दोनूं आरा में, डंड लीधां चारित्र दोनूं आरो रे लो० । दोनूं आरा माहे दोष थाप्यां सूं, चारित दोनूं आरा में हुवै छारो रे लो० ॥ १६ ॥ भिक्खु स्वाम दृष्टान्त भली पर, बारु भिन्न २ भेद बताया रे लो० । इयां पुरुषां जिण माग जमायो, स्वामो चार तीर्थ सुखदाया रे लो० ॥ १७ ॥ एहवा पुरषां रा औगुण बोले, कृतघ्न कर्म्म रेख काली रे लो० । दुर्लभ बोध अवर्णवाद सूं दाख्यो, सूत्र ठाणांग लीजो संभाली रे लो० ॥ १८ ॥ अष्टवीसमीं ढाल अनोपम, भिक्खुरा दृष्टन्त भाली रे लो० । उत्पत्तिया भेद मति रो है आछो, नन्दी में पाठ निहाली रे लो० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, संजम लेऊं सार।
मन उठे है मांहरो, स्वाम कहै सुख कार ॥ १ ॥
घर में पुत्रादिक घणा, रुदन करै घर राग।
तुझ काचो हियो तेहथी, अति ही कठिन अथाग ॥ २ ॥
न्याती रोता निरखने, मोह धरो मन मांहि।
तूं पिण रुदन करै तदा, काम कठिन कहिवाय ॥ ३ ॥
तिण कह्यो स्वामी नहन वच, आंसू तो आय जाय।
परियण रोता पेखने, म्हारै पिण मोह आय ॥ ४ ॥
स्वाम कहै कोई सासरे जाय जमाई जाण।
आणो ले आतां छतां, त्रिय तो रोवै ताण ॥ ५ ॥
पिण उणरी देखा देख पिउ, जेह जमाई जोय।
रुदन करै मोह राग सूं, हांसी जग में होय ॥ ६ ॥
त्रिय रोवे पीयर तणो, वियोग पड़े विशेष।
वर रोवे किण वासते, उपनय कहूं अशेष ॥ ७ ॥
ज्यूं संयम लेवे जरे, स्वार्थ रुदन स्वजन।
तत चारित लेवे तिको, मोह धरे किम मन ॥ ८ ॥
तिण सूं संयम कठिन तुझ, दियो इसो दृष्टन्त।
वलि हेतु आख्या विविध, स्वाम भला शोभंत ॥ ६ ॥

॥ ढाल २६ वीं ॥

(भरत जी भूपं० ए देशी)

जगत् तो मोह ने दया जाणे छै। दया ओलखणी दोहरी, प्रत्यक्ष राग अठारै पाप में ॥ साची श्रद्धा नहीं सोरीरा, भविकजन भिक्खु ना दृष्टन्त

आरी ॥ १ ॥ पूज मोह ओलखायो प्रत्यक्ष, दियो एहवो दृष्टान्तो। परणयां पछै कोई परभव पोंहतो बाल अवस्थावन्तो ॥ २ ॥ मुओ देख हाहाकार माच्यो, त्रिया रोवै तिण वेला। प्रत्यक्ष हाय हाय शब्द पुकारै, भय चक्क जन हुवा भेला भ० ॥ ३ ॥ कहै बाप री छोरी रो घाट कांई होसी, इणरी देखो अवस्था ऐसी। बारह वर्ष री बिधवा होई सो, किण बिध दिन काढैसी भ० ॥ ४ ॥ एम विलाप करै लोक अधिका, जगत इणने दया जाणै। करुणा दया एह छोरी री करेछै, मूरख तो इम माणै ॥ ५ ॥ पण भोला इतरी नहीं पेखे, ए बंछे इणरा काम भोगो। जाणे ओ रह्यो हुंतो जीवतो तो, सखर मिल्यो थो संजोगो भ० ॥ ६ ॥ दोय चार होता डावरा डावरी, भोग भला भोगवती। पिण न जाणै आ काम भोग थी, माठी गति माहिं पड़ती ॥ ७ ॥ तिणरी चिन्ता तो नहीं तिणने, तथा पिउ किण गति पांगरियो। ते पिण मूल चिन्ता नहिं त्यांने, जगत् माया मोह जुड़ियो भ० ॥ ८ ॥ ज्ञानी पुरुष मरण जीवण सम गिणै, उलट सोग नहीं आणै। मूढ़ मिथ्याती मोह राग ने, जीवण ने दया जाणै ॥ ९ ॥ अथवा राग द्वेष रे ऊपर, दृष्टान्त दूजो दीधो।

डावरां रे किणही माथा में दीधी, साम्प्रत द्वेष प्रसिद्धो ॥ १० ॥ उण ने सहु कोई देवै ओलूंभा, डावरां रे माथा में कांई देवै । क्रोध करि दियां द्वेष कहे सहु, कोई आछो नहीं कहवै ॥ ११ ॥ डावरां ने किणही लाडू दीधो, अथवा सूंठो दियो आणी । कोई न कहे इण ने कांई डबोवे, प्रत्यक्ष राग पिछाणी ॥ १२ ॥ ओ राग ओलखणो दोहरो, अति ही इण ने दया कहे छै अजाणो । दुर्जय राग दशम तांई देखो, वीतां वीतराग कहाणो ॥ १३ ॥ इम राग द्वेष भिक्खु ओलखाया, मोह राग पाखंडी दया माणै । स्वाम भिक्खु न्याय सूत्र शोधी, निरवद्य दया आज्ञा में आणै ॥ १४ ॥ भरत खेत्र में दीपक भिक्खु, दीपा समान दीपायो । जिहाज तुल्य भिक्खु यशधारी, प्रत्यक्ष ही पेखायो ॥ १५ ॥ याद आवै भिक्खु मुझ अहनिश, तन मन शरण तुमारो । त्यां पुरुषां नी आसता तीखी, जिण रो है सफल जमारो ॥ १६ ॥ गुण तीसमी ढाले ज्ञानी गरुना, वारु वचन बताया । कठा तलक भिक्खु गुण कहिये । चिर जश कलश चढाया ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

विहरत पूज पधारिया, काफरले किण वार ।
संत गोचरी संचरया, आज्ञा लेई उदार ॥ १ ॥

एक जाटणी रे उदक, जाच्यो साधाँ जाय।
ते धोवण नहिं दे तिका, कहै देवै सो पाय ॥ २ ॥
साधाँ आय कह्यो सही, स्वाम पास सुविहाण।
एक जाटणी रे अधिक, पण नहीं देवे पाण ॥ ३ ॥
तब स्वामी आया तिहां, वाई जल बहिराय।
जब ते कहै देवै जिको, परभव में फल पाय ॥ ४ ॥
ओ धोवण द्यूं आपने, परभव धोवण पाय।
ओ जल पीधां जाय नहीं, मुझ सेंती मुनिराय ॥ ५ ॥
पूज तास पूछा करी, गाय भणी दे घास।
तिण री स्यूं दे ते गऊ, आपे दूध उजास ॥ ६ ॥
इम मुनि ने जल आपियां, परभव सुखफल पाय।
निर्दोषण ना फल निमल, स्वाम दई समझाय ॥ ७ ॥
जद आज्ञा दी जाटणी, वहिरी ने शुद्ध वार।
आप ठिकाणे आविया, ऐसी बुद्धि उदार ॥ ८ ॥
मति ज्ञान महा निर्मलो, भिक्खु नो भरपूर।
नीत चरण पालण निपुण, स्वाम सिंघ सम शूर ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३० मी ॥

(भगवंत भाख्या ए देशी)

आज म्हारा पूज सूं रे पाखंड थरहड़े, सुरगिर आप सधीरो जी। पारश साचो रे भिक्खु प्रगट्यो, हद स्वाम अमोलक हीरो जी॥ आ ॥ १ ॥ पादु शहरे रे पूज पधारिया, उतर्या उपासरे आणो जी। शिष्य हेम संघाते रे गोचरी उठता, इतले कुण अवसानो जी ॥ २ ॥ आया दोय जणा तिण अवसरे, सामदासजी रा साधोरे। खांधे पोथ्यां तणा

जोड़ा खरा, मेला बस्त्र मर्य्यादो रे ॥ आ० ॥ ३ ॥
बिहार करन्ता उपाश्रे आविया, बोले सुख सूं बोलो
रे। कहे भीखणजीरे सीखण जी कहै, तव भिक्खु
बोल्या तोलो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ भीखण नाम म्हारो
स्वामी भणे. बलि ते बोल्या विशेखो रे। थाने देखण
री मन में हूंती, तब स्वाम कहै तुम देखो रे ॥ ५ ॥
बलि उवे बोल्या थे सगली बारता, आछी कीधी
आमामो जी। एक बात आछी नहीं आदरी, तब
पूज कहै कहो तामो जी ॥ ६ ॥ बलि ते कहिवारे
लागा बारता, म्हें बावीस टोलांरा साधो रे। त्यां
सगला ने असाध कह्या तिका, विरुई बात बिराधो
रे ॥ ७ ॥ मुनि भिक्खु कहे तुझ टोला मझे. लिखत
इसो अवलोयो रे। इकवीस टोलारो तुझ गण
आवियां, संयम देणो सोयो रे ॥ ८ ॥ ऐसो लिखत
थांरा गण में, अछे जाणो के थे न जाणो रे। जद
उवे बोल्या म्हे जाणां अछां, छै मुझ लिखत अछानो
जी ॥ ९ ॥ भिक्खु पभणे इकीस टोलां भणी,
थेइज प्रत्यक्ष उथाप्या रे। गृही ने दीख्या देई लो
गण मझे. थे गृही तुल्य त्यांनेई थाप्या रे ॥ १० ॥
इकवीस टोलां रा तुझ गण आवियां, दीख्या दे
लेवो मायोरे। गृही ने दीख्या देई लो गण विषै,

गृही तुल्य तास गिणायो रे ॥ आ० ॥ ११ ॥ इक-बीस टोला इम थेइज उथापिया, तुझ टोलो रह्यो तेहोरे । तिण रो लेखो बताऊं तो भणी, सांभल जो ससनेहो रे ॥ आ० ॥ १२ ॥ डंड बेला रो आवै जिण भणी, तेलो देवै तहतीको रे । तेलारो डंड आवै तिण भणी, श्री जिन वैण सधीको रे ॥ १३ ॥ इकवीस टोलाने साधश्रद्धो अछो, वले नवो साध पणो देवो रे । तिण लेखे दोख्या रं तुझ आवे नवी बिवेक लोचन सूं बेवो रे ॥ १४ ॥ थारो टोलो पिण इण लेखा थकी, उथप गयो उवेखो रे । इम बावीस टोला उथप गया, दरूभ तजी ने देखो रे ॥ १५ ॥ एम सुणी ने ने बोलया इण विधे, वारु वयण बिचारी रे । सुणो भीखण जो रे साचो वारता, बुद्धि तो थांरी भारी रे ॥ १६ ॥ इम कहि जावा रे लागा उण समै स्वाम कहै सुखकारो रे । रहो तो चर्चा करां रुड़ी तरे, न्याय तणो निर्धारो रे ॥ १७ ॥ तव उवे बोल्या सुझ रहिवा तणी, हिवड़ां थिरता न होयो रे । तत्-खण एम कही ने तिहां थकी, रह्या चालंता दोयो रे ॥ १८ ॥ ऐसी बुद्धि अनोपम आपरी. बुद्धिवन्त पामे विनोदो रे । चिमत्कार अति पामे चित्त मझे, प्रगट पणे प्रमोदो रे ॥ १९ ॥ रागी सुणने रे चित्त

में रति लहे द्वेषी द्वेषज धारे रे। उलट बुद्धि नर अवगुण आदरे; वच सुण मुंह बिगाड़े रे ॥ २० ॥ वर भिक्खु री सुन्दर वारता, सांभलतां सुखकारी रे। हलुकर्म्मी जन सुण हर्षे घणा, पूज वारता प्यारी रे ॥ २१ ॥ तंत तीसमी ढाल तणांसनी, अति बुद्धि भिक्खु नी एनो रे। अंतर्य्यामी रे याद आयां छतां चित्त में पामे चैनो रे ॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

विचरत पूज पधारिया, शिरियारी में सोय।
प्रश्न बोहरे पूछिया, जाति खींवसरा जोय ॥ १ ॥
जीव नरक में जाय तसु, तारण वालो नाम।
कुण है कहो कृपा करी, इम पूछ्यो अभिराम ॥ २ ॥
भिक्खु उत्तर इम भणे, सखर जाव सुखकार।
पथर कुवा में न्हाखियां, कुण तसु सांचणहार ॥ ३ ॥
कठिन पत्थर भारे करी, आफेई तल जाय।
कर्म भार सूं कुगति लहे, स्वाम कहै इम वाय ॥ ४ ॥
बोरे पूछा वलि करी, जीव स्वर्ग किम जाय।
कुण लेजावणहार तसु, वारु अथ बताय ॥ ५ ॥
भिक्खु कहै बोरा भणी, प्रत्यक्ष पाणी मांय।
काष्ठ न्हाखे कर ग्रही, ते किण रीत तिराय ॥ ६ ॥
तिण काष्ठ रे तल कहो, किण मांड्या है हाथ।
हलका पणे स्वभाव सूं, ऊपर तिर ने आत ॥ ७ ॥
हलको कर्म्म करी हुवां, जीव स्वर्ग में जाय।
सगला कर्म्म रहित सो, परम मोक्ष गति पाय ॥ ८ ॥

ऐसा उत्तर आपिया, बारु बुद्धि बिनाण ।
बलि उत्पत्तिया बुद्धि थकी, सखर जाव सुविहाण ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३१ मी ॥

(देवे मुनिवर देशना, ए देशी)

पूज भणी किण पूछियो । हलको जीव किम होय । ललना । दृष्टान्त स्वामी दियो इसो । सांभल जो सहु कोय, ललना ॥ तंत दृष्टान्त भिक्खु तणा ॥१॥ तंत बचन तहतीक ल० तंत स्वाम नाव तारणी, न्याय तंत निरभीक ल० तं० ॥ २ ॥ पइसो मेले पाणी मझे ततखिण डूबे तेह । उणहिज पइसाने अग्नि में, अधिक ताप देवै एह ल० तं० ॥ ३ ॥ कुटी कुटी बाटकी करी, तिरे उदक में ताहि । ल० वलि उण बाटकी ने विषै, पइसो मेल्यां तिराय ल० तं० ॥ ४ ॥ तिम जीव संजम तप करी, करे आत्म हलकी कोय ल० करम भार अलगो कियां, तिरिये भव दधि तोय ल० तं० ॥ ५ ॥ किणही स्वाम भणी कह्यो, दुरंगा पात्रा देख ल० । काला धोला लाल किण कारणे, स्वाम कहे सुविशेष ल० तं० ॥ ६ ॥ विविध रंग कुंथुवा हुवै, इक रंग सूं दूजा पर आय । साम्प्रत दीसणो सोहिलो कारण एह कहाय ल० ॥ ७ ॥ अति भार हींगलु एकलो, कालो फोड़ो

कहिवाय ल० बलि सोहरो बासी उतारणो, इत्यादिक ओलखाय ल० ॥ ८ ॥ जु जूआ रंग देवै जूदा, निगम में बरज्या नाहिं । बर्ज्या ममत्व भावे करी, ते मम तरी थाप न ताहि ल० ॥ ९ ॥ बाल पणै स्वामी बेणी रामजी, भिक्खु प्रते भाषंत ल० हींगलू सूं पात्रा रंगणा नहीं, तब कहै भिक्खु तंत ल० ॥ १० ॥ म्हारे तो पात्रा रंग्या अछै, तुझ मन शंका हुवै ताम ल० । तो तुझ पात्रा रंगो मती, म्हें तो दोष न जाणा आम ल० ॥ ११ ॥ तब बोल्या बेणीरामजी, केलुथी रंगवा रा भाव ल० । भिक्खु तास भलो परै, निर्मल बतावै न्याय ल० ॥ १२ ॥ जो केलु लेवा तूं जाय छै, पहिला पीलो कचा रंग रो पेख ल० । पक्का लाल रंग रो आगे पड्यो पहिलो छोड़णो नहीं तुझ लेख ॥१३॥ पहिला देख्यो कच्चा रंग रो परिहरि. चोखो केलु हेरै चित चाहि ल० । जद तो ध्यान घणा रंगरोज छै, इम कहिने दिया समझाय ल० ॥ १४ ॥ ऐसी बुद्धि उत्पात्तरी, नहीं मान बड़ाई री नीत ल० । आतम अर्थी ओपता, पूरी ज्यांरी प्रतीत ल० ॥ १५ ॥ आप ववहार में ओलखी दोष जाणी कियादूर । निरदोष जाण्यो निर्मलो, सम आदरियो शूर ल० ॥ १६ ॥ प्रथम आचारंग पेखल्यो, पंचम अध्ययने पिछाण ल० ।

पंचम उदेशो परवड़ो, वीर तणी ए वाण ल० ॥१७॥ शुद्ध व्यवहार आलोचियां, असम्य पिण सम्य थाय ल० । ते कामी नहीं तिण दोष नो, शुद्ध साधुनी रीत सुहाय ल० ॥ १८ ॥ उत्तम ए पाठ ओलखो, कोई ओजरो भ्रम कर्म्म योग ल० । तो भिक्खुरी आसता राखियां, पामै सुख परलोग ल० ॥ १९ ॥ आखो ढाल इकतीसमी, भिक्खु बुद्धि भंडार । दृष्टान्त दिल में देखतां, चित्त पामै चिमत्कार ल० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

किणही भिक्खु ने कह्यो, जीव छोड़ावै जाण ।
सूं फल तेहनो नीपजे, वर भिक्खु कहै वाण ॥ १ ॥
घट में ज्ञान घाली करी, हिंस्या छोड़ायां धर्म्म ।
जीवण वंछै जेहनो, कटै नहीं तसु कर्म्म ॥ २ ॥
ऊंची कर वे आंगुली, आखै भिक्खु आप ।
ओ वकरो रजपूत ओ, कहो बांधै कुण पाप ॥ ३ ॥
मरणहार डूबै सहा, के डूबै मारणहार ।
ओ कहै मारणहार सो, जासी नरक मझार ॥ ४ ॥
भिक्खु कहै डुवता भणी, तारै संत विचार ।
समझावे रजपूत ने, शिव मार्ग श्रीकार ॥ ५ ॥
जे वकरा रो जीवणूं, वांछे नहीं लिगार ।
तिण ऊपर दृष्टान्त ते, सांभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
साहुकार रे दोय सुत, एक कपूत अनधार ।
अण करणी जाणां तणुं, माथै करे अपार ॥ ७ ॥

दूजो सुन जग दीपनो, यश संसार मझार।
करड़ी जागांरो करज, ऊतारै तिण वार ॥ ८ ॥
कहो केहने वरजे पिता, दोय पुत्र में देख।
वरजे कर्ज करे तसु, के ऋण मेटन पेख ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३२ मी ॥

(समता रस विरला ए देशी)

कर्ज माथे सुन अधिक करंतो। बार बार पिता बरजंतोरे, समझू नर बिरला ॥ करड़ी जागां रा माथे कांय कीजे, प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे ॥ सम ॥ १ ॥ अधिक माथारो जे कर्ज उतारे, जनक तास नहिं वारे रे। सम० पिता समान साधुजी पिछाणो, बकरो रजपूत वे सुत माणो रे ॥ सम० ॥ २ ॥ कर्म्म रूप ऋण माथे कुण करतो, आगला कर्म्म कुण अपहरतो रे ॥ सम० ॥ कर्म्म ऋण रजपूत माथे करेछै, बकरा संचित कर्म्म भोगवे छै रे ॥ ३ ॥ साधु रजपूत ने वर्जे सुहाय, कर्म्म करज करे कांय रे ॥ सम० ॥ कर्म्म बंध्या घणा गोता खासो, परभव में दुख पासी रे ॥ ४ ॥ सखर पणे तिण ने समझायो, तिणरो तिरणो वंछ्यो मुनिरायो रे ॥ सम० ॥ बकरा जीवावण नहीं दे उपदेश, रूड़ी ओलख बुद्धिवंत रेस रे ॥ ५ ॥ इमहिज कसाई सौ बकरा हणंतो, शुद्ध उपदेश दे तारयो संतो रे ॥ सम० ॥ कसाई गुण

आम साधुरा करन्तो, मुझ तारक आप महंतो रे ॥६॥ वकरा हर्ष्या जीव बचिया विशेष, यांरे काज न दियो उपदेश रे सम० । ज्ञानादि चिऊं कसाई घट आया पिण वकरा तो मूल न पाया रे ॥ ७ ॥ कहे कसाई दोनूं कर जोड़, सौ वकरा करै शोर रे ॥ सम० ॥ कहो तो नीलो चारो थांने चराऊं, पछै काचो पाणि थांने पाऊं रे ॥८॥ आप कहो तो एवर में उछेरूं, कहो तो अमरिया करेरू रे सम० । आप कहो तो सूंपूं आपने आणी, पाइजो धोवण उन्हो पाणी रे ॥ ६ ॥ तुम सूको चारो निरजो वहुलेरो, एवर साधां रो उछेरो रे सम० । साधु कहे सूंस सखरा पालीजे, जावता सूंसांरी कीजै रे सम० ॥ १० ॥ सूंसांरी एम भलावण देवै, वकरां री मूल न वेवै रे सम० । उपदेश देवै जो वकरा बचावण, तो वकरां री देत भलावण रे ॥ ११ ॥ समझ्यो कसाई सखर शिव साई, इणरी मुनि ने दलाली आइ रे, सम० तेहिज धर्म्म साधु ने जोय । पिण वकरां रो धर्म्म न कोय रे ॥ १२ ॥ कसाई अज्ञानी रो ज्ञानी कहायो, पिण वकरा तो ज्ञान न पायो रे सम० । कसाई मिथ्याती रो समकती कहिये, शुद्ध तत्व वकरा न सद्दहिये रे ॥ १३ ॥ हिंसक रो दयावान हुवो कसाई,

दिल बकरां रे दया न आई रे। तिरियो कसाई बकरा नहीं तिरिया, दुर्गति सूं नहिं डरिया रे ॥१४॥ कसाई तिरियो ते धर्म्म बण काज। तारक महामुनि राज रे सम०। तिरण तारण कसाई रा तपासो, थारु हिया में बिमासो रे ॥ १५ ॥ तस्कर नो दूजो दृष्टन्त तेह, सांभलजो ससनेह रे सम०। किणही सेठजी नी हाटे किण बार, उतरिया अणगार रे सम० ॥ १६ ॥ तस्कर रात्रि समै तिणबार, खोलरा है आय किमाड़ रे सम०। तब मुनिवर कहै जागी ने ताम, कुण हो आया किण काम रे ॥ १७ ॥ कहै तस्कर म्हे तो चोर कहाया, इहां चोरी करण ने आया रे सम०। सहस्र रुपयां री थेली मेली सेठ, निडर लेजावसां नेठ रे ॥ १८ ॥ तब साधु उपदेश देवै तिण बार, कह्या चोरी रा फल दुःख कार रे स०। आगै नरक निगोदना दुःख अधिकाया, भिन्न २ भेद बताया रे ॥ १९ ॥ धन तो न्यातीला सह मिल खासी, पर भव दुःख तूं पासी रे सम०। रूड़ो उपदेश देई मुनिराया, त्याग चोरी ना कराया रे ॥२०॥ तस्कर कहै मुझ डुबता ने तार्‌यो, विषम कर्म्म सूं बार्‌यो रे सम०। थारु विविध गुण करत विख्यात, प्रगट थयो प्रभात रे ॥ २१ ॥ इतले दूकान

तणो धणी आयो, ज्ञान नहीं घट माह्यो रे सम० । पेढ़ी ने नमस्कार करि प्रसिद्धो, कांयक लटको साधू ने हो कीधो रे ॥ २२ ॥ तस्कर ने पूछा करी तिवार, कुण हो खोल्या किण दुवार रे सम० । तस्कर बोल्या म्हें चोर छां ताम, अबतो त्यांगे दीधो आम रे ॥ २३ ॥ हुण्डी बटाय ने रुपया हजार, थेलो मांहे मेहली थें तिवार रे सम० । सो म्हे सांझे देखता था सोय, आया लेवण अवलोय रे ॥ २४ ॥ साधां उपदेश देई समझाया, चोरी ना लखण छोड़ाया रे सम० । साधां रो भलो होय जो कारज सारया, तुरत डूबता ने तारया रे ॥ २५ ॥ मेसरी सुण ने हर्ष्यो मन माह्यो, पड़ियो साधांरे पायो रे सम० । आप म्हारी हाट भलांई उतरिया, सकल मनोरथ सरिया रे ॥ २६ ॥ थेलो म्हारी आप राखी थिर थापी, प्रत्यक्ष लेजावता चोर पापी रे सम० । हिवड़ा लेजावता रुपया हजार, निपट हुंतो निराधार रे ॥ २७ ॥ चार पुत्र मुझ चतुर विचारा, कर्म्म वश रहिता कुवारा रे सम० । सुत चारुंई परणाव सूं मार, ओ आप तणो उपगार रे ॥ २८ ॥ इम कहै मेसरी वयण अयागो, ऋषजी तणो तो न रागो रे सम० । धन राखण उपदेश म धार, तेतो तस्कर तारणहार

रे ॥ २९ ॥ कसाई समभयां बकरा कुशले कह्या जी; तस्कर समझयां धन रो धणी राजी रे सम० । कसाई चोर तारण ऋष कामी, धन बकरा राखण नहीं धामी रे ॥ ३० ॥ तीजो दृष्टन्त कहूं तंत सार, एक पुरुष लंपट अधिकार रे सम० । सो पुरुष परनारी नो सेवणहार, अति ही बंधाणी पीत अपार रे ॥३१॥ ते लंपट आयो मुनि तणे पाय, साधां दियो समझाय रे सम० । पर स्त्री नो पाप सुणी भय पायो, अधिक वैरागज आयो रे ॥ ३२ ॥ ते त्याग जाव जीव कीधा ते ठाम, गावै मुनि ना गुण ग्राम रे स० । आप मोने डूबता ने उबारयो, निकुच बिसन थी निवारयो रे ॥ ३३ ॥ शील आदरियो सुणयो तिण नार, उपनो द्वेष अपार रे सम० । उणने कहे म्हें धारयो इकतार धुरही थी थां पर धार रे ॥ ३४ ॥ काम औरां सूं नहीं मुझ कोय, इसड़ी धारी अवलोय रे सम० । कहतो म्हारो कह्यो मानले तास, म्हा सूं करो गृहवास रे ॥ ३५ ॥ कह्यो न मानो तो कूवै पड़ सूं, मोन कुमोते मरसूं रे सम० । जब ते कहे मोने मिलिया जिहाज, प्रत्यक्ष भव-दधि पाज रे ॥ ३६ ॥ त्यां परनारी नो पाप बतायो, म्हे त्याग किया मन लायो रे सम० । तिण सूं म्हारे थासूं मूल

न तार, करे अनेक प्रकार रे ॥ ३७ ॥ इम सुण स्त्री कुवै पड़ी आय, तिण रो पाप साधू नें न थाय रे सम० । समझयो कसाई बकरा बच्या सोय, तस्कर समझ्यां रह्यो धन जोय रे ॥ ३८ ॥ नर लंपट समझ्यां कूवै पड़ी नारो, चतुर हिया में विचारो रे सम० । तस्कर कसाई लंपट ने तारण, साधां उपदेश दियो सुधारण रे स० ॥ ३९ ॥ ए तीनूं तिरिया साधु तारणहार, त्यांरो धर्म्म साधां ने उदार रे स० । मुक्ति मारग यां तीनां रे बधाया, घणा जामण मरण मिटाया रे ॥४०॥ बकरा बच्या धणी रे धन रहियो, तिण रो धर्म्म साधु रे न कहियो रे स० । नार कुवे पड़ी तिण री न पापो, अदल बिचारो आपो रे ॥ ४१ ॥ केई अज्ञानी कहैं भूला भरमो, जीव धन रह्यो तिण रो हैं धर्म्मो रे स० । उणारो सरधा रे लेखे इम थापो, प्रत्यक्ष नार मुआरो है पापो रे ॥४२॥ नार मुआरो पाप दिल नाणै, जीव बचियां रो धर्म्म कांय जाणै रे स० । वले धन रह्या रो धर्म्म कांय धारो, बुद्धिवन्त न्याय विचारो रे ॥ ४३ ॥ भिक्खु स्वाम इम भेद बताया, असल न्याय ओलखाया रे स० । कसाई तस्कर लंपट केरो, भिक्खु दृष्टन्त दियो भलेरो रे ॥४४॥ ऐसा भिक्खु ऋष महा

अवतारी, त्यां श्रद्धा शोधी तंत सारी रे स०। ज्यां पुरुषांरी जे प्रतीत करसी, त्यां रो जीवतव जन्म सुधरसी रे ॥ ४५ ॥ ऐसा भिक्खु याद आवे मोय, हर्ष हिये अति होय रे स०। स्मरण आप तणो नित्य साधूं, भिक्खु पारश साचो म्हे लाधूं रे ॥४६॥ सुर गिर सांप्रत आप सधीरा, मोने मिलिया अमोलक हीरा रे स०। पंचम आरा में कियो प्रकाश, सखरी फैली है बास सुवास रे ॥ ४७ ॥ दोय तीसमी ढाले दृष्टन्त, बरणं बहु बिरतंत रे स०। स्वाम भिक्खु ओलखायो विशेष, तिण म्हें पिण आख्यो सु अशेष रे ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, जीव बच्या ते जाण।
दया कहीजे तेहने, जीवण दया पिछाण ॥ १ ॥
भिक्खु कहै कीड़ी भणी, कीड़ी जाणै कोय।
ज्ञान कहीजे तेहने, के कीड़ी ज्ञानज होय ॥ २ ॥
तब ते कहै कीड़ी भणी, जे कोय कीड़ी जाण।
ज्ञान कहीजे तेहने, पिण कीड़ी नहिं ज्ञान ॥ ३ ॥
वलि भिक्खु कहै कीड़ी भणी, कीड़ी सरधे कोय।
समकित कहीजे तेहने, के कीड़ी समकित होय ॥ ४ ॥
तब ते कहै कीड़ी भणी, कीड़ी सरधे तंत।
समगत ते सरधा सही, पिण कीड़ी नहिं समकीत ॥ ५ ॥
त्याग कीड़ी हणवा तणां, दया तेह दीपाय।

के कीड़ी रही तिका दया, भिक्खु पूछी वाय ॥ ६॥
तव ते कहै कीड़ी रही, तिका दया कहिवाय ।
खोटी सरधा थापवा, बोल्यो झूठ वणाय ॥ ७ ॥
भिक्खु कहै पवने करी, कीड़ो उड़गई ताहि ।
तुझ लेखे दया उड़ गई, निरमल निरखो न्याय ॥ ८ ॥
जद उ कहे विचारने, कीड़ी हणवा रा त्याग कियाह ।
दया तेहिज दीसै खरी, पिण कीड़ी रही न दयाह ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३३ मी ॥

(कर्म्म भुगत्यांईज छुटिये ए देशी)

वलता भिक्खु बोलिया, कीड़ी मारण रा पचखाण लाल रे । तेहिज दया साची कही, वारु सुणो इक वाण लालरे, जोयजो रे बुद्धि भिक्खु तणी ॥१॥ रूड़ी दया निज घट में रही, के कीड़ी पास कहाय लाल रे । तब ते कहे पोता कने, कीड़ी पास न कांय ला० ॥२॥ पूज कहै घट में दया, कीड़ी पै दया नहिं कांय ला० । किणरा जतन करणा कहो साचो जाब सुहाय ला० ॥ ३ ॥ करणा जतन दया तणा, के कीड़ी रा यत्न कराय ला० । उ कहै यत्न दया तणा, इम साच बोलो आयो ठाय ॥४॥ त्रिविध त्याग हणबा तणा, दया संवर रूप देख ला० । त्याग विना ही हणे नहीं, सम्बर निर्जरा संपेख ला० ॥ ५ ॥ इमज छकाय हणे नहीं, दया तेहिज दोपाय ला० ।

जगत हणे जीवां भणो, निज पोतारी दया न जाय ला० ॥ भारी बुद्धि भिक्खु तणी, सखरी सिद्धंत संभाल ला० । न्याय मिलाया निरमला, भांज्या भ्रम भयाल ला० ॥ ७ ॥ किणहिक इम पूछा करी, महा मोटो मुनिराय ला० । अति ही थाको उजाड़ में, चालण शक्ति न कांय ला० ॥ ८ ॥ सहजेई गाड़ो आंवतो, तिण गाडा ऊपर बैसाण ला० । गाम माहें आणयो सही, तेहने कांई थयो जाण ॥ ९ ॥ भिक्खु कहै गाड़ो नहीं पूंणिया आवत पेख ला० । गधै चढ़ाय आणयो गाम में, तिण में स्यूं थयो तुझ लेख ला० ॥ १० ॥ तब उ बोलयो तड़क ने, गधारी क्यूं करो बात ला० । स्वाम कहै साधु भणी, दोनूं अकल्प देखात ला० ॥ ११ ॥ गाडे बेसाणे आणयो गाम में, थे धर्म्म तणी करो थाप ला० । तो गधे वैसाणयां ही धर्म है, पाप छै तो दोयां में ही पाप ला० ॥१२॥ उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, निरमल चारित नीत ला० । सरधा शुद्ध शोधी सही, वारु स्वाम वदीत ला० ॥ १३ ॥ पाणी अणगल पावियां, केई पाखण्डी कहै पुन्य ला० । केयक मिश्र कहै तिहां, ते दोनूं ई सरधा जबून ला० ॥ १४ ॥ पुण्यवाला कहै पूजने, सुणो भीखण जी बात ला० । महा खोटी

सरधा मिश्र री, किइंई मेल न खात ला० ॥ १५ ॥ भिक्खु स्वामी इम भणै, किणरी फूटी एक ला० । किणरी दोय फूटी सही, वारु करलो विवेक ॥ १६ ॥ मिश्र कहै छै मानवी, त्यांरी फूटी एक ला० । पुन परूपे पाधरो, दोनू फूटी देख ॥ १७ ॥ जाव दियो इम जुगत सूं, अहो अहो बुद्धि अनूप ला० । अहो अहो खिस्या आपरी, चित्त चरचा हद चूंप ला० ॥ १८ ॥ तुम चिन्तामणि सुरतरु, पंचमे कियो प्रकाश ला० । आशा पूरण आप छो, वारु तुम्ह विसवास ला० ॥ १९ ॥ तंत ढाल तेतीसमी, भिक्खु गुण भंडार । अंतर्य्यामी म्हांहरा सुख संपति दातार ला० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

पचावने वर्ष पूज जी, शहर कांकरोली सार ।
सेहलोतांरी पोल में, ऊतरिया तिण वार ॥ १ ॥
प्रत्यक्ष बारी पोलरी, जड़ी हुंती जिण वार ।
ऋष भिक्खु रहितां थकां, एक दिवस अवधार ॥ २ ॥
वारी खोली बारणें, दिशा जायवा देख ।
निसरिया भिक्खु निशा, पूछै हेम संपेख ॥ ३ ॥
स्वामी बारी खोलण तणो, नहीं काईं अटकाव ।
तब भिक्खु बोल्या तुरत, प्रत्यक्ष ते प्रस्ताव ॥ ४ ॥
पालो शहर तणो प्रत्यक्ष, नाम चौथ जी न्हाल ।
दर्शण करवा आवियो, ए देखै इण काल ॥ ५ ॥

अति शंकिलो यह छै, पिण इण बातरी ताम ।
शंका इणरै ना पड़ी, कैम पड़ी तुझ आम ॥ ६ ॥
हेम कहै म्हारै हियै, कांई शंका रो काम ।
पूछण रूप म्है पूछियो, नहिं शंकारो नाम ॥ ७ ॥
पूज कहै पूछे इसी, इणरो नहिं अटकाव ।
अटकाव हुवै जो पहनो, म्है खोलां किण न्याव ॥ ८ ॥
हेम सुणी जाण्यो हियै, किंवाड़ियो खोलाय ।
आहार लियां में दोष नहीं, खोल्यां दोष किम थाय ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३४ वीं ॥

(सुण जो नरनाथ ए देशी)

स्वामि भिक्खुरा दृष्टन्त सुहाया । भव्य उत्तम जीवां मन भाया, सुणजो चित्त शांति भिक्खुना भारी दृष्टन्त ॥ १ ॥ बचन सुधा सागरै बारु, शुद्ध भविजन तारण सारु । सुणजो सुखदाया, स्वामीना दृष्टन्त सुहाया ॥ २ ॥ असल न्याय भिन्न २ ओलखाया, प्रभु पंथ भिक्खु हद पाया ॥ ३ ॥ भेषधारी सरधा हीन भयाला, दियो दृष्टन्त पूज दयाला ॥ ४ ॥ समकत हीण जे अधिक असार, यांरो असल नहीं आचार ॥ ५ ॥ थोथा चणारी भखारी थी एक, साबतो चणो मूल म पेख ॥ ६ ॥ ऊंदरा रड़बड़ कीधी आखी रात, एक कण पिण नायो हाथ ॥७॥ सांग धार्‌यां माहें समकत नाहिं, पड़े ऊंदर सम नर

पाय ॥ ८ ॥ कहो साध श्रावक त्यांने केम कहाय, ए तो दोनूं सरीखा देखाय ॥ ९ ॥ समकित रहित दोनूंई तंत, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टन्त ॥ १० ॥ कोयलां री तो राब अतिकाली, काला बासण में रांधी कराली ॥ ११ ॥ अमावस नी रात्रि आंधा जीमण वाला, परुसण वालाई आंधा पयाला ॥ १२ ॥ जीमतां बोलै खुंखारा करता, कालो कूंखा टालजो मतिवंता ॥ १३ ॥ कहै खबरदार होय जीमजो सोय, रखे आय जायला कालो कोय ॥ १४ ॥ मूढ़ इतरो नहीं जाणै समेलो, कालोहिज कालो हुवो भेलो ॥ १५ ॥ ज्यूं सरधा आचार रो नहीं ठिकाणु, सगलो मिलियो सरीखो घाण ॥ १६ ॥ साध श्रावक पणारो अंश नहीं सारो, संवर लेखे दोयां रे अंधारो ॥ १७॥ न्याय री बात नहीं शुद्ध नीत, वले बोले वचन विपरीत ॥ १८ ॥ बस्त्र पात्रा अधिक राखे विशेष, आधा कर्म्मादि दोष अनेक ॥ १९ ॥ वले कहै भीखणजी काढ़ो इण रो तार, शुद्ध स्वाम बोल्या सुखकार ॥२०॥ तब पूज कहै काढ़े तार कांई, थाने डांडा ही सूझे नाहीं ॥ २१ ॥ सबल आधाकर्मी आदि न सूझै, कहो नान्हा दोष किम बूझे ॥ २२ ॥ दोषरी थाप थांरे दिन रेणो, कठिण काम सरधारो तो

कह्यो ।। २३ ।। बायरे वंग घरटी मांड़ी बाई, पीसती जावै ज्यूं उव्यो जाई ॥ २४ ॥ आखो रात्री पीस ढाकणी में उसारयो, एहवो दृष्टन्त भिक्खु उतारयो ॥ २५ ज्यूं दोष लगाय ने डंड न लेवै, कुमति दोष री थाप करेवै ॥ २६ ॥ क्यांरे क्यांरे क्यूंही नहीं रहे कांई, देश सर्व दृष्टन्त देखाई ।। २७ ॥ ऐसा भिक्खु ऋष आप उजागर, शरणागत महा बुद्धि सागर ।। २८ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अमासी, धुर जिन आज्ञा परमति धामी ॥ २६ ॥ जिन आगन्या माहें धर्म्म जतायो, आज्ञा बारै अशुभ सहु आयो ॥ ३० ॥ सगला न्याय मेल्या सूत्र देख, वाह वाह भिक्खु बुद्धि विशेष ॥ ३१ ॥ याद आयां तन मन हुलसाय, रस कुंपिका तूं ऋषराय ॥ ३२ ॥ स्यूं उपमा तुझ ने कहूं सार, अजिण जिण सरिसा उद्धार ॥३३॥ उववाई में उपम एह अनूप, सखर थिवरांने दीधी स द्रुप ।। ३४ ॥ आदिनाथ ज्यूं काढी धर्म्म आदि, सखरी उपजाई आप समाधि ॥ ३५ ॥ बारु शरण आपरो सुविशाल, म्हारे तूं हिज दीन दयाल ।।३६॥ स्वाम भिक्खु गुण गावत समरियो, म्हारो हिवड़ो हरष सूं भरियो। चौतीसमी ढाले भिक्खु चित्त चाह्या, बारु परमानन्द बरताया ।। ३७ ।।

॥ दोहा ॥

काल वादि करलो थणो, नहिं समकित शुद्ध नींव ।
सिद्धां में पावै नहीं, आखै तास अजीव ॥ १ ॥
बखतरामजी नाम तसु, पुर माहें पहिछाण ।
कुकला कुबुद्धिज केलवी, विहार करि गया जाण ॥ २ ॥
इतले भिक्खु आविया, चरचा करत पिछाण ।
मेघ भाट मुनि ने कहै, वगताजी री वाण ॥ ३ ॥
कालवादि इसड़ी कहै, अति घन वात अतीव ।
भीखण जी गाथा मझे, कहै एकलड़ो जीव ॥ ४ ॥

ते गाथा ।

एकलड़ो जीव खासी गोता, जद आड़ा नहिं आवै बेटा पोता ।
नरक मांहें खातां मारो, पायो मनुष जमारो मत हारो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

इण विध भीखणजी कहै, गाथा में इक जीव ।
वलि नव तत्व में पांच कहै, विरुई वात अतीव ॥ ५ ॥
जो पांच जीव नव तत्व में, तो कहिणो पांचलड़ो जीव ।
एकलड़ो ते किम कहै, इम पूछा तिण कीव ॥ ७ ॥
पूज कहै तस पूछणो, सिद्धां में सुखकार ।
कहो आतमा केतली, तव कालवादि कहै च्यार ॥ ८ ॥
फिर त्यांने इम पूछणो, ते च्यारु जीव के नाहिं ।
जब कहै च्यारु जीव है, चार जीव तस न्याय ॥ ९ ॥
चौलड़ो जीव त्यांहि कह्यो, मुझ लड़ अधिको एक ।
सांभल ने ते समझियो, मेघो भाट विशेष ॥ १० ॥

॥ ढाल ३५ मी ॥

(राजा दशरथ दीपता रे ए देशी)

भीक्खण जी पधारिया रे, देश ढूंढार दीपायो रे, अति घणा श्रावगी आविया रे ॥ चरचा करण चित्त चाह्यो रे, भारी बुद्धि भिक्खु तणी रे ॥ १ ॥ स्वाम भणी कहै श्रावगी रे, नग्न मुद्रा मुनि नागा रे। तार मात्र वस्त्र न राखणो रे, राखै ते परीषह थी भागा रे, तंत दृष्टन्त भिक्खु तणा रे॥ २ ॥ वस्त्र राखो शीत टालवा रे, तो भागा शीत परीषह थी ताह्यो रे। तिण सूं वस्त्र नहिं राखणो रे, जद पूज बतावै न्यायो रे ॥ ३ ॥ स्वाम कहै कितरा सही रे, परीषह भेद प्रकाशो रे। ते कहै परीषह बावीस छै रे बलि पूछै पूज विमासो रे ॥४॥ कहो प्रथम परीषहो कैसो रे, ते कहे क्षुध्या रो ताह्यो रे। पूज कहै थांरा मुनि रे, आहार करै के नाह्यो रे ॥ ५ ॥ श्रावगी कहै करे सहीरे, इकटंक आहार ते जागां रे। पूज कहै तुझ लेखै मुनि रे, प्रथम परीषह थी भागा रे ॥ ६ ॥ ते कहे क्षुध्या लागां छतां रे, आहार करै अणगारो रे। स्वाम कहे सी लागां सही रे, वस्त्र म्हे राखां बिचारो रे ॥ ७ ॥ पूज बलि पूछा करी रे, प्रगट तुझ मुनि पहिछाणी रे। पाणी पीवै के पीवै नहीं रे, उत्तर

आपो सुजाणी रे ॥ ८ ॥ श्रावगी कहै पीवै सहो रे, इकटंक उदक ते जागां रे। स्वाम कहे तुझ लेखै तिके रे दूजा परीषाह थी भागा रे ॥ ९ ॥ ते कहै तृषा लागां छतां रे, उदक पिये अणगारो रे। स्वाम कहे सी टालिवा रे, वस्त्र ओढां म्हे विचारो रे ॥१०॥ भूख लागां अन्न भोगवै रे, प्यास लागां पिये पाणी रे। इम निर्दोषण आचर्‌यां रे, न भागे परीषह थी नाणी रे ॥ ११ ॥ तिम शीत मंसादिक टालवा रे, मूर्च्छा रहित मुनिरायो रे वस्त्र मानोपेत वावरैरे, ते परीषह थी भागै किण न्यायो रे ॥ १२ ॥ इत्यादिक उत्पात्त सूं रे, उत्तर दीधा अमामो रे। स्वाम गुणा रा सागरु रे, ऊंडी बुद्धि अभिरामो रे ॥ १३ ॥ एक दिवस बहु आविया रे श्रावगी स्वामी पासो रे। कहै वस्त्र न राखो तो तुम तणी रे, वारु करणी विमासो रे ॥ १४ ॥ स्वाम कहै श्वेताम्बर शास्त्र थी रे, घर छोड़ थया अणगारो रे। तिण माहें तीन पछेवड़ी रे, चोल पटादि कह्या सुविचारो रे ॥१५॥ तिण कारण राखां तिके रे, आसता तुझ शास्त्र नो आयां रे। नग्न होय जासा बस्त्र न राखने रे, प्रतीत दिगम्बरनी पायां रे ॥ १६ ॥ जाब दिया अति जुगत सूं रे, बुद्धिवंत हर्षे विशेषो रे। न्याय नीत थांरे

निरमली रे, पक्ष रहित संपेखो रे ॥ १७ ॥ वाह वाह भिक्खु मुनिवरु रे, अन्तर्य्यामी आपो रे। दीपक तूं इण काल में रे, जपूं तुमारो जापो रे ॥१८ ॥ पैंतीसमी ढाल परवरी रे, चरचा दिगम्बर नी छाणी रे। भिक्खु भजन सूं भय मिटै रे, जय जश सुख हद जाणी रे ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

दया धर्म्म अति दीपतो, श्री जिन आण सहीत।
भिक्खु स्वाम भली परे, पवर धस्रो अति पीत ॥ १ ॥
केई हिंस्या धर्म्मो कहै, दया दया पुकारो कांय।
दया रांड लोटे पड़ी, ऊकरड़ी रे मांहिं ॥ २ ॥
भिक्खु ऋष भाखे भली, दया मात दीपाय।
उत्तराध्ययन चौवीस में, कहि आठ प्रवचन मांय ॥ ३ ॥
किण सेठ आउ पूरो कियो, स्त्री रही लारै सोय।
सपूत सुत है ते सही, यत्न करे ते जोय ॥ ४ ॥
कपूत है ते मात ने, वदै वचन विकराल।
रंडकार नी गाल दे, बोले आल पंपाल ॥ ५ ॥
धणी दया ना दीपता, महावीर महाराज।
ते तो मोख सिधाविया, कीधा आत्तम काज ॥ ६ ॥
श्रावक साधां सपूत ते, दया मात इम जाण।
यत्न करै अति जुगत सूं, विरुई न वदै वाण ॥ ७ ॥
प्रगट्या कपूत थां जिसा, बोलावो कहि रांड।
दया मात ने गाल दे, ते भव २ होवे भांड ॥ ८ ॥
जिम मत एम जमावता, पाखंड मत परिहार।
स्वाम रवि जिहां संचरया, तिमर हरण इकतार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३६ मी ॥

(जोगीड़ो कपट करेछै ए देशी)

किणहिक भिक्खुने कह्यो रे। थे जावो जिण गाम रे मांहि, धसका पड़े लोकां तणे, तिण रो कांई कारण कहिवाय ॥ भिक्खु भवतारक भारी रे, आप प्रगट्या अवतारी रे। उत्पत्तिया बुद्धि अधिकारी रे, दृष्टान्त दिया सुविचारी रे ॥ १ ॥ स्वाम कहै तुम्हे सांमलो रे गारडु आवै गाम। डाकणियां ने काढ़ण भणी, जद कहो डरै कुण ताम ॥ २ ॥ प्रभाते नीला कांटा मभ्के रे, बालस्यां डाकणियां ने बोलाय। तो धसको पड़े डाकणियां तणै, तथा न्यातीलांरे पड़ै ताहि ॥ ३ ॥ दूजा तो लोक राजी हुवै रे, त्यांरे तो चिन्त न काय। जाणै उपद्रव्य शहर तणो मिटै, तिण सूं और तो हर्षित थाय ॥ ४ ॥ ज्यूं गाम में साध आयां छतां रे, भेषधारयां रे धसका पडंत। के त्यांरा श्रावकां रे धसका पड़ै, भारी कर्म्मा तो इम भिड़कन्त ॥ ५ ॥ बारु सरधा आचार बताय ने रे, देशी म्हानें ओलखाय। त्यांरे धसका पड़ै तिण कारणै, हलुकर्मी तो मन हरषाय ॥ ६ ॥ उत्तम मन इम चिंतवै रे, सुणसां साधांरा बखाण। दान सुपात्रे देई करी, करस्यां आतम तणा किलयाण ॥ ७ ॥

कुगुरांरा पखपाती भणी रे, संत मुनि न सुहाय। दृष्टन्त स्वाम दियो इसो। ते तो सांभलजो सुख-दाय ॥ ८ ॥ जुरवालो गयो जीमवा रे, जीमणवार में जाण। पकवान तो कड़वा घणा, बद् बद् कहै लोकां ने वाण ॥ ६ ॥ लोक कहै लागै घणा रे, प्रगट मिठा पकवान। तुझ शरीर में ताव है, जिण सूं कड़ुवा लागै छै जान ॥ १० ॥ ज्यूं मिथ्यात रोग जाड़ो हुवै रे, संत तास न सुहाय। हलुकर्म्मी हिये हर्षंता, चित्त में मुनि दर्शण चाहि ॥ ११ ॥ भूख मरता रोटी वासते रे, सांग साधू नो धारंत। त्यांने कहै चारित चोखो पालजो, जद् स्वाम दिया दृष्टन्त ॥ १२ ॥ बलवन्त बाले बांधने रे, तिणने कहै सिर नाम। सती माता तेजरा तोडजे, ते कांई तोड़े तेजरा ताम ॥ १३ ॥ ज्यूं भेष पहिरे रोटी कारणे रे, तेहने कहो चोखो चारित्र पाल। ते कठिण चारित्र पाले किण विधे, दुक्कर कह्यो है दीन दयाल ॥ १४ ॥ चोखा खोटा गुरु उपरै रे, दियो नावा नो दृष्टन्त। काठ की नाव साजी कही, एक फूटी नावा छिद्रान्त ॥ १५ ॥ तीजी नाव पत्थर तणी रे, उपनय हिये अवधार। शुद्ध संत साजी नाव सारिखा, तिके आप तिरे पर तार ॥ १६ ॥ सांगधारी फूटी नावा सारिखा रे,

आप डुबें औरां ने डबोय । पत्थर नावा जिसा कह्या पाखंडी, जे तीन सौ तेसठ जोय ॥ १७ ॥ उत्तम तास न आदरै रे, धार्या हुवै तो छोड़णा सुलभ । सांगधारी फूटी नावा सारिखा, त्यांने छोड़णा घणा दुर्ल्लभ ॥ १८ ॥ इम भिक्खु ओलखाविया रे, पाखण्डियांने पिछाण । सूं बुद्धि कहिये स्वामनी बाग किहां लग करूं बखांण ॥ १९ ॥ ऊंड़ी तुझ आलोचना रे, तीरथ वच्छल ताम । शासण नायक स्वाम ने, करूं बारम्बार सलाम ॥ २० ॥ तंत ढाल षट तीसमी रे, दाख्या स्वाम दृष्टन्त । भिक्खु भजन थी भय मिटै, अरु जय जश सुख उपजंत ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, टोला वाला ताहि ।
शीत उष्ण अति कष्ट सहै, कठिण लोच कराय ॥ १ ॥
तप छठ अठमादिक तपे, सखरी करणी सोय ।
यूंही जासी यां तणी, एहना फल अवलोय ॥ २ ॥
स्वाम कहै इक सेठ रे, पड़्यो देयालो पेख ।
तुरत लाख रुपयां तणो, बिगड़ी बात विशेष ॥ ३ ॥
पछै एक पइसा तणो, आण्यो तेल लिवार ।
पइसो तसु दीधो परहो, तो पइसा रो साहुकार ॥ ४ ॥
रुपया रा गहुं आणने, रुपयो पाछो दीध ।
तो साहुकार रुपया तणो, प्रत्यक्ष ते प्रसिद्ध ॥ ५ ॥

इम पइसा रुपया तणो, साहुकार अवधार।
पिण देवालो लाख नो, तेह नो नहीं साहुकार ॥ ६ ॥
ज्यू पंच महाव्रत पचखने, आधा कर्म्मी आदि।
थाप निरन्तर दोषनी, मेट दीधी मर्य्याद ॥ ७ ॥
ओ देवालो अति घणो, लोच तपादिक कष्ट।
तेह थी किण विध उतरैं, साध पणारो भिष्ट ॥ ८ ॥
मास खमणादिक पचखने, शुद्ध पाल्यां तसु साहुकार।
पिण महाव्रत भाग्यां तेहनो, साहुकार मत धार ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३७ वीं ॥

(विछिया नी ए देशी)

किणहिक स्वाम भणी कह्यो। सांगधारयां रे साधू रो सांगरे, उन्हो पाणी धोवण ऐ पिण आचरै॥ मान मूकी रोटी खावै मांग रे, तुम्हें सुणज्यो दृष्टन्त स्वामी तणा ॥ १ ॥ वर्षो वर्ष लोच करावता, शीत तापादि सहे साक्षात रे। विहार नव कलपी विचरता तो ए क्यूं नहीं साध कहात रे॥ २ ॥ स्वाम कहै तुम्हें सांभलो, थिर चारित्र इम किम थाय रे। जेहवी बणी बणाई ब्राह्मणी, तिणरा साथी ऐ पिण कहिवाय रे ॥ ३ ॥ कुण बणी बणाई ब्राह्मणी, तब स्वाम कहे सुविशेष रे। मेरां रो इक गांम घाटा मझे, उठे उत्तम घर नहीं एक रे ॥ ४ ॥ महाजन आवै सो दुख पावै घणा, जब कह्यो मेरा ने जाम रे। अठै

उत्तम घर नहीं एक ही, तिण सूं दुख पावां छां ताम रे ॥ ५ ॥ घणी लागत देवांछां थां भणी, उत्तम घर विण इहां अवधार रे। पाणी रोटी तणी अव खाई पड़ै, शुद्ध राखो उत्तम घर सार रे ॥ ६ ॥ जद मेरां शहर माहें जाय नें, महाजना ने कह्यो मन ल्याय रे, । उत्तम वसो म्हांरा गाम आयने तिणरो ऊपर राखसा तायरे ॥ ७ ॥ इम कह्यो पिण कोई आयो नहीं, एक ढेढांरो गुरु मुओ आम रे। तिण री स्त्री गुरुड़ी तदा, तिण नें मेरां आणी तिण ठाम रे ॥ ८ ॥ बणाई मेरां तिण ने ब्राह्मणी, ब्राह्मणी जिसा वस्त्र पहराय रे। जागां कराय धवल राखी जिहां, तुलसी रो थाणो रोप्यो ताहि रे ॥ ९ ॥ दोय रुपयां रा गेहुं आणे दिया, अधेलीरा मूंग दिया आण रे। एक रुपया तणो घृत आपियो, वदै मेरा तेहने इम वाण रे ॥ १० ॥ पइसा लेई महाजन रा दासां थकी, आवै ज्यांने रोटी कर आप रे। वणी पूछ्यां बतावजे ब्राह्मणी, थिर जात फलाणी थाप रे ॥ ११ ॥ जाता आता महाजन आवै जिके, पूछे पर उत्तम पहिछाण रे। ब्राह्मणी रो घर मेरा बतावता, इम काल कितोयक जाण रे ॥ १२ ॥ इतरे चार व्यापारी आविया, घणा कोसां रा

थाका ते गाम रें। आय पूछ्यो मेरा ने इण तरह उत्तम घर बतावो आम रे ॥ १३ ॥ तब मेरा कहै जावो तुम्हे, तिण ब्राह्मणीरे घर तास रे। जद आया व्यापारी चारूं जणा, प्रगट वचन कहे तिण पास रे ॥ १४ ॥ बाई रोटियां कर रूड़ी रीत सूं, झट घाल थाका आया जाण रे। जद इण गोहां री रोट्यां जाडी करी, सुरहो घृत घाल्यो सुविहाण रे ॥ १५ ॥ कीधी दाल तिण में घाली काचरां, जीमवा लागा चारूंई जाण रे। करड़ी भूख रोट्यां पिण करकड़ी, वणिक जीमता करै बखाण रे ॥ १६ ॥ रांधण देखी फलाणा गामरी, अमकड़िया नगर नी अवलोय रे। रांधणा देखी बड़ा बड़ा शहर नी, इसड़ी चतुराई नहिं देखी कोय रे ॥ १७ ॥ कहै देखो रे दाल किसी करी, अति चोखो है स्वाद अत्यन्त रे। माहें काचरियां किसी स्वाद है, घणी करै प्रशंसा जीमंत रे ॥ १८ ॥ जद आ बोली बीरां बात सांभलो तीखण मिली हूंती ताम रे। खबर पड़ती काचरियां रे स्वादरी, पिण ते मिली नहिं अभिराम रे ॥ १९ ॥ जद यां पूछ्यो तीखण कहै केहने, तब आ कहै तीखण छूरी ताम रे। काचरियां बनावा कारणे, छूरी मिली नहीं अभिराम रे ॥ २० ॥ तब

यां पूछ्यो छूरी तो ने ना मिली, तो किण सूं वनारी तेह रे। आ कहे दातां सूं वनार २ ने, इण दाल मांहें न्हाखी एह रे ॥ २१ ॥ तव ये वोल्या तड़कने हे पापणी, म्हाने भिष्ट किया ते जिमाय रे। इम कहिने लागा थाली पटकवा, तव आ वोली उतावली ताय रे ॥ २२ ॥ वीरां थाली भांगजो मती, अमकड़िया डूंमरी आणी मांग रे। जद ए वोल्या हे पापणी ! तूं कुण जातरी कुण तुझ सांग रे ॥ २३ ॥ जद आ वोली वीरां वात सांभलो, वणी वणाई ब्राह्मणी छूं ताहि रे। असल जातरी तो गुरुड़ी अछूं, मेरा ब्राह्मणो दीधो वणाय रे ॥२४॥ धुर सूं वात सारी कही मांड़ने, सांभलने च्यारूंई पछतात रे भिक्खु कहै साथी ब्राह्मो तणा, सांगधारी सर्व साक्षात रे ॥ २५ ॥ उन्हो पाणी धोवण नित्य आचरै, पिण समकित चारित्र नहीं काय रे। तिण सूं वणी वणाई ब्राह्मणी तिण रा साथी कह्या इण न्याय रे ॥ २६ ॥ दृष्टन्त स्वाम इसो दियो, शुद्ध हेतु, मिलाया सार रे। भारीकर्म्मा सुण द्वेष माहें भरै, चित्त पामै उत्तम चिमत्कार रे ॥ २७ ॥ स्वाम सावद्य निर्वद्य शोधिया, व्रत अव्रत जूआ बताय रे। आज्ञा अण आगन्या ओलखाय ने, दीधी दान दया दीपाय

रे ॥ २८ ॥ भिक्खु स्वाम प्रगटिया भरत में, आप कीधो अधिक उद्योत रे । ऐमो उपगारी कुण इण काल में, जिन ज्यूं घण घट घालो जोत रे ॥ २९ ॥ इसा उपगारी गुण आगला, त्यांरा दृष्टन्त सांभल तंत रे । हलुकर्म्मी हरष हिवड़े धरै, बहुलकर्म्मी रो मुंह विगड़ंत रे ॥ ३० ॥ तंत ढाल कही सात तीसमी, स्वामी मेल्या है न्याय साक्षात रे । रखे शंका कंखा भ्रम राख ने, मत पडिवजजो मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, पाखंडी पहिछाण ।
सूत्र सार जिन वच सरस, वाचे सखर बखाण ॥ १ ॥
स्वाम कहै तुम्हे सांभलो, वाचे सूत्र वखाण ।
जीव बचायां पुण्य मिश्र, छेहड़े इम करै छाण ॥ २ ॥
जिम थायां राती जगे, संसार लेखै जान ।
गीत भला भला गावती, तीखे मन कर तान ॥ ३ ॥
गीतां छेहड़े गावती, मोलो मारू मन्द ।
ज्यूं प्रथम सूत्र प्रगमायने, छेहड़े-सावद्य फन्द ॥ ४ ॥
दोपावे सावद्य दया, दाखे सावद्य दान ।
मोला मारूनीं परे, सर्व विगाड़े तान ॥ ५ ॥
किणहिक भिक्खु ने कह्यो, बुद्धिहीन इक बाल ।
भाठा सूं कीड्यां भणी, कचरतो तिणकाल ॥ ६ ॥
उणरो पथर ले उरहो, खोसी करी कषाय ।
कहो तिणने का सूं थयो, जद स्वाम कहै सुण वाय ॥७॥

तसु पासा थी खोसले, तसु कर में स्यूं आत।
तब ओ वोहर्यो उण तणे, भाठो आयो हाथ ॥ ८ ॥
भाखे पूज विचार लो, धर्म जिन आज्ञा मांहि।
जेवरी को जिण ना कह्यो, इम सर्व वस्तु गिणाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३८ मी ॥

(सत्य कोई मत० ए देशी)

किणहिक भिक्खु ने कह्यो। टोला वाला ताह्यो रे, आप साध न सरधो यां भणी ॥ तो साध कहो किण न्यायो रे, तंत दृष्टन्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥ ए साध अमकड़िया टोला तणा, फलाणा टोलारा साधो रे। इम साध कही बैण उचर्यां बच सत्यके मृषाबादो रे ॥ २ ॥ स्वाम कहे किणहि शहर में, क्रियावर किणरे थायो रे। नेहता फेरै नगर में, वदै इसी पर वायो रे ॥ ३ ॥ अमकड़िया रे नेहतो अछै, खेमा साह रा घर रो जाणा रे अमकड़ियां रे नेहतो अछे खेमा साहरा घर रो पिछाणा रे ॥४॥ देवालो त्यां काढ दियो, तो पिण बाजै साहरे। खेमो देवालयो बाजे नहीं, द्रव्य निक्षेपो देखायो रे ॥ ५ ॥ ज्यूं संजम नहीं पाले जिके, नाम धरावे साधो रे। द्रव्य निक्षेपे साधू कह्यां, मूल न मृषावादो रे ॥ ६ ॥ लकड़ी रा घोड़ा भणी, अश्व कह्यां दोष नाह्यो रे। नाम असद्भाव थापना, कहिण मात्र कहिवायो रे ॥

७ ॥ किणहि भिक्खु ने कह्यो, टोला बाला में ताह्यो रे। कहो साध यामें कवण छै, असाधु कुण यां मांह्यो रे ॥ ८ ॥ स्वाम कहै इक शहर में, आख आख म पूछै वायो रे। नागा कितरा इण नगर में, कितरा ढकिया कहिवायो रे ॥ ६ ॥ वैद विचक्षण इम वदै, औषध तुझ आंख्यां माह्यों रे। घाल सूझतो तो भणी, हूं कर देसूं ताह्यो रे ॥ १० ॥ नागा ढकिया तूं निरखले, वैद बोल्यो इम वायो रे। स्वाम कहै साध असाधरी, ओलखणा देस्यां बतायो रे ॥ ११ ॥ पछै साध असाध तूं परखले, कहो नाम लेई कोयो रे। कजियो पहिली तिण सूं करै, जिणसूं कहणो अवसर जोयोरे ॥ १२ ॥ किणहिक वलि इम पूछियो, कुण यांमें साध असाधोरे। स्वाम कहै तुम्हें सांभलो, विरुओ तज विषवादो रे ॥ १३ ॥ संजम लेई पालै सही ते साधु सुख दायो रे। महाव्रत आदरै मूकदे, असाधु ते असुहायो रे ॥ १४ ॥ दृष्टन्त भिक्खु दियो इसो, किणहिक पूछ्यो किवारो रे। साहुकार कुण शहर में, कुण है देवालो बिकारो रे ॥ १५ ॥ लेई पाछो देवै लोक में, साहुकार कहै सोयो रे। देणो न देवै देवालियो झगड़ा उलटा मांड़ै जोयो रे ॥ १६ ॥

ज्यूं संजम लेई पाल्यां साध है, दोष थाप्यां नहीं साधो रे। अथवा डंड न आदरै, वरतानें देवै बिराधो रे ॥ १७ ॥ भिक्खु इसा न्याय भाषिया, स्वाम बिना कुण शोधै रे। पूज गुणानो पिंजरो, पूज भविक प्रतिबोधै रे ॥ १८ ॥ भिक्खु है दीपक भरत मे, भिक्खु भलो भव तारण रे। साहेब भिक्खु साचलो, भिक्खु है बिघ्न विडारण रे ॥ १९ ॥ याद आयां हियो उलसे, अन्तर्यामी आपो रे। स्मरण सूं सुख संपजे थिर चित्त म्हे करी थापो रे ॥ २० ॥ स्वाम जिसो इण भरत में दीन दयाल न दूजो रे। भविक जीवां तुम्हे भाव सूं, पवर भिक्खु गुण पूजो रे ॥ २१ ॥ तन मन सेती तुझ भणी, हृदय उलख हरष्यो रे। आशा पूरण आप हो, म्हें तो प्रत्यक्ष भिक्खु परख्यो रे ॥ २२ ॥ आखी ढाल अड़तीसमी समस्यो है भिक्खु सनूरो रे। जय जश सुख सम्पति मिलै, दालिद्र दुःख गया दूरो रे ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

उपयोगरी खामी ऊपरे, दियो स्वाम दृष्टन्त।
निरमल नीकी नीत सूं, शुद्ध जाणो तसु तंत ॥ १ ॥
कुणको देखी गुरु कह्यो, ए कुणको शिष्य जोय।
ऊपर पग दीजो मति, तहत कियो शिष्य सोय ॥ २ ॥

थोडी बार थी शिष्य तिको, फिरतो फिरतो आय ।
पग दीधो तिण ऊपरे, तब गुरु बोल्या ताहि ॥ ३ ॥
तुझ म्हें वरज्यो थो तदा, मत दीजो पग साक्षात ।
शिष्य कहै उपयोग शुद्ध, चूको स्वामी नाथ ॥ ४ ॥
बीजी बेलां शिष्य बलि, फिरतां २ फेर ।
पग दीधो कण ऊपरे, गुरु निषेध्यो घेर ॥ ५ ॥
आगे तुझ बरज्यो हुंतो, कहै शिष्य कर जोड़ ।
महाराज उपयोग मुझ, चूक गयो इण ठोड़ ॥ ६ ॥
गुरु कहै अबके चूकियो, तो काल बिगैरा त्याग ।
फिरता फिरता शिष्य फिरी, बलि चूक्यो ते जाग ॥ ७ ॥
इम वार बार स्वामी पड़ी, ते विगय टालण थी ताहि ।
बलि कण ऊपर पग दैण थी, राजी नहिं मन माहिं ॥ ८ ॥
कर्म योग उपयोग में, स्वामी तो अधिकाय ।
पिण नीत शुद्ध अरु थाप नहि, साध पणो ते न्याय ॥ ६ ॥

॥ ढाल ३६ मीं ॥

(जाणै छे राय तुवा ए देशी)

स्वाम भिक्खु ने सोय ए । किण ही पूछा करी इम जोय ए, साध साधवियां रे माहि ए ॥ अव-गुण दीसै अधिकाय ए ॥ १ ॥ ज्यांरे नहीं ईर्यारो ठिकाण ए, भाषा सुमति में पिण दिसै हाण ए केई करै चालता बात ए, सून्य उपयोग री साक्षात ए ॥ २ ॥ सुमति एषणादिक में सोय ए, अधिक फेर दिसै अवलोय ए । तीन गुप्त कही तंतसार ए, अति हि दिसै है फरक अपार ए ॥ ३ ॥ कैकांरी प्रकृति

करड़ी धार ए, छेड़वियां सूं करै फूंकार ए। मान माया लोभ में मंत ए, किम कहिये तिणाने संत ए ॥ ४ ॥ करड़ी प्रकृति देख्यां साध ए, कोई बोल्या वचन विराध ए। यांमें साधपणारो न अंश ए, अवगुणारी करां केम प्रशंस ए ॥५॥ वर बोल्या है भिक्खु वाय ए, सुण दृष्टान्त एक शोभाय ए। एक साहुकार अवधार ए, कराई हवेली सुखकार ए ॥ ६ ॥ रुपया हजारां लगाविया ए, जाली झरोखा अधिक झुकाविया ए। ओपै मालिया महिल अनेक ए, शुद्ध शोभता सखर संपेख ए ॥७॥ चारु रूप विविध चित्राम ए, अति कोरणिया अभिराम ए। सुखदाई रूप सुविहाण ए, पुतलियां मनहरणी पिछाण ए ॥ ८ ॥ आवै लोक अनेक ए, देख देखने हरषै विशेष ए। नरनारी हजारां आवता ए, घणा देख देख गुण गावता ए ॥ ९ ॥ महिल मालिया महा श्रीकार ए, तिके जू जूआ देखै तिवार ए। कहै देखो कोरणियां ताम ए, चतुर रूप रच्या चित्राम ए ॥ १० ॥ साहुकारादिक सहु आय ए, एतो सगलाई रह्या सराय ए। जठे भंगी देखण आयो जान ए, धुन सेतखाना सूं ध्यान ए ॥ ११ ॥ महिल मालिया साहमी न दिष्ट ए, जाली झरोखा सूं नहीं इष्ट ए।

तिणरे सेतखानां सूं काम ए, तिण सूं तेहिज छै परिणाम ए ॥ १२ ॥ कहै सेतखानो तो आछो नहीं ए, सेठ सुणतां अवगुण बोले सही ए। जब सेठ कहै सुण वाय ए, ताड़तखानो किण वासते ताय ए ॥ १३ ॥ सेतखानो आछो किम थाय ए, महा नीच वस्तु इण माहिए। निन्दनीक वस्तु ए निदान ए, तूं पिण नीच तिण सूं थारो ध्यान ए ॥ १४ ॥ झरोखा जाल्यां आदि दे जाण ए, प्रगट आछा है अधिक प्रधान ए। स्वाम कहै सुविचार ए, कहूं उपनय ए अवधार ए ॥ १५ ॥ संजम तप तो हवेली समान ए, सेतखांना ज्यूं अवगुण जान ए। साहुकारादिक अवगुण देखणहार ए, ते सम उत्तम जीव उदार ए ॥ १६ ॥ त्यांरी दिष्ट संजम ऊपर ताम ए, पिण अवगुण सूं नहीं काम ए। गुणग्राही उत्तम गुणवंत ए, तेतो संजम तप जाणै तंत ए ॥ १७ ॥ संजम गुण जाणै शुद्ध मान ए, पिण अवगुण सूं नहीं ध्यान ए। छिद्रपेही भंगी सम छार ए, संजमने नहीं जाणै लिगार ए ॥ १८ ॥ छट्ठो गुण ठाणो इण विध जाय ए, त्यांने ते पिण खबर न काय ए। छट्ठो गुणठाणो इम ठहराय ए, ते पिण जाण पणो नहीं ताहि ए ॥ १६ ॥ अवगुण ने करै

अगवारण ए, महानिन्दक मातंग मारण ए। कहै अवगुण आछा नाहिं ए, तिण ने कहिणो इणरो कहिसी कांय ए ॥ २० ॥ अवगुण तो कदेही आछा न होय ए, येतो प्रत्यक्ष ही अवलोय ए। ये तो निंद्वा जोग निषेध ए, इण में तो कांई काढ्यो भेद ए ॥ २१ ॥ पिण संजम गुण इण माहिं ए, तिण सूं वंदवा जोग कहाय ए। तू मुंहढ़े आणै अवगुण वार बार ए, थारे कुमति हिया में अपार ए ॥ २२ ॥ दीधो हवेलीरो दृष्टन्त ए, भिक्खु भविक नी भांजण भ्रान्त ए। स्वामी सूत्र न्याय श्रीकार ए, त्यांरा जाण भिक्खु तंतसार ए ॥ २३ ॥ ओतो दियो भिक्खु दृष्टन्त ए, त्यांरा हेतुने पुष्ट करंत ए। सूत्र साख कहै जय सार ए, तिणरो सांभलजो विस्तार ए ॥ २४ ॥ कह्यो सूत्र भगवती माहि ए, शतक पचीस में सुखदाय ए। उत्तर गुण पड़िसेवी पिछाण ए, बुकस नियंठो श्री जिन वाण ए ॥ २५ ॥ जगन दोय सौ कोड़ ते जान ए, नहीं विरह कदे नहिं हानि ए। पंचम पद छट्ठे गुण ठाण ए, चारित्रिरा गुण लेखै पिछाण ए ॥ २६ ॥ मूल गुण ने उत्तर गुण माहिं ए, दोष लगावै ते दुखदाय ए। पड़िसेवण कुशील पिछाण ए, जगन दोय सौ कोड़ ते जाण

ए ॥ २७ ॥ नहीं त्रिरह एह थी ओछा नाहि ए, ये पिण छट्ठे गुण ठाणे कहिवाय ए। यांमे चारित गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग विचार ए॥ २८ ॥ पुलाग नेयंठो पिछाण ए, लब्धि-फोड़्यां कह्यो जिन जाण ए। थिति अन्तर मुहूर्त्त थाय ए, लब्धि नी थिति तो अधिकाय ए॥ २९ ॥ बिरह उत्कृष्ट संखेज वास ए, पछै तो अवश्य प्रगटे बिमास ए, यामें चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा योग बिचार ए॥ ३० ॥ कषाय कुशील नेयंठा माहि ए, पांच शरीर छः लेश्या पाय ए। षट समुदघात कहि-वाय ए, इण रो पेटो भारी है अथाय ए॥ ३१ ॥ बहु फोड़वै लब्धि प्रकाश ए, मोह कर्म्म उदय थी बिमास ए। पिण चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं बंदवा योग बिचार ए॥ ३२ ॥ पुलाक बुकस पडिसे वेणा पेख ए, दिल सूं कषाय कुशील देख ए। या में दोष तणो डंड जोय ए, बले दोषरी थाप न कोय ए॥ ३३ ॥ तिण कारण चारित्र चीज ए, दोष थाप्यां जावै गुण छीज ए। जितरो डंड तितरो चर्ण जाय ए, दोष थाप्यां सर्व बिललाय ए॥ ३४ ॥ हीण वृद्धि पजवा में होय ए, प्रगट शतक पचीसमों जोय ए। फेर अनन्त गुणो पजवा मांहिं ए, तो पिण

चारित्र गुण सुखदाय ए ॥३५॥ दशमें ध्ययन ज्ञाता में दयाल ए, कह्यो चन्द दृष्टन्त कृपाल ए। एकम आदि पूनम चन्द पेख ए, वलि विद पख चन्द विशेष ए ॥ ३६ ॥ ते सम संत समृद्धि ए, यतिधम दश में हीन वृद्धि ए। क्षान्ति आदि ब्रह्मचर्य्य माहि ए, एकम थी पूनम तांई गिणाय ए ॥ ३७ ॥ इम विद पख चन्द समान ए, क्षमादिक गुण में फेर जान ए, किहां एकम किहां पूनम चन्द ए, दशूं धर्म एम वृद्धि मंद ए ॥ ३८ ॥ चौथे ठाणे चौभंगी उपन्न ए, शील सम्पन्न चरित्र सम्पन्न ए। दूजो शील सम्पन्न न देख ए, चरित सहित कह्यो विशेष ए ॥ ३९ ॥ तीजो शील सम्पन्न स्वभाव ए, विले * चारित्र संपन्न साव ए †। चौथो शील चारित नहीं ताम ए, शील शीतल स्वभाव नो नाम ए ॥ ४० ॥ शीतल प्रकृति तो नहिं कोय ए, दूजे भांगे चारित कह्यो जोय ए। वर न्याय हिये सुविचार ए, प्रकृति देखी म भिड़को लिगार ए ॥ ४१ ॥ निशीथ बीस में न्हाल ए, वार वार रो डंड विशाल ए। इम सांभल छांड अनीत ए, राखो सूत्र नी प्रतीत ए ॥ ४२ ॥

---

* विले=नाश।

† पिण चारित्र तणो अभाव ए। ऐसा भी पाठ है।

भारीकर्मा सुणी भिड़काय ए, बोलै ऊंधमति इम वाय ए। करै ढीली परूपणा काज ए, हिवै दोष तणी कांई लाज ए॥ ४३ ॥ इम बोलै मूढ़ गिवार ए, ज्यांरा घट माहें घोर अन्धार ए। पिण इतणी न जाणै साख्यात ए. सर्व कही सूतर नी बात ए ॥४४॥ स्थिर राखण समगत सार ए, अति मेटण भ्रम अन्धार ए। आगम रहीस बतावै अमाम ए. तेतो एकन्त तारण काम ए॥ ४५ ॥ अति मानणो तसु उपगार ए, थिर समगत राखणहार ए। रह्यो गुण मानणो तो ज्यांहीज ए, उलटी क्यूं करो त्यां पर खोज ए ॥ ४६ ॥ परम दुर्लभ समगत पाय ए, रखे शंका राखो मन माहिं ए। शंका राख्यां सू सम-कित जाय ए, तिण सूं बार २ समभाय ए ॥४७॥ पज्जवा ने हिण पाडै कोय ए. वुकस पड़िसेवणादिक जोय ए। तो तिणरी तिणने मुशकल ए, पिण पोते क्यूं घालो सल ए ॥ ४८ ॥ खोड़ ऊंठरी ऊंठने होय ए, ज्यूं पज्जवा हीण तसु सोच जोय ए। न फिरै छट्ठो गुण ठाण ए, तठा तांई असाध म जाण ए ॥ ४६ ॥ श्रावक कह्या मात तात समान ए, पवर चौथे ठाणै पहिछान ए। हेत सूं कहै रूड़ी रीत ए, पिण अंतरंग में अति प्रीत ए ॥ ५० ॥ स्वाम भिक्खु तणो

प्रसाद ए. पामी समकित चरण समाधि ए। दोधो हवेली रो तो दृष्टान्त ए, संखेप थकी चित शांत ए ॥ ५१ ॥ त्यांग प्रसाद थी अनुसार ए, साखा न्याय कह्या जय सार ए। सूत्र में जिम न्याय बताविया ए, लेश मात्र अणहुंता न लाविया ए ॥ ५२ ॥ धिन २ भिक्खु स्वाम ए, सारचा घणा जणा रा काम ए। त्यांरी आसता राखो तहतोक ए, तिण सूं होवै मोच्न नजीक ए ॥ ५३ ॥ स्वामो दान दया दीपाय ए, आज्ञा अण आज्ञा ओलखाय ए। ज्यांरा गुण पुरा कहा न जाय ए, प्रत्यच्न पार्श्व भिक्खु पाय ए ॥५४ ॥ स्वामी याद आवै दिन रैण ए, चित्त में अति पामै चैन ए। ऐसा भिक्खु उजागर आप ए, समरण सूं मिटै सोग संताप ए ॥ ५५ ॥ नव तीसमी ढाल निहाल ए, भ्रम भंजण समय संभाल ए। हवेली रो हेतु कह्यो स्वाम ए, सूत्र साख जोत कही ताम ए ॥५६॥

॥ दोहा ॥

विचरत पूज्य पधारिया, पादु शहर मझार।
शिष्य हेम साथे सखर, संत अवर पण सार ॥ १ ॥
एक भायो इह अवसरे, भिक्खु भणी भणेह।
हेम चदर हाथे करी, अधिकी दीसे एह ॥ २ ॥
चतुर स्वाम तें चदर ले, माप दिखायो मान।
लांब पणे चौड़ा पणे.. अधिक नहीं उनमान ॥ ३ ॥

पूज कहै देखो प्रगट, पछेवड़ी परमाण ।
ते कहे अधिकी तो नहीं, ए तो छै उनमान ॥ ४ ॥
तूं अधिकी कहींतो तदा, तद ते बोल्या ताम ।
मुझ झूठी शंका पड़ी, तब घणो निषेध्यो स्वाम ॥ ५ ॥
चार अंगुलरे वासते, संजम खोवां सार ।
मुझ भोला जाण्या इसा, आण्यो भ्रम अपार ॥ ६ ॥
एनो प्रतीत न तो भणी, तो मारग रे मांहें ।
पग काचो पोवै तदा, थाने खबर न काय ॥ ७ ॥
इत्यादिक वचने करी, अधिक निषेध्यो आप ।
कर जोड़ी ने ते कहे, कुड़ी शंका किलाप ॥ ८ ॥
खरी इण पर सीख दे, खोड़ मिटावण काम ।
फिर शंका तसु ना पड़ी, पवर स्वाम परिणाम ॥ ६ ॥

॥ ढाल ४० मी ॥

(जाणपणु' जग दोहेलो ए देशी)

स्वाम भिक्खु गुण सागरु रे लाल, खरा भिक्खु खिम्यावान सुखकारी रे। संतजी वेवै स्वामजी रे ला०, सुणो सूरत दे कान ॥ सु० ॥ सुण जो गुण स्वामी तणा रे लाल ॥ १ ॥ शोभाचंद सेवक हुंतो रे लाल, नांदोला नु नेहाल । सु० । आयो पाली में एकदा रे लाल, तिण ने कहे पाखंडी ते काल ॥ सु०॥ २ ॥ तू विश्वर जोड़ भीखणजी तणा रे लाल, तो ने देसां बहु रुपया ताम । सु० । भीखणजी सूं बातां कर जोड़सूं रे ला०, इम कहे शोभाचन्द

आम ॥सु०॥ ३ ॥ इम कहि खैरवे आवियो रे लाल, जिहां पूज विराज्या जाण । सु० । उभो भिक्खु रे आगले रे ला०, वंदणा कीधी आण ॥ सु० ॥ ४ ॥ पूज कहै बच परवड़ा रे लाल, तुझ नाम शोभाचंद ताय । सु० । शोभाचंद कहै हां सही रे लाल, एहिज नाम कहाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ भिक्खु बलि तसु इम भणै रे लाल, सुत रोहीदास नो सोय । सु०। सेवक कहे स्वामी भणी रे लाल, सत बच तुझ रा अवलोय ॥ ६ ॥ बलि शोभाचंद बोलियो रे लाल, आप आछी न कीधी एक । सु० । उथापो श्री भगवान ने रे लाल, विरुई बात विशेष ॥ सु० ॥ ७ ॥ बलता भिक्खु बोलिया रे लाल, म्हें क्यांने उथापा भगवान । सु० । म्हे भगवंत रा बचना थकी रे लाल, घर छोड साधु थया जाण ॥ सु० ॥ ८ ॥ बलि शोभाचन्द बोलियो रे ला०, आप देवरो दियो उथाप । सु० । जाब देवै स्वामी जुगत सूं रे लाल, चतुर सुणै चुप चाप ॥ सु० ॥ ९ ॥ हजारां मण पत्थर देवल तणा रे लाल, कहो उथापिये केम । म्हेतो सेर दो सेर प्रयोजन विना रे लाल, आघो पाछो करां नहीं एम ॥ सु० ॥ १० ॥ फेर शोभाचंद पूछतो रे लाल, आप जिन प्रतिमा दी उथाप । सु०। प्रतिमाने कहो

पाषाण छै रे लाल. ए आछी न करी आप ॥ सु० ॥ ११ ॥ स्वाम कहै तूं सांभल रे ला०, म्हे प्रतिमा उथापा किण काम । सु० । म्हारे त्याग है झूठ बोलण तणारे लाल, इणरा न्याय कहूं अभिराम ॥ १२ ॥ सोना री प्रतिमा भणी रे ला०, सोना री प्रतिमा कहंत । सु० । रूपा री प्रतमा भणी रे ला०, म्हे रूपा नी कहां धर खंत ॥१३॥ सर्बधातु नी प्रतमा भणी रे ला०, सर्बधातु नी कहां सोय । सु० । पाषाण री प्रतिमा भणीरे ला०, कहा पाषाण री जोय ॥१४॥ पाषाण री प्रतिमा भणी रे ल०। सोनारी कह्यां लागे झूठ । सु० । तिण सूं कहां छां प्रतिमा पाषाणरी रे ला०, म्हे तो झूठ ने दीधी पूठ ॥ सु० ॥ १५ ॥ शोभाचंद इम सांभली रे ला०, हर्ष्यो घणो हिया मांय । सु० । इसड़ा उत्तम महा पुरुषां तणा रे ला०, किम अवगुण कहिवाय ॥ १६ ॥ गुण चाहिजे ए पुरुषना रे ला०, बारु इसड़ी विचार । सु० । दोय छन्द जोड्या दीपता रे ला०, सांभलतां सुखकार ॥ सु० ॥ १७ ॥ स्वामीने छन्द सुणायने रे लाल, पाछो आयो पाली माहिं । सु० । पाखंडमतिया पूछियो रे ला०, थे छन्द बणाया के नाहिं ॥ सु० ॥ १८ ॥ ते कहै छन्द बणाविया रे ला०, पाखण्डमति बोल्या फेर । सु० । भीखण

जी रा श्रावक आगले रे ला०, छन्द कहिजे होय सेर ॥सु०॥१६॥ स्वामीजी रा श्रावकां कने रे ला०, आया सेवक लेई साथ । सु०। पाखण्डमति कहै श्रावकां भणी रे ला०, वारु सुणो मुझ बात ॥ सु० ॥ २० ॥ सेवक ओ निरापेखी सही रे ला० अदल कहसी अवलोय । सु० । थारे म्हारे श्रद्धा पक्ष नी रे ला० इसारे तो पक्ष नहिं कोय ॥ २१ ॥ शोभाचन्द ने इम कहै रे ला० भीखणजी साधु किसाएक । सु० । शुद्ध छै किंवा अशुद्ध छै रे ला०, तब सेवक कहै सुविशेष ॥ २२ ॥ उणारी श्रद्धा उणा कने रे ला० आपांरी आपां पास । सु० । तो पिण पाखंडमतिया कहै रे लाल, तूं तो निशंक प्रकाश ॥ २३ ॥ जब शोभाचन्द कहे सांभलो रे लाल, गुण अवगुण भीखणजी में होय । सु० । कहिसूं म्हाने दरशसी जिसा रे लाल, तब ए कहे दरशे जिसा तोय ॥२४॥ शोभाचन्द सेवक इम सांभली रे ला० शुद्ध कह्या छन्द त्यां श्रीकार । सु० । ते छन्द दोनूं गुण तणा रे ला० सांभलजो सुखकार ॥ २५ ॥

(॥ शोभाचंद सेवक कृत छन्द ॥)

अनभय कथणी रहणी करणी अति, आठूंई कर्म जीपै अधिकाई । गुणवंत अनंत सिद्धन्त कला

गुण, प्राक्रम पोंच विद्या पुण भारी। शास्त्र सार बतीस जाणै सहु, केवल ज्ञानी का गुण उपगारी। पंचेन्द्री कूं जीत न मानत पाखंड, साध मुनिन्द्र बड़ा सतधारी। साधु मुक्ति का त्रास बंदा सहु, भीखम स्वाम सिद्धन्त है भारी ॥ १ ॥ स्वामी परभव के स्वार्थ साच है. वाचै सूत्र कला विस्तारी। तेरा हि पंथ साचा तिहूं लोक में, नाग सुरेन्द्र नमें नर नारी। सुणिये सत बात सिद्धन्त सुज्ञान की, बहुत गुणो करणी बलि-हारी। पृथ्वी के तारक पंचम आरा में, भीखम स्वाम का मारग भारी ॥ २ ॥

(॥ ढाल तेहिज छै ॥)

शोभाचन्द कह्या इसारे ला०, सांभल ते गया सरक। सु०। मन माहें मुर्झाणा घणा रे ला० स्वामी जी रा श्रावक होय गया गरक ॥ २६ ॥ पूज भिख्या रा प्रताप सूं रे ला० पाड़ी पाखंडियांरी आब। सु०। ऐसा भिक्खु गुण आगला रे ला०, सुजश विसत-रियो सताब।२७। ऊंडी पूज आलोचना रे ला०, बारु बुद्धि ना जाब। सु०। धोरी धर्म तणा पूरा रे ला०, दियो पाखंड मत दाब ॥ २८ ॥ अवतरिया इण भरत में रे ला०, खरे मारग रह्या खेल। सु०। सूत्र बुद्धि समसेर सूं रे ला०, पाखण्ड मत दियो पेल ॥

२६ ॥ स्मरण तुझ गुण संभरूं रे ला०, आवे निश दिन याद । सु० । रोम २ सुख रति लहूं रे ला०, पामूं पर्म समाधि ॥ ३० ॥ चारु ढाल चालीसमो रे ला० भय भ्रम भंजन स्वाम । सु० । जय जश सम्पति दायको रे ला०, आशा पूरण आम ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

बूंदी में बूजा करी, सवाई रामजी सोय ।
वखाण सम्पूर्ण हुवां पछे, आप नेहत मांगो अवलोय ॥१॥
तुहत घाल सोगंध करो, इसड़ी कहो छो आप ।
कांई आपरे ई तोटो अछे, ते तोटो बूरण थाप ॥ २ ॥
सुता परणाई सेठ किण, न्यात जिमाई न्याल ।
तोटो खूण नेहत ले, ज्यूं सूं तोटो तुम भाल ॥ ३ ॥
स्वाम कहै एक सेठ तिण, सुता परणाई सोय ।
बोलाया बहु गाम रा, न्यात मित्र अवलोय ॥ ४ ॥
जीमण कर जीमाविया, सगलां ने पकवान ।
दिवस घणा राख्या पछै, सीख दीधी सनमान ॥ ५ ॥
एक एक पकवान री, साथे कोथली दीध ।
रसते भूख भांजण भणी, इम सुखे पूगता कीध ॥ ६ ॥
ज्यू म्हें पिण बहु दिवस लग, वखाण में विस्तार ।
वातां विविध वैराग नी, संभलाई सुखकार ॥ ७ ॥
हलुकर्मी सुण हर्षिया, कर्म काट्या अधिकाय ।
छेहड़े एक पकवान री, कोथली रूप कहाय ।
त्याग करावां तेहने, सुखे मोक्ष में जाय ।
इम तोटो मेटण अवरनुं, नुंहत मांगां इण न्याय ॥ ८ ॥

॥ ढाल ४१ वीं ॥

(धीज करै सीता सती रे लाल ए देशी)

स्वाम भिक्खु बुद्धि सागरु रे ला०, निर्मल मेलया न्याय रे। सुगुण नर। सुविनीत सुण हर्षे सही रे लाल, अवनीत ने न सुहाय रे। सुगुण नर ॥ सुणज्यो दृष्टान्त स्वामी तणा रे ला० ॥ १ ॥ अवनीत साधु ऊपरै रे ला०, दीधो स्वाम दृष्टान्त रे। सु०। एक साहुकार नी स्त्री रे ला०, पाणी काजे गई धर खंत रे सु० ॥ २ ॥ बेहड़ो तो माथे पाणी सूं भरयो रे ला०, पोतारे घर आवता पेख रे। सु०। मार्ग में तिण री बाहिली मिली रे ला०, बातां करबा लागी विशेष रे ॥ ३ ॥ एक घड़ी तांई उभा थका रे ला०, हिल मिल बातां करी हर्षाय रे सु०। पछै घर आवी निज पिउ भणी रे ला०, तिण हेलो पाड़यो ताहि रे ॥४॥ तुर्त घड़ो उतारो मुझ सिर तणूं रे ला०, जो किंचित बेलां थी भरतार रे सु०। बेहड़ो उतारयो तिण बेरनो रे ला०, तो क्रोध मा आवी अपार रे ॥ ५ ॥ कहै म्हारे माथे तो बेहड़ो उदकनो रे ला०, सो हूं भारे मुई घणी सोय रे सु०। थाने तो मूल सूजै नहीं रे ला० जिण सूं बेलां इतरी लगाई जोय रे ॥ ६ ॥ संसार तणो लेखे सही रे ला०, नार इसड़ी

अविनीत रे सु० । रस्ते एक घड़ी वेहड़ो छतां रे ला०, पोते बात करती धर प्रीत रे ॥ ७ ॥ किंचित् जेज पिउ करी रे ला०, तड़का भड़का करवा लागी तामरे सू० । इसड़ी अजोग ते स्त्री रे ला०, अवनीत जग कहे आम रे ॥ ८ ॥ अविनीत साधु एहवो रे ला०, गोचरियांदिक माहिं रे सु० । किणही बाई भाई सूं बातां करे रे ला०, एक घड़ी उभा ताहि रे ॥ ६ ॥ अथवा दर्शण देवा भणी रे ला० । झट चलाई ने परहो जाय रे सु० । तिहां उभा घणी वेलां लगे रे ला०, वातां करै बणाय रे ॥ १० ॥ बड़ा थोड़ो ई काम भलाइयां रे ला०, करता कठ मठाठ करै जेह रे सु०। तथा पाणी राख्यो ते लेवा मेलियां रे ला०, टोला टोला कर देवै तेह रे ॥ ११ ॥ अथवा जातो दोहरो हुवे रे ला०, देवै मुंह विगाड़ रे । गुरु सीख दिये चूक थी पड़्यो रे ला०, तो करै उलटो फुंकार रे ॥ १२ ॥ अवनीत साधु ने दीधी उपमा रे, अवनीत स्त्री नो भिक्खु आप रे । इम सांभल उत्तमा नरा रे, चित्त सुविनय थाप रे ॥१३॥ बलि बनीत अवनीत री चौपई विषै रे आख्या दृष्टन्त अनेक सु० । संक्षेप थकी कहूं छूं सही रे ला०, सांभलजो सु विवेक ॥ १४ ॥ अवनीत ने थावरिया नीं उपमां रे ला० गर्भ-

वती ने कह्यो डाकोय सु० । पुत्र होसो पुन्य आगलो रे, पाड़ोसण ने कहे पुत्रो होय रे ॥ १५ ॥ गुरु भगता श्रावक श्राविका कने रे ला०, गावैं गुरु रा गुण-ग्राम । सु० । आपरे वश जाणै तिण कने रे लाल, अवगुण बोले ताम ॥ १६ ॥ कने रहे साधु ते थकी रे ला०, वेर बुद्धि ज्यूं जाण सु० । और अलगा रहे ते थकी रे ला०, हेत राखे सुविहाण ॥ १७ ॥ कुह्या कानां री कुती भणी रे ला०, काढ़े घर सूं सहु कोय सु० । ज्यूं अवनीत जिहां जावें तिहां रे ला०, आदर मान न होय ॥ १८ ॥ भंडसुरो कण छांड़ि ने भीष्टो भखै रे ला०, हरिया जव छांडी मृग पड़े पास सु० । ज्यूं अवनीत विनय छांड़ी करी रे ला०, अविनय धारे उलास ॥ गधो घोड़ो गलिआर अवनीतड़ो रे ला०, कूट्यां बिन आघो नहीं चालैं कोय । ज्यूं अवनीत ने काम भलाविया रे ला०, कह्यां नीठ २ पार होय रे ॥ २० ॥ बूटक ने गधे मामे बलदने रे ला०, मरायो कुबुद्धि सीखाय । ज्यूं अव-नीत री संगत कियां रे ला०, भव २ में दुःख पाय ॥ वेश्या मुतलब थी पुरुषांने रिझावती रे ला०, स्वार्थ न पूगां तुरत दे छेह रे सु० । ज्यूं अविनीत मुतलब विनय करै घणुं रे ला०, स्वार्थ नहीं सभयां तोड़े

सनेह रे ॥ २२ ॥ बांध्यो कालारी पाखती गोरियो रे ला०, वर्ण नावे तो पिण लक्षण आय रे । ज्यूं अवनीत री सङ्गत करे रे ला०, तो उवे अविनय कुबुद्धि सीखाय ॥ २३ ॥ सोक रा सोक लोकां कने रे, अवगुण बोलै ने वांछे घात । ज्यूं अविनीत वरते गुरु थकी रे, अवगुण ग्राही साख्यात ॥ २४ ॥ कुजा-तिरी त्रिया पिउ से लड़ी रे, नाके कुवे के उठै और साथ रे । करे अविनीत क्रोध सूं सलेषणा रे, के गण छोड़ जूदो होय जाय ॥ २५ ॥ शोर ठंडो हुवै मुख में घालिया रे, तातो अग्नि में गालियां हुवै ताय । ज्यूं वस्त्रादिक दियां अवनीत राजी रहे रे स्वार्थ अण पूगां अवगुण गाय ॥ २६ ॥ शोर शोरीगर रा घर थकी रे, दूर रहै बुद्धिवान रे । ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहे रे, ते डाहा चतुर सूजाण ॥ २७ ॥ आछी वस्त घाले अग्नि में रे, ते छिन माहें हो जावै छार । ज्यूं अविनय अग्नि में गुण बले रे । अवगुण प्रगटे अपार ॥ २८ ॥ नाग खिजावै नान्हो जाण ने रे, तो ओ घात पामैं तत्काल । ज्यूं नाना गुरुनी निंद्या कियां, आपदा पामैं असराल ॥ २९ ॥ कालो नाग कोप्यां करैं, जीव घात सूं अधिक म जाण । पग गुरु ना अप्रसन्न कियां, अबुद्धि दुर्गत

दुख खाण ॥ ३० ॥ कदा अग्नि न बाले मंत्र जोग सूं रे, कदा कोप्या सर्प न खाय। कदा तालपुट विष पिण मारै नहीं, पिण गुरु हेलणा सूं मुक्ति न जाय ॥ ३१ ॥ कोई बांछे सिर सूं गिरि फोड़वा रे, सूतो ही सिंह जगाय। कोई भाला रे अणी मारे टाकरा रे, ज्यूं गुरुनी असातना थाय ॥ ३२ ॥ कदा गिरि पण फोडै कोई मस्तके रे, कदा कोप्यो सिंह न खाय। कदा भालो न भेदै टाकर मारियां रे, पण गुरु हेलणा सूं शिव नाहिं ॥ ३३ ॥ ज्यूं काष्ठ वहो जाय जल मझे रे, ज्यूं अविनीत तणीजे संसार। कुशिष्य क्रोधी अभिमानी आतमा रे, धूर्त्त मायावियो धार ॥ ३४ ॥ गुरु सीख दिये अविनीत ने रे, तो क्रोध करे तिण बार। ते डांडे कर ठेलै लिछमी आवती रे, सांची सीख न श्रद्धे लिगार ॥ ३५ केई हाथी घोड़ा अविनीत छै रे, दीखै प्रत्यक्ष दुःख। तो धर्माचार्य ना अविनीत ने रे, कहो हुवे किम सुख ॥ ३६ ॥ अविनीत नर नारी इण लोक में रे, विकल इन्द्री सरीखा विपरीत। ते डांडे शस्त्र करी ताड़ीजता रे, अति दुःख पामें गुरु नो अविनीत ॥ ३७ ॥ बले देव दाणव अविनीत छै रे, दुखिया ते पण देख। गुरु ना अविनीत ने दुःख

अति घणा, काल अनंत संपेख ॥ ३८ ॥ विनीत अविनीत जातां बाट में रे दोनूं जणा हथिणी नो पग देख। अविनीत कहे पग हाथी तणूं. इण ने ऊंधो सूझे अशेष ॥ ३९ ॥ विनीत कहै हथिणी पण काणी डावी आंखरी रे, ऊपर राजा री राणी सहित। वले पुत्र रत्न तिणरी कूख में रे, विवरा सुध बोल्यो सुविनीत ॥ ४० ॥ एक बाई प्रश्न आगै पूछियो रे, ऊभी सरवर पाल। म्हारो सुत प्रदेश ते मिलसी कदे रे, कहै अविनीत उण कियो काल ॥४१॥ हूं काटूं बाढूं जीभड़ली तांहि री रे, तूं विरुओ बोल्यो केम। धसको क्यूं म्हाखे पापी एहवो रे, जब विनीत कहे छै एम ॥४२॥ पुत्र थारो घर आवियो रे, आज मिलसी तो सूं निशंक। इण रो वचन म सान ओ झूठो घणूं, इणरे जीभ वैरण रो वंक ॥ ४३ ॥ ए दोनूं बोलां में अविनीत झूठो पड्यो रे, पछै गुरु सूं झगड़्यो आय। कहे मोनें न भणायो कपटे करी, गुरु पूछे निरणूं कियो ताहि ॥ ४४ ॥ इह लोक मां गुरु ना अवनीत रो रे, अकल विगड़ गई एम। तो धर्माचार्य नां अवनीतरी रे, ऊंधी अकल रो कहिवो केम ॥४५॥ ज्यूं नकटी छुटी कुलहीणी नार ने रे, परहरी निज भरतार। जोगी भखरादिक तिण ने आदरै, उवा

पिण जावै उण लार ॥ ४६ ॥ नकटी सरीशो अवि-नीतरो रे, तिण सूं निज गुरु न धरे प्यार। तिण ने आप सरीषो आवी मिले रे, तब पामें हर्ष अपार ॥ ४७ ॥ नकटी तो जोवे भखरादिक भणी रे, अवि-नीत जोवै अजोग। जो अशुभ उदै हुवै अविनीत रे, मिल जावै सरीषो संयोग ॥ ४८ ॥ सौ बार पाणी सूं कादो धोवियां रे, विरुई न मिटै वास। ज्यूं उपदेश दे गुरु अविनीत ने रे, पिण मूल न लागै पास ॥ ४९ ॥ अविनीत उजिया भोगवती जिसो रे, ऋषिया रोहणी जिसो सुवनीत। गुरु गण सूंपे सुविनीत ने रे, पूरी तिण री प्रतीत ॥ ५० ॥ किणही गाय दीधी चार विप्रां भणी रे, ते बार २ दूहे ताहि। पिण चारो न नीरे लोभ थको रे, तिण सूं दुःखे २ मूई गाय ॥ ५१ ॥ गाय सरिषा आचार्य मोटका रे, दूध सरीषो ज्ञान अमोल। शिष्य मिला ब्राह्मण सारिषा रे, ते ज्ञान लिये दिल खोल ॥५२॥ आहार पाणी आदि व्यावच तणी रे, नकरे सार संभाल। एहवा अविनीतां रे बश गुरु पड्या, त्यां पण दुःखे २ कियो काल ॥ ५३ ॥ ब्राह्मण तो एक भव मझे रे, फिट २ हुवा इहलोक। गुरुना अविनीत रो कहिवो किसो रे, पीड़ा विविध परलोक ॥५४॥

गर्ग आचार्य ने मिल्या रे, पांच सौ शिष्य अविनीत। तिण रो विस्तार तो छै घणुं, उत्तराध्ययन माहें संगीत ॥ ५५ ॥ एकल थकी बुरो अवनीतड़ो रे, साधांरा गण माहें जाण। साम द्रोही सेवग सारी षो रे, दुसनुं चाकर दुश्मण समान रे ॥ ५६ ॥ छलबल खेले चोर ज्यूं रे, छिद्री थको रहे टोला माहिं। चर्चा उपदेश तिणरो अति बुरो, फाड़ा तोड़ा काजे करे ताहि ॥ ५७ ॥ और साधांरा काढ़े गृहस्थ खंचणा रे, तिण सूं बात करै दिल खोल। अंतरंग में जाणे आपरो, तिण ने सिखावे चर्चा बोल ॥ ५८ ॥ गुण ग्राम गावें सुविनीत रा रे, तो अविनीत सूं सहा नहीं जाय। निज आपो प्रगट करै, म्हाने तो ललपल न सुहाय ॥ ५६ ॥ और साधारी आसता उतारवा रे, आपो प्रगट करै मूढ़। गुरु सीख दे खामी मेटवा रे, तो सांहमों मंड जाये करे खोटी रूढ़ ॥ ६० ॥ जिण ने आप तणुं करै रागियो रे, शंका औरां री घाल। अभिमानी अवि-नीत नी रे, एहवी छै ऊंधी चाल ॥ ६१ ॥ सुविनीत रा समझाविया रे, साल दाल ज्यूं भेला होय जाय। अविनीत ना समझाविया, कोकला ज्यूं कानो थाय ॥ ६२ ॥ समझाया सुविनीत अविनीत रा रे, फेर

कितोयक होय। ज्यूं तावड़ो ने छांहड़ो रे, इतरो अंतर जोय ॥ ६३ ॥ अविनीत ने अविनीत मिलें रे, ते पामें घणो मन हर्ष। ज्यूं डाकण राजी हुवै रे, चढ़वा ने मिलियां जरख ॥६४॥ डाकण मारै मनुष ने रे, ओ करै समकित नो घात। डाकण चोर राजा तणी रे, ओ तीर्थंकर नो चोर विख्यात ॥ ६५ ॥ लंपट रूपऋद्धि फिट २ हुवै, जे न गिणै जाति कुजाति। अविनीत ऋद्धि घणो खाणरो रे, विकला ने मूंडै विख्यात ॥ ६६ ए अविनीत साधु ओलखाविया रे, इमहिज साधवी जाण। वले श्रावक ने श्राविका रे तिम हिज करजो पिछाण ॥ ६७ ॥ साध साधवियां री निन्दा करै। अवगुण बोलैं विपरीत। सूंस करावै गृहस्थ भणी रे त्यांरी भोला माने प्रतीत ॥६८॥ केई श्रावक खावै घर तणूं, केयक मांगे खाय। पिण अविनीत पणो छूटै नहीं, तो गरज सरै नहीं काय ॥ ६६ ॥ त्यांने दाधां में पुन्य परूपियां, स्वान ज्यूं पूंछ हिलाय। साधु पाप प्ररूपे त्यांरा दान में, तो लागै अभ्यंतर लाय ॥ ७० ॥ कोई अविनीत हुवै साध साधवी, कदा गुरु दे लोका ने जताय। जो अविनीत श्रावक सांभले, तो तुर्त कहे तिणने जाय ॥७१॥ साधां ने आय बंदणा करै, साधवियां ने न वांदे रूड़ी

रीत। त्यांनें श्रावक श्राविका म जाणजो रे, तेतो मह मनि छै अविनीत ॥ ७२ ॥ तिण श्री जिन धर्म न ओलख्यो रे, वले भण भण करै अभिमान। आप छांदे माठो मति उपजे, तिण ने लागो नहीं गुरुकान ॥ ७३ ॥ मोटो उपगार मुनि तणुं, कृतघ्न कीधो न गिणंत। एहवा अविनीत साधु श्रावक ऊपरै, भिक्खु आख्यो एक दृष्टन्त ॥ ७४ ॥ कोई सर्प पड्यो उजाड़ में रे, चैन नहीं सुख कांय रे। तिण सर्प री अणुकंपा करी, दूध मिश्री घालो मुख मांय ॥ ७५ ॥ ते सर्प सचेत थयां पछै रे, आडो फिरियो आय। जो ओ-लूंठो हुवै तो उण ने दाब दे रे। काचो हुवै तो दे डंक लगाय ॥ ७६ ॥ सर्प सरीषा अविनीत मानवी रे, एकल फिरै ज्यूं ढोर रुलियार रे। तिणने समकित चारित्र पमाय ने रे, कीधो मोटो अणगार ॥ ७७ ॥ एहवो उपगार कियो तिको रे, तत्काल भूले अविनीत उलटा अवगुण बोलै तेहना रे. उणरे सर्प वाली छै रीत ॥ ७८ ॥ आहार पाणी वस्त्रादिकारणै रे, ते पिण झूठो झगड़ो जोय। इण रे ऊपरलो हुवे तो दाबै डंक दे, आघो काढै तो उलटो भांड़े सोय ॥ सर्प ने मिश्री दूध पायां पछै रे, डंक दे ते गैरी सर्प देख। ज्यूं ओ समकित चारित्र लियां पछै रे, हुवो

साधां रो वैरी विशेष ॥ ८० ॥ बले खाणा पीणा रो हुवे लोलपो रे, आप रो दोष न सूझै मूल। छेड़-वियां सूं स्हामो मराडे, बलि क्रोध करै प्रतिकूल ॥८१॥ तिण ने दूर करै तो दुश्मण थको रे, वोले घणुं विप-रीत। असाध परूपै सगला साधने, तिण रे गैरो सप नी रीत ॥ ८२ ॥ सुगुरा साप ने दूध पायां थकां रे, ओ करै पाछो उपगार। तिण ने धन देई धनवंत करै रे, बले दीठां हुवै हर्ष अपार। सु०। भाव सुणो सुविनीत रा रे लाल ॥ ८३ ॥ केई आप छांदे फिरै एकला रे, पिण सरल प्रणामी शुद्ध रीत रे। तिणने समझाय समकित चारित्र दियो रे, ते आज्ञा पालै रूड़ी रीत ॥ ८४ ॥ तिण रे समकित ने संजम विहुं रे, रुचिया अभ्यंतर सार। चलावै ज्यूं चालै छान्दो रूंध ने रे. ज्यांसूं करै पाछो उपगार।८५। मोटो उप-गार त्यांरो किम विसरै रे, सूंपै सर्व देही त्यांरे काज। त्यांरे दर्शण देख हर्षत हुवै, सर्व काम में धोरी ज्यूं समाज ॥ ८६ ॥ बले गामा नगरां फिरतां थका रे सदा काल करे गुणग्राम। ते सुविनीत गुणग्राही आत्मा रे, त्यांने वीर बखाणया ताम ॥ ८७ ॥ शिष्य सुविनीत ने शोभती रे, उपमा दीधी अनेक। सूत्र न्याय भिक्खु स्वामजी रे, सांभलजो सुविशेप रे ॥

८८ ॥ भद्र कल्याणकारी घोड़े चढ़्यो रे, असवार रे हर्ष आणंद । ज्यूं सीख दियां सुवनीत ने रे, गुरु पासैं परमानंद ॥ ८६ ॥ सुविनीत हय देखी चावको रे, असवार रे गमतो चालंत । चावका रूप वचन लागां विना रे, सुविनीत वर्त्तै चित शान्ति ॥ ६० ॥ अग्निहोत्री ब्राह्मण सेवै अग्नि ने रे, ते घृतादिक सींची करै नमस्कार । सुविनीत सेवै इम गुरु भणी, केवली छतो पिण अधिकार ॥ ६१ ॥ सुविनीत हय गय नर नारी सुखी रे, सुखी देव दानव सुविनीत । ते तो पूर्व पुन्य रा प्रभाव सूं रे, दीसैं लोक में विनय सुरीत ॥ ६२ ॥ केई पेट भराई शिल्प कारणे, संसार ना गुरु कने सोय । राजादिक ना कुंवर डांडादिक सहैं रे, करडा वचन सहै नर्म होय ॥६३॥ तो सिद्धन्त भणावे ते सत गुरु तणी रे, किम लोपै विनयवंत कार । समगत चारित्र पमावियो रे, ओ उत्कृष्टो उपगार ।६४। धर्म रूप वृक्षरो विनय मूल छै, बीजा गुण शाखादिक सम जाण । तिण सूं शीघ्रवृद्धि कीर्त्ति सूत्र नी रे, दशवैकलिक नवमा रे दूजे वाण ॥ ६५ ॥ वृक्ष रो मूल सूकां छतां रे, शाखा पान फलादि सूक जाय । ज्यूं विनय मूल धर्म विणासियां रे, सगलाई गुण विललाय ॥ ६६ ॥ एहवो विनय गुण वर्णव्यो

रे, सांभल ने नर नार। अविनय ने अलगो करो रे. करो विनय धर्म अंगीकार॥ ६७॥ अविनीत रा भाव सांभली रे, अविनीत बहु दुख पाय। केई कुगुरु सुध बुध बाहिरा रे, ते पिण हर्षत थाय॥६८॥ विनीत रा गुण सांभली रे, विनीत रे आनंद ओ छाव। तो पिण कुगुरु हर्षत हुवै रे, विनय करावण चाव॥ ६६॥ जे समझे नहीं जिन धर्म में रे, आज्ञा ओलखै नांय। ते व्रत विहुंणा नागड़ा रे, प्रत्यक्ष प्रथम गुण ठाणो देखाय॥ १००॥ हाल देखी हंसली तणी रे, बुगली पिण काढ़ी चाल। पिण बुगली सूं चाल आवै नहीं रे, ए दृष्टान्त लीजो संभाल॥ १०१॥ कुगुरु साध ने देखी करी रे, ते पिण करवा लागा अभिमान। आडंबर कर विनय करावता रे, नहिं श्रद्धा आचार नुं ठिकाण॥ १०२॥ कोयल रा टहुकार सुणी करी रे, कां कां शब्द करै काग। शोभाग सुण सतियां तणा, कूढे असतियां अथाग॥ १०३॥ सांगधारी कुसतियां काग सारीषा रे, अशुद्ध श्रद्धा आचार रे माहि। ठाला बादल ज्यूं थोथा गाजता रे, विनय करावता लाजै नाहिं॥ १०४॥ गेवर नी गति देखने, भूसै स्वान ऊंचा कर कान। ज्यूं भेषधारी देखी साधने रे, स्वान ज्यूं कर रह्या तान॥

॥ १०५ ॥ ते पिण विनय करावण रा भूखा घणा, साधी सीप सिंगोल्यां रा सोय। मिथ्यादृष्टि ते मूलगा रे, त्यां ने ओलखे बुद्धिवंत लोय ॥ १०६ ॥ त्यां ठाम २ थानक बांधिया, थापै जीव खवांयां पुन्य। ते पिण नाम धरावै साधरो, सवलो न सूझै समकित सून्य ॥ १०७ ॥ पोपां बाई रा राज में, नव तूंबा तेरै नेगदार। ज्यूं विकल सेवका स्वामी मिल्या रे, एहवो भेषधार्‍यां रे अंधार ॥ १०८ ॥ वस्त्र पात्र अधिका राखता रे, आडा जड़े किंमाड़। मोल लिया थानक माहें रहे, इसड़ी थाप निरंतर धार ॥ १०९ ॥ आज्ञा बारै पुन्य श्रद्धता, आज्ञा में पाप समाजं। काचो पाणी पायां पुन्य श्रद्धता रे, प्रत्यक्ष पोपां बाई रो राज ॥ ११० ॥ ते समझ न पड़े श्रावकां भणी, ज्यांरा मत माहें मोटी पोल। पिण आंधा ने मूल सुझै नहीं, तांबा ऊपर झोल ॥ १११ ॥ कुगुरु निषेध्यां अविनीतड़ो, ऊंधा अर्थ करै विपरीत। ते सत गुरुने कुगुरु कहै, नहिं विनय करण रो नीत ॥११२॥ उण सूं विनय कियो जावै नहिं, तिण सूं बोले कपट सहित। कहै विनय कह्यो छै शुद्ध साधनो रे, इण रे अंतर खोटी नीत ॥ ११३ ॥ साधांने असाध सरधायवा रे ला०, बोलै माया सहित। तिणने बुद्धिवंत

हुवै ते ओलखे रे, ओ पूरै मतै अविनीत ॥ ११४ ॥ कहे आचार में चूके घणा घणा रे. म्हां सूं विनय कियो किम जाय । ते बुद्धिहीण जीव बापड़ा रे, न जाणै सूत्र न्याय ॥ ११५ ॥ बुकस पड़िसेवण भेला रहे रे, अवधि मनपर्यव केवल अवंक । ते भेला आहार करता शंके नहीं, इणने विनय करता आवै शंक ॥११६॥ देखो अंधारो अविनीत रे रे, निज अव-गुण सूझे नांय । विनय नो गुण पोते नहीं, तिणसूं पर तणां औगुण देखाय ॥ ११७ ॥ दर्शण मोह उदय घणुं, पूरो विनय कियो नहीं जाय । ओलखे अवगुण आपरो, ए उत्तम पणो सुहाय ॥११८॥ ते कहै केवली बुकस भेला रहे, मोह बल्यो तिण सूं नावे लहर । लहर आवै चित्त थिर नहीं, ते जाणै निज कर्म रो जहर ॥ १६ ॥ बुकस पड़िसेवण कदे नहिं मिटै रे, तीनूं ही काल रे मांय । दोय सौ क्रोड़ सूं घटै नहीं, चित्त अथिर सूं ते न मिटाय ॥ १२० ॥ ज्यांरे सूत्र तणी नहीं धारणा, अति प्रकृति घणी अजोग रे । ते थोड़ा में रंग विरंग हुवै रे, मोटो दर्शण मोह रोग ॥ १२१ ॥ कै कांरे दर्शण मोह तो दिसै घणो. पिण सैण घणा बुद्धिवान । ते गुरुने सुणाय निशंक हुवै रे, ज्यांरे समकित रो जोखो मति जाण ॥१२२॥

दोष री थाप गुरां रे नहीं, दोषरा डंडरी थाप। और री कीधी थाप हुवे नहीं; इम जाण निशंक रहे आप ॥ १२३ ॥ इम सांभल उत्तमा नरां रे, राखो देवगुरा नी प्रतीत। ओसता राख आगै घणा, गया जमारो जीत ॥ १२४ वर्ण नाग नतुआ तणो, मित्र तर्‍यो प्रतीत सूं पेव। ते उत्तम पुरुषां री प्रतीत सूं, तिरया तिरे ने तिरसी अनेक ॥१२५॥ भिक्खु स्वाम कह्या भला, दीपता वर दृष्टन्त। केयक तो सूत्रे करी, केयक बुद्धि उपजंत ॥ १२६ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी स्वाम भिक्खु नी सार॥ स्वाम गुणा नो पोरसो, स्वाम शासण शिणगार ॥ १२७ ॥ स्वाम दिसावा न दीपतो, स्वाम तणो वर नीत। आसता तास न आदरै ते अपछंदा अविनीत ॥ १२८ ॥ भिक्खु दीपक भरत में, प्रगट्यो वहु जन भाग। स्वाम भिक्खु गुण संभरूं रे आणै हर्ष अथाग ॥ १२९ ॥ ढाल भली इकचालीसमी. आख्या दृष्टन्त अनेक। भिक्खु स्वाम प्रसाद थी, जय जश करण विशेष ॥ १३० ॥

॥ दोहा ॥

इत्यादिक दृष्टान्त अति, सूत्र न्याय वलि सार।
सखरा मेल्या स्वामजी, भिक्खु बुद्धि भण्डार ॥ १ ॥

अणुकम्पा रे ऊपरे, करणो पढ़म गुण ठाण ।
इन्द्री वादि ऊपरे, बहु दृष्टान्त बखाण ॥ २ ॥
पोत्थाबंध ऊपर प्रत्यक्ष, प्रज्ञावादि पिछाण ।
कालवादी की चौपई, दृष्टान्त त्यां बहुजाण ॥ ३ ॥
व्रत अव्रतरी चौपई, अरु श्रद्धा आचार ।
जिण आज्ञा पर युक्ति सूं, सखरा हेतू सार ॥ ४ ॥
टीकम डोसी कच्छ नो, सूक्ष्म पूछा सोय ।
जाब दिया अति जुक्ति सूं, आप भिक्खु अवलोय ॥ ५ ॥
भिक्खु नाम कह्यो भलो, सूत्रां में बहु ठाम ।
भेदै कर्म भणी भलो, गुण निष्पन्न तुझ नाम ॥ ६ ॥
पंच महाव्रत अंक पंच, बार व्रत ना बार ।
अव्रत बारै अंक धर, त्रि कर्ण जोग प्रकार ॥ ७ ॥
इण विध मांड बतावता, हेतु न्याय अनेक ।
आप देखाया अधिक ही, वर्णवे केम विशेष ॥ ८ ॥
दाख्या ते दृष्टान्त नो, संकलना सुविशाल ।
कहूं छूं संक्षेपे करी, शुचा मात्र संभाल ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४२ वीं ॥

(डाव मूंजादिक नो ढोरी० ए देशी)

पांच सौ मण चणा पिछाण, पंच सिरयां हेत ते जाण १ डोकरा ने चणा सेर दीधूं, पीस पोय जल सूं तृप्त कीधूं २ ॥ १ ॥ आखा पजुसण में म्हाल, चौड़े परंपरा थित चाल ३ माता वेश्या ने तें जल पायो, पाप छै पिण सरीषा न थायो ॥ २ ॥ तिम श्रावक साईं न सरिषो, पाप सुणी कोई मत

भिड़को ४ ॥ चद्दर ले गयो तसकर एक, एक दीधी प्रायछित किण रो संपेख ५ ॥३॥ थंारा धणी रो नाम नाथू होय, कहै क्यांने नाथू हुवै सोय ६ मूला दियां कांई हुवे त्यांने, पूछ्यो अमरसिंघजी रा साधां ने ॥ ४ ॥ पड़िया तसकर ने आफू खवायो, ते तो सेठ नो वैरी छै तायो ८ खेत पाक्यां कारसणी रे वालो तिण रो रोग मेट्यां फल न्हालो ६ ॥ ५ ॥ ममता उतरी कहै प्रसिद्धि, दश वींगा खेती किणने दीधी १० सावज दानरा तू करै त्याग, म्हाने भांडवा ने के वैराग ११ ॥ ६ ॥ जल लोटो सूंपजो म्हारे हाट ज्यूं पुन्य कहै सांनी रे वाट १२ पड़िमाधारी ने दियां सूं होय, लेणवाला ने ते अवलोय १३ ॥ ७ ॥ कोई काचो पाणो किणने पावै कोई पारकी खाई लुटावै। ४ धन दियो अव्रतीने ताहि, लाय मां सूं न्हाख्यो लाय माहि १५ ॥ ८ ॥ घृत तम्बाकू भेला न मेल, ज्यूं व्रत अव्रत में नहीं भेल १६ आंख जीभ औषध रो दृष्टन्त, व्रत अव्रत ऊपर उपजंत १७ ॥ ६ ॥ शोर अग्नि न्यारा सूं न नाश, ज्यूं व्रत अव्रत जुजूवा तास १८ सोमल मिश्री पसारी रे न्यार, व्रत अव्रत जुवा विचार १६ ॥ १० ॥ कहै गृहस्थ रा है छंद छांदा में धूल है मंद २० खांड घृत मेदो खरा होय ,ज्यूं

चित्त वित पात्र सुजोय २१ ॥ ११ ॥ थाने असाध जाण ने दियो दान, उत्तर खाधो मिश्री विष जान। २२ आक थोर रो दूध अशुद्ध। २३ सावज दया अनुकंपा न शुद्ध २४ ॥ १२॥ लाय बुझायां मिश्र थापंत, तो नार मारयां न पाप एकंत २५ बले करुणा घणा री आण, कसाई ने मारयो मिश्र जाण २६ ॥ १३ ॥ बले उरपुरने मारे विशेष, तिण में पिण मिश्र छै त्यांरे लेख २७ बले अटवी बालतो जाण, तिण ने मार्यां मिश्र क्यूं न माण २८ ॥ १४ ॥ कतल करता तुर्कादिक ताय, तिणने मारयां मिश्र त्यांरे न्याय २९ गायांदिक हिंसक जीव संघारे, त्यांने मारयां मिश्र क्यूं नहिं धारे ३० ॥ १५ ॥ फांसी काढ़े ते धर्मी कहिवायो, तो थारा गुरु न काढ़े किण न्यायो ३१ चोर ग्यारह में एक छुड़ायो, तिण रो सेठ प्रत्यक्ष फल पायो ३२ ॥ १६ ॥ उरपुर खाधो उजाड़ रे मांयो, मंत्रबादि झाड़ो दे बचायो ३३ साधां सुणायो श्री नवकार, आज्ञा में किसो छे उपगार ३४ ॥ १७ ॥ साहुकार नी स्त्रियां दोय, एक रोवै न रोवै ते जोय। कहो साधुजी किणने सरावै, संसारी रे मन कुण भावै ३५ ॥ १८ ॥ मोहकमसिंहजी पूछयो महाराज, आप गमता लागो किण काज। नारी हर्षे कासीद

ने निरख, तिम शिव मग नो थांरे हर्ष ३६ ॥ १६ ॥
तुझ अवगुण काढ़ै है ताय ३७ थारो मुंहड़ो देख्यां नर्क जाय ॥ ३८ ॥ ताकड़ी डांडी रो दृष्टान्त ३९ कहै उघा भणी वादंत ४० ॥ २० ॥ गुणगोली सीरा सूं शोभाय ४१ एक भांगां पांचूं किम जाय ४२ करो थानक में कद आख्यो ४३ सीरो करो जमाई न दाख्यो ॥ २१ ॥ सखरी मुझ करो सगाई । डावरे कद कह्यो थो ताहि ४४ जति रो उपासरो कहाय, मथेणा रे पोशाल है ताय ४५ ॥ २२ ॥ झालर सुण स्वान रुदन करंत, विहाव री मुर्वारी न जाणंत ४६ दुःखनी रात्रि मोटी देखाय, सुख नी रात्रि छोटी दीसे ताय ४७ ॥ २३ ॥ गाम रे गोरवें खेती वाही, गधा न पड्यां तो तें ठहराई ४८ करड़ा दृष्टान्त कह्यो किण न्याय, करड़ो रोग फूं जाल्यां न जाय ४९ ॥ २४ ॥ गोहां री दाल हुवै नाहिं, अल्प बुद्धि न समझे ताहि । ५० आपरी भाषा नहिं ओलखाय, पोते लिख्यो वाच्यो नहिं जाय ५१ ॥ २५ ॥ गौ पग डांडी पाखंड मग ताहि, जिण माग रस्तो पात शाही ५२ पाग चोरी मुदो न पोंचाय, झूठो ठाम २ अटक जाय ५३ ॥ २६ ॥ साधां सूं स कशायो सोय, भाग्यां साध ने पाप न होय । कपड़ो वेच नफो लियो

सार ५४ साधु ने घृत दियो उदार ५५ ॥ २७ ॥
बैरागी बैराग चढ़ावै, कसूंबो गलियां रंग पमावै
५६ कहै म्हे जीव बचावा ए ठागो, चोकी छोड़
चोरयां करवा लागो ५७ ॥२८॥ ऋषपाल जिम छै
तिम राखे, पूगे न पलै पंचम काल भाषे ५८ तेलो
तीन दिना रो ते काल, हिवड़ां पिण तीन दिवस
नो न्हाल ५९ ॥ २९ ॥ दीख्या लेऊं पिण आसं तो
आय, जमाई रोयां शोभ न पाय ६० बाल बिधवा
देखी लोक रोय, तिण रा काम भोग बांछै सोय ६१
॥ ३० ॥ डावरा रे माथे दियां द्वेष, लाडू दियो ते
राग संपेख ६२ जाटणी रो उदक जाच्यो जाय,
चारो निरखां दूध दे गाय ६३ ॥ ३१ ॥ और गण रो
थारे मांय आय, तिण ने दीख्या देई लेवो मांय ६४
नरक में जाय कुण तसु तारो, पथर ने कुवे तले कुण
आणै ६५ ॥३२॥ कुण स्वर्ग लेजावे ताय, काष्ठ जल
पर कुण ठहराय ६६ पइसो डूबै बाटकी तिराय,
संजम तप सूं हलको थाय ६७ ॥ ३३ ॥ पात रे रंग
कुंथवा दोहरा, काला लाल सूं देखणा सोहरा ६८
म्हारे केलु सूं रङ्गवा रा भाव, कच्चा केलु छोड़े किण
न्याव ६९ ॥ ३४ ॥ कुजागां रा करै एक माथे, एक
कर्ज मेटे निज हाथे ७० चोर हिंसक कुशीलिया

तीन. त्यांरा तीन दृष्टान्त सुचीन ॥ ७३ कीड़ी ने कीड़ो जाणै ते नाण, पण कीड़ो ज्ञान मति जाण ७४ साधु थाका ने गाडे बेसाण, किणही गधै बेसा-णयो जाण ७५ ॥ ३६ ॥ पुन्य मिश्र ऊपर अवलोय किण री एक फूटी किण रीं दोय ७६ पोल बारी खोली दीसां बार, देखो हेम ने उत्तर उदार ७७ ॥ ३७ ॥ थोथा चणा रो भखारी विख्यात, ऊंदग रड़ बड़ की सारी रात ७८ कोयलां रो राब वासण काला, बलि आंधा जीमण परुसण वाला ७६ ॥३८॥ तार काढो काढ़े तार कांड़, थाने डांडा ही सूझै नाहीं ८० वाय बंग घरटी उडै जाय, दोष थाप्यां संजम किम ठहराय ८१ ॥ ३६ ॥ एकलड़ो जीव कहो किण लेख, त्यांरे लेखे ही चौलड़ो देख ८२ वस्त्र राख्यां सी परीसह थी भांजे, तो अन्न सूं प्रथम रहे किण लाजे ८३ ॥ ४० ॥ श्वेताम्बरी शास्त्र थी घर छंड, तिण सूं राखां छां तीन सुडण्ड ८४ अनार्य कहे दया ने रांड, करै कपूत माता ने भांड ८५ ॥ ४१ ॥ डाकणियां डरै गारडू आयां, साधु आयां पाखण्डी भय पाया ८६ कड़वा पकवान जुर सूं कहाय, मिथ्या जुर सूं साधु न सुहाय ८७ ॥ ४२ ॥ बांधी वाल्यां किम तेजरा तोड़ै, चारित्र बैराग विण

किम जोड़ै ८८ दियो तीन नावा रो दृष्टान्त, सुगुरु कुगुरु ऊपर शोभन्त ८९ ॥ ४३ ॥ भेषधारी पिण तप करे ताय, मोटो देवालो केम मिटाय ९० बणी बणाई ब्राह्मणो री बात, साम्प्रत तिण रा साथी साख्यात ९१ ॥ ४४ ॥ सूत्र बाचे छेहड़े हिंस्या थापै, छेहड़े मोरचा मारू ज्यूं किलाप ९२ पत्थर खोस्यां तिण ने कांई होय, तिण रे हाथ आयो ते तूं जोय ९३ ॥४५॥ खेमा साहरा घर रो नेहतो होय, द्रव्य साध या ने कहां सोय ९४ साध असाध कुण कहो वाय, नागा ढकिया कितरा गाम मांय ९५ ॥ ४६ ॥ वले कुण देवाल्यो साहुकार, लखण बनावूं करजो विचार ९६ दियो कुणकां पर पग तीन चार, खामी छै पिण तिण सूं न प्यार ९७ ॥ ४७ ॥ दियो सेतखाना रो दृष्टान्त, छिद्र पेही उतर दाखन्त ९८ हेम पछे-वड़ा कहि अधिकाय, तिण ने कठिण सीख समझाय ९९ ॥ ४८ ॥ शोभाचन्द ने कह्या शुभ न्याय, पाषाण ने सोनूं न कहाय १०० नेहत मांगो आप किण न्याय सुता ब्याव में मित्र बोलाय १०१ ॥ ४९ ॥ अविनीत त्रिया ने पिछाण, अविनीत साधु ऊपर जाण १०२ कह्या संखेप थी अल्प मात, पाछै वर्णवी सगली बात ५० चौपी विनीत अवनीत री तास, आसरे

तिण सूं हेतु पचास । ते इकतालीमी ढाल में आख्या, तिण कारण इहां न भाख्या ॥ ५१ ॥ इत्यादिक कह्या हेतु अनेक, पूग कह्या न जाय विशेष । हूवा भिक्खु उजागर ऐसा, साम्प्रत काल में श्रीजिन जैसा ॥५२॥ तसु भजन चिंतामण सरखो, प्रत्यत्त पारश भिक्खु परखो । म्हारे प्रबल भाग्य प्रमाण, इणकाल अवतरिया आण ॥ ५३ ॥ नित्य स्मरण कर नर नार, सुख सम्पति कारण सार । दुःख दोहग टालणहार, इह भव परभव सुखकार ॥ ५४ ॥ निर्मल ज्ञान नेत्रे करी निरखो, पूज भिक्खु विविध कर परखो । वर पूरो है तसु विश्वास अति वंछत पूरण आश ॥५५॥ बयालीसमो ढाल विमास, शुद्ध दूजो खण्ड सुप्रकाश । स्वामी जय जश करण सुहाया, प्रबल भाग वले भिक्खु पाया ॥ ५६ ॥

॥ कलश ॥

दृष्टन्त वारु अधिक सारु, स्वामनाज सुहामणा । भव उदधि तारण जग उद्धारण, ऋष भिक्खु रलियामणा ॥ सुख वृद्धि सम्पति दमन दम्पति, भ्रम भंजन अति भलो । हद बुद्धि हिमागर सुमति सागर नमो भिक्खु गुण निलो ॥ १ ॥

तृतीय खण्ड ।

सोरठा ।

आख्यो द्वितीय खण्ड रे, अति आउसों प्रणमें ।
मुनि वर्णन महिमण्ड रे, तीजो खण्ड निसुणो तुम्हें ॥ १ ॥

वेणीरामजी स्वामी कृत ।

॥ दोहा ॥

चारित्र लीधो चूंप सूं, पाखण्ड पन्थ निवार ।
भवियण रे मन भांवता, हुवा मोटा अणगार ॥ १ ॥
उदे २ पूजा कही, समण निग्रन्थ नी जाण ।
तिण सूं पूज प्रगट थया, ए जिन वचन प्रमाण ॥ २ ॥
उपम तो आछी कही, समण निग्रन्थ ने श्रीकार ।
चौरासो अति दीपती, सूत्र अनुयोग द्वार मझार ॥ ३ ॥
वले दशमा अंग अधिकारमें, कही तीस उपमा तंत ।
समणी भिक्षु ने शोभती, भाख गया भगवंत ॥ ४ ॥
वले षटदश उपमा, बहु श्रुतिने श्रीकार ।
उत्तराध्ययन इग्यार में, श्री वीर कह्यो विस्तार ॥ ५ ॥
इण अनुसारे ओलखो, भिक्खु ने भली भंत ।
उपमें गुण आछा घणा, त्यांरो पार न कोई पामंत ॥ ६ ॥
गुणवन्त गुरु ना गुण गांवतां, तीर्थंकर नाम गौत बन्धाय ।
हिवैं उपमें सहित गुण वर्णवूं, ते सुणज्यो चित्तलाय ॥७॥

॥ ढाल ४३ मी ॥

(हरिया ने रंग भरिया जी निला जिन निरखूं नेण सूं ए देशी)

आदिनाथ आदेश्वरजी, जिनेश्वर जग तारण गुरु, धर्म आदि काढी अरिहन्त। इण दुषम आरै कर्म कटिया जी, प्रगटिया आदि जिणन्द ज्यूं, ए इचरज अधिक आवन्त ॥ श्याम वरण अति सोहैजी, मन मोहै नेम जिणन्द ज्यूं, ज्यांरी वाणी अमीय समान। भवियण रे मन भायाजी, चित्त चाह्या तीरथ चारमां, मुनि गुण रत्नारी खाण ॥ साध भिक्खु सुखदायाजी मन भाया भवियण जीवने ॥ १ ॥ कालवादी आदि जाणीजी मत आणी मार्ग उथापवा कुबध्यां केलविया कूड़। ऐ पाखण्ड घोचा पोचाजी कांई ज्ञान करी गिरवा मुनि, चरचा कर किया चकचूर ॥ साध० ॥ २ ॥ शंख उज्वल ओकारीजी, पयधारी दोनूं दीपता, नहीं बिगड़ै दूध लिगार। ज्यूं थे तप जप क्रिया कीधी जी, कर लीधी आतम उजली, पय दश यति धर्म धार ॥ ३ ॥ कंबोज देश नो घोड़ोजी, अति सोरो करै सिरदार ने, नहीं आणै अहिल लिगार। ज्यूं भवियण ने थे तारयाजी, उतारया पार संसार थी, सुखे जासी मोख मझार ॥ ४ ॥ शूर शिरोमण साचोजी, नहीं काचो लड़ता

कटक में, सूत्रनीत अश्व असवार। ज्यूं कर्म कटक दल दीधो जी, जश लीधो जाभ्को जगत् में, चढ़ सूत्र अश्व श्रीकार ॥ ५ ॥ हाथी हथराया परवारै जी, बल धारै दिन २ दीपतो, बधै साठ वर्ष शुद्ध मान। ज्यूं तयाली वर्ष लग जाभ्काजी, तप ताजा तेज तीखा रह्या, प्राक्रम पिण परधान ॥ ६ ॥ बृषभ सिंह खंध भारो जी, सिरदारी गायां गण मभ्के, थेट भार बहै भली भंत। ज्यूं थे गण भार थेट निभायाजी, चलाया तीरथ चूंप सूं, सहु साधां में शोभंत ॥ ७ ॥ सिंह मृगादिक नो राजा जी, तप ताजा दाढ़ा तेज सूं, जीव न जीपै जोय। ज्यूं आप केशरी नो परै गुंज्या जी, धूज्या पाखण्डी धाक सूं, थाने गंज सक्यो नहीं कोय ॥ ८ ॥ वासुदेव बल जाणोजी, बखाण्यो वीर सिद्धन्त में, शंख चक्र गदा धरण हार। थारा ज्ञान दर्शण चारित्र तीखाजी, नहीं फीका त्यांकर तेज सूं पूज्य पाखण्ड दियो निवार ॥ ९ ॥ आखा भरत नो राजाजी, अति ताजा सेन्या सभ्क करो, आणै बैर्यां नो अंत। थे पाखण्ड सहु ओलखायाजी, हटाया बुध्य उत्पात सूं, तत्व बताया तंत ॥ १० ॥ शक्रेन्द्र सिरदारी जी, वज्रधारी सुरमें शोभतो जक्षादिक ने जीपै जाण। जिम सूत्र बज्र श्रीकारीजी, बल धारी

बुध्द उत्पात सूं, पूज्य पाड़ी पाखण्ड री हाण ॥ ११ ॥ आदित्य उग्यो आकाशेजी, विणाशे तिमिर तेज सूं, अधिको करै उद्योत । ज्यूं थे अज्ञान अंधारो मिटा-योजी, बतायो मारग मुगत रो, घण घट घाली जोत ॥ १२ ॥ चंद सदा सुखकारी जी, परिवारी ग्रह नां गण मझे, सोमकारी शोभंत । ज्यूं चार तीरथ सुखदायाजी, मन भाया भवियण जीव रे, भिक्खु भला जशवन्त ॥ १३ ॥ लोक घणा आधारोजी, अति भारी धानांकर भर्यो, ते कोठागार कहाय । ज्यूं ज्ञानादिक गुण भरिया जी, परवरिया पूज्य प्रगट थया, आधार भूत अथाय ॥१४॥ सर्व वृक्षा में अति सोहैजी, मन मोहै दीसै दीपतो, जम्बू सुदर्शण जाण । ज्यूं संता में सिरदारीजी, मतभारी भिक्खु भरत में. उपना इचरजकारी आण ॥ १५ ॥ सीता नदी सिरै जाणीजी, बखाणी वीर सिद्धन्त में, पांच से जोजन प्रवाह । ज्यूं तप तेज अति तीखाजी, नहीं फीका रह्याज फाबता, सदाकाल सुखदाय ॥ १६ ॥ मेरु नी उपमा आछीजी, नहीं काची कही कृपालजी, ते ऊंचो घणुं अत्यन्त । औषध अनेक छाजैजी, बिराजै गुण त्यांमें घणा, ज्यूं औ बहुश्रुति बुद्धवन्त ॥ १७ ॥ स्वयंभूरमण समुद्र रूड़ोजी, पूरो

पाव राज पिहुलो कह्यो, प्रभृत रतन भरपूर। सागर जेम गम्भीराजी, शूरा वीरा गुण कर गाजता, सूत्र चरचा में शूर ॥ १८ ॥ ए षटदश उपम आछीजी, कांई साची सूत्र में कही, बहुश्रुति ने श्रीकार। इण अनुसारे जाणोजी, पिछाणो करल्यो पीरखा, भिक्खु गुण भण्डार ॥ १६ ॥ उपमा अनेक गुण छाज्याजी, बिराज्या गादो वीर नो, पूज्य पाट लायक गुण पाय। समुद्र जेम अथागाजी, जल थाग जिन कह्यो नहीं ज्यूं पूरा केम कहाय ॥ २० ॥ पाट लायक शिष्य भालीजी सुहाली प्रकृति सुन्दरु, भारमलजी गहर गम्भीर। पदवी थिरकर थापीजी, आ आपी आचारज तणी, जाण सुविनीत सधीर ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

भाग वली भिक्खु तणें, संत हुवा गण मांहिं।
वर्णन संक्षेपे पवर, आखूं धर उछाहि ॥ १ ॥
केयक पण्डित मरण कर, कीधो जन्म कल्याण।
कर्म जोग केइयक टल्या, सुणज्यो चतुर सुजाण ॥ २ ॥
बड़ा संत भिक्खु थकी, जनक सुतन वर जोड।
पिता स्वाम थिरपाल जी, फतेचन्द सुत मोड़ ॥ ३ ॥
बड़ा टोला में था बिहुं, राख्या बड़ा सुरीत।
सरल भद्र बिहुं श्रमण शुद्ध, पूरी तसु प्रतीत ॥ ४ ॥
तपसी तप करता बिहुं, शीत उष्ण बरसाल।

बड़ वयरागी विनय वर, रूड़ा मुनि रूपपाल ॥ ५ ॥
निर अहंकारी निर्मला, निरलोभी निकलङ्क ।
हलुआकर्मी उपधि करे, आर्जव उभय अवङ्क ॥ ६ ॥
सीतकाल अति सीत सहै, पछेवड़ी परिहार ।
जन निशि देखी जाणियो, ए तपसी अणगार ॥ ७ ॥
कोटे आप पधारिया, महिपति आवण हार ।
साम्भल ने ते संत बिहुं, तत्क्षण कियो विहार ॥ ८ ॥
निज आतम तारण निपुण, चारु वेपरवाह ।
तप मुद्रा तीखी घणी, चित्त इक शिवपद चाह ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४४ मी ॥

(राणी भाखै हो दासी सांभल वात० ए देशी)

संत दोनूं हो शोभै गुणवन्त नीत २ त्यांसूं प्रीत पूर्ण भिक्खु तणी । भिक्खु सेती हो ज्यांरे पूर्ण प्रीत २ गुण ग्राही आतमघणी ॥ १ ॥ पद आचार्य हो भिक्खु बुद्धि ना भण्डार २ जन बहु देखतां युक्ति सूं । आप मूकी हो पद नो अहंकार २ करजोरी वन्दना करै भक्ति सूं ॥ २ ॥ किण टोला ना हो तुमे संत कहिवाय २ इण विध लोक पूछै घणा । मान मूको हो बोलै बिहुं मुनिराय २ म्हे भीखणजी रा टोला तणा ॥ ३ ॥ प्रश्न चरचा हो त्यांने कोई पूछन्त २ तो संत दोनूं इम भाखता । भिक्खु भाखै हो तेहिज जाणज्यो तंत २ रूड़ी आसता भिक्खु नी

राखता ॥ ४ ॥ म्हाने तो हो पूरो खबर न कांय २ भीखणजी ने पूछी निर्णय करो। शुद्ध जाणो हो तेहिज सत्यवाय २ प्रगट कहै इम पाधरो ॥ ५ ॥ त्यांरा तपनो हो अधिको विस्तार २ कायर सुण कम्पै घणा। अति पामै हो शूग हर्ष अपार २ संत दोनूं ई सुहावणा ॥ ६ ॥ संजम पाल्यो हो बहु वर्ष श्रीकार २ विचरत बरलू आविया। धर्म मूर्त्ति हो ज्ञानी महा गुण धार २ हलुकर्मी हर्षाविया ॥ ७ ॥ शुद्ध तपस्या हो फतेचन्दजी संतोस २ अधिक कियो तप आकरो वारु करणी हो ज्यांरो विश्वावोस २ क्षान्ति गुणे मुनि-वर खरो ॥ ८ ॥ पिता दोधो हो तसु पारणो आण २ ठण्डी धाट बाजरी तणो। फता करले हो पारणो पहिछाण २ सरल पणे कहै सुत भणी ॥ ६ ॥ निर-ममतो हो सुत सन्त निहाल २ प्रगट अपथ्य कियो पारणो। कर गयो हो तिण जोग सूं काल २ सुमति जन्म सुधारणो ॥ १० ॥ एकतीसे वर्ष हो सम्बत अठार २ फतेचन्द फते कर गया। निरमोही हो तात निमल निहार २ थिरचित संजम अति थया ॥ ११ ॥ मुनि आयो हो खेरवा शहर माहिं २ संलेखणा मण्ड-या सही। चिहुं मासे हो पारणा चित्त चाहि २ आसरै चवदे किया वही ॥ १२ ॥ थिर चित्त सूं हो

मुनिवर थिरपाल २ वर्ष बत्तीसे विचारियो। कर तपस्या हो मुनि कर गयो काल २ जीतब जन्म सुधारियो ॥ १३ ॥ जोड़ी जुगती हो नात सुतन जिहाज २ स्वाम भिक्खु रा प्रसाद थी। पण्डित मरणो हो ओतो भवदधि पाज २ पाम्या हे पर्म समाध थी ॥ १४ ॥ सखरी भाषी हो चमालीसमी ढाल २ स्वाम भिक्खु गुण सागरु। बारु करवे हो जय जश सुवि- शाल २ अधिक गुणारा आगरु ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

समत अठारह बतीस में, भिक्खु बुद्धि भण्डार।
प्रकृति देख साधु तणी, लिखत कियो तिणवार ॥ १ ॥
सहु साधांने पूछने, बांधी इम मर्याद।
सुखे संजम पालण भणी, टालण क्लेश उपाधि ॥ २ ॥
पद युवराज समापियो, भारीमाल ने जाण।
सर्व साध ने साधवी, पालज्यो यांरी आण ॥ ३ ॥
भारमलजी री आज्ञा थकी, विचरणो शेषे काल।
चौमासो करिवो तिको, आज्ञा ले सुविशाल ॥ ४ ॥
दीक्षा देणी अवर ने, भारी माल रे नाम।
पिण आज्ञा लीधां बिना, शिष्य न करणो ताम ॥ ५ ॥
इच्छा हुवै भारीमाल री, शिष्य गुरु भाई सोय।
पदवी देवै तेहने, तस्सु आज्ञा अवलोय ॥ ६ ॥
एक तणी आज्ञा मभ्फे, रहिवो रूड़ी रीत।
एहवी रीत परम्परा, बांधी स्वाम वदीत ॥ ७ ॥
टोलामां सूं कोई टलै, एक दोय दे आदि।

धूर्त्त कुगल ध्यानी हुवै, तिणनें न गिणवो साध ॥ ८ ॥
तीर्थ में गिणवो न तसु, चिउं संघ नो निन्दक जाण ।
एहवा ने वान्दे तिके, आज्ञा बार पिछाण ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४५ वीं ॥

(पाड़वा बोल म बोल प देशी)

एहवो लिखत अमाम, सखर मर्यादा हो बांधी स्वामजी । नीचे साधांरा नाम, कठिण संजम ने पालण कामजी ॥ १ ॥ मेटण क्लेश मिथ्यात, थिर चित्त थापण हो मर्यादा थुणी । वारु बुद्धि विख्यात सुगुण सुबुद्धि हो हर्ष पामै सुणी ॥ २ ॥ अपछन्दा अवनीत, दोषण काढ़ै हो इण मर्याद में । कुबुद्धि कहै कुरीत, अवगुण ग्राही हो आत्म असमाधि में ॥ ३ ॥ बिगड़यो पछै वीरभाण, आज्ञा लोप्यां सूं स्वामी अलगो कियो । पाछे कह्यो प्रबन्ध पहिछाण, दर्शण मोह पिण तिणने दबावियो ॥ ४ ॥ टोकरजी तंत-सार, हाजर रहिता हो स्वामी हरनाथजी । संत दोनूं सुखकार, वर जश वारु हो तास विख्यातजी ॥ ५ ॥ भारी माल ने भाल, पद युवराज पूज समापियो संत बड़ा सुविशाल, दम्भ मेटीने हो थिर चित थापियो ॥ ६ ॥ सोम्य मूर्त्ति सुखकार, स्वाम प्रशंस्या अंत्य समय सही । साझ थी संजम सार, कीर्ति हो

आप मुखे कहो ॥ ७ ॥ बगड़ी शहर विशेष, स्वाम टोकरजी हो संथारो लियो। देश ढुंढार में देख रे, हद संथारो हरनाथजी कियो ॥ ८ ॥ स्वाम भिक्खु रे प्रसाद, संत दोनूं हो जन्म सुधारियो। उपजे मन अहिलाद, स्मरण साचो अति सुखकारियो ॥ ९ ॥ भारीमाल युवराज, सेवा स्वामी नो अन्त नांई शिरै। पद्वीधर भव पाज, अणशण आछो वर्ष अठन्त रे ॥ १० ॥ लिखमेंजी संजम लीध, कर्म प्रभावे गण सूं न्यारो थयो। पड़िवाई कहो कद सिद्ध, देसुण अध पुद्गल हो उत्कृष्ट जिन कह्यो ॥ ११ ॥ अखैरामजी सु मराड, स्वाम भिक्खु पै संजम आदर्यो। भेष-धार्यां ने छंड, शुद्ध मन सेती यो पवर चरण धर्यो ॥ १२ ॥ पोरख जाति पिछाण, पारख साची हो थे पूर्ण करी। लोहावट ना सुजाण, चरण अराध्यो हो थिर चित्त आदरी ॥ १३ ॥ धर तप छेहड़े धिन, छतीस तेला चोलामें चलता रह्या। अखै दीवाली दिन, वर्ष इकसट्ठ परभव में गया ॥१४॥ अमरोजी छूटक धार, पंच काया थी अभवी अनन्त गुणा। अभवी थी अधिकार, ज्ञानी देवां भाख्या पड़िवाई अनन्त गुणा ॥ १५ ॥ संत बड़ा सुखराम, वासी लोहावट ना पोत्यावंध सही। समझाया भिक्खु

स्वाम, सुरतरु सरीषो हो चरण लियो सही ॥ १६ ॥ देव मूर्त्ति सम देख, धुनि इर्या नी हो निर्मल धारणा । वारु वर्ण विशेष, सोम्य प्रकृति महा सूख कारणा ॥ १७ ॥ आसरै बयालीस वास, निर्मल चारित्र हो स्वामी गुण निलो । बासठे वर्ष विमास, दिवस पचीने अणशण अति भलो ॥ १८ ॥ स्वाम भिक्खु साख्यात, तत्व ओलखाई बहुजन तारिया । वर्णविये सुवात, स्वाम सोभागी महा सुखकारिया ॥ १६ ॥ समरूं हूं दिन रैण, याद आयां सूं हो हिवड़ो उल्लसे । चित्त माहिं पामूं चैन, बंछित पूर्ण तू मुझ मन बसै ॥ २० ॥ पांच चालीसमी ढाल, श्रमण शोभाया हो भजन बंछित फलै । जय जश करण विशाल, स्मरण सम्पत्ति मन चिन्तत मिलै ॥२१॥

सोरठा ।

छुटक तिलोकचन्द रे, वासी चेलावासरा ।
चन्द्रभाण कर फन्द रे, जिलो बांध ने फटाविया ॥ १ ॥
मौजीराम गण माहिं रे, शुद्ध मन सूं संजम लियो ।
कर्मा दियो धिकाय रे, ते पिण छुटक जाणज्यो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शिवजी स्वामी शोभता, स्वाम तणा सुवनीत ।
पण्डित मरण कियो पवर, गया जमारो जीत ॥

सोरठा ।

जाति चौरड़िया जाण रे. पुरना वासी पिछाणज्यो ।
चारित्र चन्द्रभाण रे, शुद्ध मन सूं संजम लियो ॥ १ ॥
भण्या बुद्धि भरपूर रे, पिण प्रकृति अहङ्कारनी ।
अविनय अवगुण भूर रे. आज्ञा कठिण आराधवी ॥ २ ॥
जिलो बांधियो जाण रे, तिलोकचन्द सूं तुरत ही ।
मन में अधिको मान रे, साध फंटाया अवर ही ॥ ३ ॥
संत अवर समझाय रे, स्वाम भिक्खु सिंह सारिषा ।
एक २ ने ताहि रे, छोड्यां विहुं ने जु जुआ ॥ ४ ॥
अवगुण अधिक अजोग रे, त्यां बोल्या भिक्खु तणा ।
प्रत्यक्ष कषाय प्रयोग रे, असाध प्ररूप्या स्वाम ने ॥ ५ ॥
भिक्खु बुद्धि भण्डार रे, शुद्ध मन सूं समझाविया ।
प्राश्चित कर अङ्गीकार रे, पाछा आया गण मझे ॥ ६ ॥
सहु ने किया निशङ्क रे, आया डंड अंगीकरी ।
विरुओ यामें वंक रे, प्रत्यक्ष लोकां पेखियो ॥ ७ ॥
श्रमणी संत समाध रे, किण ने डंड न ठहरावियो ।
सहु ने कह्या असाध रे, त्यांराहिज पग वांदिया ॥ ८ ॥
मान घणो घट माहिं रे, विगड़ो तिण सूं वातड़ी ।
प्राश्चित नहीं ले ताहि रे, विहुं ने साथे छोड़िया ॥ ६ ॥
वर्णन वहु विस्तार रे, रास माहिं भिक्खु रच्यो ।
अल्प इहां अधिकार रे, दाख्यो मैं प्रस्ताव थी ॥ १० ॥
अणन्दे बिना विचार रे, संथारो कीधो सही ।
चौविहार चित्त धार रे, गाम विठौरे पूज्य गण ॥ ११ ॥
उपनी तृषा अपार रे, सतरै दिन सूं निसलो ।
सेणा करै संधार रे, तिण सूं पहिलां तोल ने ॥ १२ ॥
पनजी छुटक पेख रे, संतोकचन्द शिवराम ने ।

चन्द्रभाणजी देख रे, दोनूं भणी फंटाविया ॥ १३ ॥
केई पोते हुवा न्यार रे, केइकां ने दूरा किया ।
अपछन्दा अवधार रे, त्यांने चारित्र दोहिलो ॥ १४ ॥

॥ ढाल ४६ मी ॥

(करकसा नार मिली० ए देशी)

नीत निपुण नगजी नी निर्मल, कुड़थां ना बस-वान । संथारो कर कारज सार्यो, कियो जनम किल्याण ॥ सुवनीत शिष्य आय मिल्या । धन्य २ हो भिक्खु थांरा भाग्य, सुखदाई शिष्य आय मिल्या ॥ १ ॥ स्वाम राम बून्दी ना वासी, जाति श्रावकी जाण । जुगल जोडले दोनूं जाया, सोम्य भद्र सुवि-हाण ॥ सु० ॥ २ ॥ करि मनसोवो आया कैलवे, पूज भिक्खु पै ताम । आज्ञा राम भणी आपी ने, संजम दिरायो स्वाम ॥ ३ ॥ इह अवसर में श्रीजी द्वारे, साह भोपो सुत सार । नाम खेतसी निर्मल नीको, थयो संजम ने त्यार ॥४॥ दोय व्याह पहिली कर दीधा, तीजो करता त्यार । उत्तम जीव खेतसी अधिको, इणरे वंछा न लिगार ॥ ५ ॥ बहिन दोय रावलियां व्याही, जाय तिहां किण वार । बेन बनोई न्यातीलां ने, समझावै सुखकार ॥ ६ ॥ बिणज करत मुख जयणा विध सूं. बर वैराग बधाय । चित्त चारित्र

लेवा चढ़तो, आज्ञा मांगो नहीं जाय ॥ ७ ॥ इसा विनीत तात ना अधिका, इतले तिण पुर माहीं। संजम ले रंगुजी सती, सांभल्या भोपै साह ॥ ८ ॥ भोपो साह कहै खेतसी भणी रे, चिंत तुझ लेण चरित्र। कहै खेतसी बेकर जोड़ी, मुझ मन अधिक पवित्र ॥ ९ ॥ आज्ञा हर्ष धरी ने आपी। बदै भोपो साह बाय। रंगुजी भेला करो रे, इणरा महोत्सव अधिकाय ॥१०॥ अड़तीसै संजम आदरियो, भिक्खु ऋष रे हाथ। बिहार करी कोठारे आया. लारै तो चल गयो तात ॥ सु० ॥ ११ ॥ भिक्खु पूछ्यां सत जोगी भाखै, मन चिन्ता किम मोय। पहिली उत्रे अब आप मिलिया, पिय विरह पड्यो नहीं कोय ॥ सु० ॥ १२ ॥ परम विनीत खेतसी प्रगट्या, स्वाम भणी सुखकार। कार्य भलायां बेकर जोड़ी. तुर्त करण ने त्यार ॥ सु० ॥ १३ ॥ कोमल कठिन वचन करि भिक्खु, सीख दिये सुखकार। क्षान्ति हर्ष कर धरै खेतसी, तहत बचन तंतसार ॥ १४ ॥ हर्ष धरी रहै भिक्खु हाजर, अन्तरंग प्रीत अपार। सेवकरी रिझाया स्वामी, सो जाण लिया तंतसार ॥ सु० ॥ १५ ॥ सतजुग सरिषा प्रकृत विनय सूं, निर्मल सतजोगी नाम। गण आधार खेतसी गिरवो, सरायो भिक्खु

स्वाम ॥ सु० ॥ १६ ॥ सतजुगी चरित्र माहीं छै सगलो, विवरासुध विस्तार। इहां संक्षेप करी ने आख्यो, संत वर्णन मांहें सार ॥ सु० ॥ १७ ॥ पांच पांच ना पवर थोकड़ा, बर किया बोहलो बार। उत्कृष्टो तप दिवस अठारह, एकटंक उदक आगार ॥ सु० ॥ १८ ॥ उभा रहिवारी तपस्या अति, एक पहोर उन्मान। जे बहु वर्ष लग जाणज्यो रे, खेतसी जी गुणखाण ॥ सु० ॥ १९ ॥ सीत उष्न मुनि सह्यो अधिको, सकल संघ सुखकार। स्वाम सतजुगी संभरयां रे, आवे हर्ष अपार ॥ सु० ॥ २० ॥ सतजुगी तणा प्रसंग थी रे, अधिक हुवो उपगार। बे बहिन भाणेजे चारित्र लीधो, ते आगे चलसी विस्तार ॥ सु० ॥ २१ ॥ वर्ष बावीस स्वामी नी सेवा, छेहड़ा लग सुविचार। भारीमालनी छेह लग भगती आसरै वर्ष अठार ॥ सु० ॥ २२ ॥ संलेखणा छेहड़े करी सखरी, सखरोई संथार। भिक्खु भारीमाल पछै परभव में, असीये वर्ष उदार ॥सु०॥ २३ ॥ भिक्खु स्वाम प्रसाद थी रे, सतजुगी संजम भार। पछै स्वामजी संजम पचख्यो, ओ भिक्खु तणो उपगार ॥ सु० ॥ २४ ॥ भिक्खु भांज्या भ्रम घणारा भिक्खु भव-दधि पाज। भिक्खु दीपक भरत क्षेत्र

में, जगत उद्धारण जिहाज ॥ सु० ॥ २५ ॥ भाग बले भिक्खु ऋष भारी, शिष्य मिलिया सुविनीत। भिक्खु याद आवै निशदिन मुझ, पर्म भिक्खु सूं प्रीत ॥ सु० ॥ २६ ॥ पवर ढाल कही छयालीसमीं, सतजुगो नो विस्तार। सेव करै स्वामी नो सखरी, जय जश करण उदार ॥ सु० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

साम राम साधु सरल, संता ने सुखदाय।
भद्र प्रकृति भारी घणी, नीत निपुण नरमाय ॥ १ ॥
वर्ष पेंसठे उपवास में, भिक्खु पाछै भाल।
पाली में परभव गया, निर्मल साम निहाल ॥ २ ॥
राम ऋषि रलियामणा, इन्दुगढ में आय।
चोला में चलता रह्या, सितरे वर्षे ताय ॥ ३ ॥
देवगढ़ दीख्या ग्रही, संभुजी सुविचार।
वार २ शङ्का पड़ी, छोड़ दियो तिण वार ॥ ४ ॥
तो पिण गण बारै छनो, करै साधां नी सेव।
साध्र आहार आण्यां पछे, आप ल्यावे नित्यमेव ॥ ५ ॥
पीत मुनि थी अति पवर, मुनि जिण गाम मझार।
आवे दर्शण करण कुं, पिण शङ्का थी हुवो खुवार ॥ ६ ॥
संघजी थो गुजरात रो, चर्ण लियो चित्त चाहय।
शिखियारी में निकल्यो, दुधर व्रत दिखाय ॥ ७ ॥
तदनन्तर संजम लियो, वरल्या वोहरा जोय।
एक चालीसै आसरै, नांम नानजी सोय ॥ ८ ॥
स्वाम भिक्खू पाछै सही. एकोतरे अवलोय।
तेला में चलता रह्या, धर्म ध्यान में जोय ॥ ९ ॥

॥ ढाल ४७ मी ॥

(परम गुरु पूज्यजी मुझ प्यारा रे ए देशी)

नानजी पछै चरण निहालो रे, मुनि नेम मोटो गुणमालो रे। वासो रोयट नो सुविशालो ॥ हर्ष ऋष-राय ने नित्य वन्दो रे ॥ १ ॥ पवर चर्ण भिक्खु पासे पायो रे, संजम बहु वर्ष शोभायो रे। मुनि जिन शासन दीपायो ॥ भिक्खु शिष्य शोभता नित्य वन्दो रे ॥ २ ॥ शहर नैणावे कियो संथारो रे, पाम्या भवसायर नो पारो रे। आ तो भिक्खु तणो उप-गारो ॥३॥ तदनन्तर वर्ष चमालो रे, बेणीरामजी अधिक विशालो रे। निकलंक चरण चित्त निहालो ॥ ४ ॥ दीख्या भीखणजी स्वामी दीधी रे, बसवान बगड़ी रा प्रसिद्धि रे। मुनि गण माहिं शोभा लीधी ॥ ५ ॥ हुवो बेणीराम ऋषि नीको रे, प्रबल पण्डित चरचावादी तीखो रे। मुनि लियो सुजश नो टीको ॥ ६ ॥ वारु वाचत सखर बखाणो रे, सखर हेतु दृष्टान्त सुजाणो रे। भर्त में प्रगट्यो जिम भाणो ॥ ७ ॥ हद देशना में हुशियारो रे, श्रोताने लागे अधिक सु प्यारो रे चित्त माहें पामें चमत्कारो ॥ ८ ॥ जाय मालव देश जमायो रे, खण्डी सूं चरचा कर तायो रे बहु जनने लिया समझायो ॥ ९ ॥ त्यांरी धाक सूं

पाखण्ड धूजै रे. बेखोराम केशरी जिम गूंजै रे । प्रगट हलुकर्मी प्रतिबुजै ॥ १० ॥ उत्पत्तिया है बुद्धि उदारो रे. समझाया घणा नरनारो रे । हुवो जिन शासण शिणगारो ॥ ११ ॥ घणा ने दियो संजम भारो रे, धर्म बृद्धि-मूर्त्त सुखकारो रे । ए तो भिक्खु तणो उपगारो ॥ १२ ॥ कीधो स्वाम भिक्खु पछै कालो रे. शहर चासटु में सुविशालो रे । संवत अठारह सितरे निहालो ॥१३॥ भिक्खु तारया घणा नरनारो रे, भवितारक भिक्खु विचारो रे । स्वामी जय जश करण श्रीकारो ॥ १४ संतालीसमी ढाल सूहायो रे, भिक्खु शिष्य मोटा मुनिरायो रे । स्वाम संग पर्म सुख पायो ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

तिण अवसर कोटा तणा, दौलतरामजी देख ।
आया तसु टोला थकी, सन्त च्यार सुविशेष ॥ १ ॥

सोरठा ।

दोय रूपचन्द देख रे, वारु ऋष वर्द्धमानजी ।
सूरतोजी संपेख रे, स्वाम गणे संजम लियो ॥ १ ॥
रूपचन्द बहुमान रे, छूटो तेह प्रयोग थी ।
प्रकृति अजोग पिछाणं रे सूरतो पिण छूटक थयो ।

॥ दोहा ॥

वडा संत वर्द्धमानजी, संजम सरल सुधार।
विचरत २ आविया, देश ढूंढाड़ मझार ॥ २ ॥
लू रा कारण थी लियो, मारग में संथार।
सम्वत् अठारह पचावने, लीधो संजम भार ॥ ३ ॥
लघु रूपचन्द स्वामगण, माधोपुर रे माहिं।
अणशण रो धंधो कियो, वेणीरामजी पाहि ॥ ४ ॥
पछे प्रणाम कचा पड़्या, बोल्यो एहवी वाय।
हूं थांरे नहीं काम को, रत्न कांकरो थाय ॥ ५ ॥
इम कही ने अलगो थयो, काल किती इम थाय।
एक चेलो कीधां पछे, आयो इन्द्रगढ़ मांय ॥ ६ ॥
शिष्य तज कहे गृहस्थां भणी, तंत सूत्र मुझ ताम।
भिक्खु ने वहिरावज्यो, मुझ गुरु भिक्खु स्वाम ॥ ७ ॥
इम कही साधु पणो पचख, दियो संथारो ठाय।
पांच दिवस रे आसरे, परभव पहोंतो जाय ॥ ८ ॥

सोरठा।

जति भेष ने जाण रे, मयारामजी मूकियो।
प्रत्यक्ष हो पहिछाण रे, भेपधारयां में आवियो ॥ ३ ॥
भेपधारी ने छंड रे, संजम लीधो स्वाम पै।
बहु वर्ष चरण सुमण्ड रे, निकल कालवादी थयो ॥४॥
विगतो नाम विचार रे. वासी घोरावड़ तणो।
संजम ले सुखकार रे. कर्म प्रभावे निकल्यो ॥ ५ ॥

॥ ढाल ४८ वीं ॥

(बाजोट पर नहीं बेसणो मुनि पग ऊपर पग मैल० ए देशी)

तदनन्तर टूंगचनावासी, सुखजी नाम सुखकार । स्वाम भिक्खु पै संजम लीधो. आणी हर्ष अपार रा ॥ भिक्खु स्वाम उजागर आपरा सुविनीत भला शिष्य जिन मार्ग जमायो रे ॥ सुगुणा परम पूज रे, प्रसंग सुज्ञानी जयजश छायो रे ॥ १ ॥ भिक्खु स्वाम पछै चौसटे कांई शहर देवगढ़ सार । अणशण कर आतम उजवालियो तो शुद्ध दश दिन संथार ॥ २ ॥ वर्ष तेपने शिरियारी वासी, हेम आछा हद जाति । संजम स्वाम समाप्यो सुवर्णन, हेम नवरसे विख्यात ॥ ३ ॥ उत्पत्तिया बुद्धि आगला, स्वामी हेम सखर सुविनीत । प्रबल बुद्धि पुन्य पोरसा, कांई पूर्ण पूज्य सूं प्रीत ॥ ४ ॥ परम विनयवन्त परखिया, वारु बुद्धि भारी सुविचार । हद कियो सिंघाड़ो हेम नो, भारी ज्ञानी गुणारा भण्डार ॥ ५ ॥ हेम सुनिर्मल होया तणा, अरु हेम स्वामी हितकार । हेम सुमति ना सागरु, अरु हेम गुप्ति गुणाकार ॥ ६ ॥ हेम दिसावान दीपतो, मुनि हेम मोटो महाभाग । हेम उजागर ओपतो वर हेम हीये बैराग ॥ ७ ॥ हेम इर्या धुनि ओपती, गति जाणे चाल्यो गजराज । हेम गम्भोर

गहरा घणा, ओतो हेम गरीबनिवाज ॥ ८ ॥ हेम दया दिल में घणी, शुद्ध सत दत हेम सधीर । हेम शील माहीं रम रह्यो, वारु कर्म काटण बड़वीर ॥९॥ हेम संग गहित सुरतरु, कांई हेम मेरु जिम धीर । हेम चिन्तामणि सारीषो, ओ तो हेम जाणै पर पीर ॥ १० ॥ सुन्दर मुद्रा हेमनी, अरु अतिशय कारी अन । पेखत चित्त प्रसन्न हुवै, चित्त माहें पामै चैन ॥ ११ ॥ सम्वत् अठारहसै तेपने पछै, धर्म वृद्धि अधिकाय । बंक चूलिया में वार्ता, आतो प्रत्यक्ष मिली इहां आय ॥ १२ ॥ बारह संत तो आगै हुंता कांई स्वाम भिक्खु पै सोय । हेम हुवा संत तेरमा, त्यां पछै न घटियो कोय ॥१३॥ भाग बलो भिक्खु तणो, शिष्य हेम हुवा वृद्धिकार । पाखण्डी पग माण्डै नहीं, पड़ै हेमनो धाक अपार ॥ १४ ॥ चौथे आरे सांभल्या, एतो क्षमा शूरा अरिहंत । प्रत्यक्ष आरे पंचमे एतो हेम सरीषा सन्त ॥ भि० ॥ १५ ॥ भिक्खु भारीमाल ऋषराय रे, बतारा में हेम बदीत । चर्चा वादो शूरमा, लिया घणा पाखण्ड्यां ने जीत ॥ भि० ॥ १६ ॥ घणा जणा ने संजम दियो, देश व्रत घणानें सुलम्भ । बहु भणाया पंडित किया, हेम जिन शासन रो थम्भ ॥ भि० ॥ १७ ॥ हेम नवरसा

में कह्यो, वर हेम तणूं विस्तार। ग्रन्थ वधतो जाणने, इहां संक्षेप्यो अधिकार ॥ भि० ॥ १८ ॥ भारी माल चलियां पछै, ऋषराय तणे वर्तार। उगणीसै चौके समै, शिरियारी में सन्थार ॥ भि० ॥ १९ ॥ भाग प्रबल भिक्खु तणा, हुवा सन्त शासण शिणगार। हेम गजेन्द्र समो गुणां, वलि आखूं अवर अणगार ॥ भि० ॥ २० ॥ आठ चालीसमी शोभती, आखो ढाल रसाल अपार। स्वाम भिक्खु गण सुर तरु, ओ तो जय जश करण उदार ॥ भि० ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तदनन्तर तपसी भलो, वर चपलोत विचार।
वासी केलवा नो पवर, उदैराम अधिकार ॥ १ ॥
पचावने पाली मझे, पूज भीखणजी पास।
श्रावण में संजम लियो, अधिको धर्म उजास ॥ २ ॥
अति उमंग तप आदर्यो, वर आंबल वर्द्धमान।
बयालीस ओली लगे, चढ्योज चढ़ते ध्यान ॥ ३ ॥
अवर तप कीधो अधिक, छठ २ आदि विचार।
आठ सौ इकतालीस आसरे, आंबल किया उदार ॥ ४ ॥
साठे स्वाम पछे सही, सखरो कर संथार।
चेलावास चलतो रह्यो, भारीमाल उतार्यो पार ॥ ५ ॥

सोरठा

तदनन्तर तिणवार रे, खुशालजी संजम लियो।
प्रकृति कठिण अपार रे, कर्म जोग थी निकल्यो ॥ १ ॥

ओटो जाति सोनार रे, वासी खारचिया तणो।
स्वाम कने समाचार रे, आप कहै इह रीत सूं ॥ २ ॥
अति कायो हुओ वाप रे, आज्ञा दी मुझ इण परै।
तू मुझ क्यूं दे ताप रे, कर तुझ दाय आवे जिसो ॥ ३ ॥
म्हारी कानी सूं जाण रे, जोगी जति के ढूंढियो।
इक नर सुणतां कहिवाण रे, स्वामी तब संजम दियो ॥४॥
प्रकृति तणे प्रताप रे, संजम पालणो दोहिलो।
कठिण परीषा ताप रे, छूटो ते तब छिनक में ॥ ५ ॥
नाथो जो पोरवाल रे, वासो देसुरी तणो।
सुत गृह छांडो सार रे, संजम सतरे स्वाम पै ॥ ६ ॥
जीभा लोलपी जाण रे, मुनि बांधो मर्याद ने।
छूटो तेह पिछाण रे, पिण श्रद्धा सनमुख रह्यो ॥ ७ ॥

॥ ढाल ४६ मी ॥

(जै जै जै गणपति रे नमूं ए देशी)

समत अठारै वर्ष सतावने, गाम रावलियां गुणिये। लघु वेस ऋष राय दीख्या लो, थिर चित्त सेती थुणिये, जै जै जै गणपति रे नमुं ॥ १ ॥ बंब जाति चतुरो साह सुतवर नाम रायचन्द नीको। वर्ष इग्यारह आसरे वय में, संजम सखर सधीको ॥ जै० ॥ २ ॥ हथिणी होदे हर्ष हुओ अति, मातु कुशालां बारु। साथे संजम पूज समाप्यो, चैत्री पुनम चारु ॥ जै० ॥ ३ ॥ प्रबल बुद्धि गुण पुन्य पेखने, पर्म पूज फ़रमायो। पद लायक ए पुन्य पोरसो,

वचनामृत वरसायो ॥ ४ ॥ दिशावान ऋषराय दीपतो, भाग्य वली बुद्धि भारी । हस्तमुखी मूर्त्ति हद हर्षत, पेखत मुद्रा प्यारी ॥५॥ पाट तीजै आगुंच परूप्या, स्वाम वचन सुखदायो । जम्बू स्वाम जैसा जेवन्ता, जाझा ठाठ जमाया ॥ ६ ॥ अन्तकाल भिक्खु ने अधिको, साझ सखर सुखदाया । भारी माल रे पास सुजागल, रायचन्द ऋष गाया ॥ ७ ॥ गुणांतरै वर्ष भारीमाल नी, आज्ञा लें अगवाणी । प्रथम शिष्य ऋष जीत कियो, निज पाट लायक सुविहाणी ॥ ८ ॥ भारीमाल ने साझ दियो अति अन्त समय अधिकायो । आप ओजागर अधिक अनोपम, दीन दयाल दीपायो ॥ ९ ॥ तस उपगार तणो वर्णन, करतां अति ग्रन्थ वधियो । भिक्खु तणो सम्बन्ध इहां, तिण कारण संखेपियो ॥ १० ॥ संसारी लेखे मामा सतजुगी महा मतिवन्ता । भल भाणेज रायचन्द भणिये, जशधारी जेवंता । भिक्खु ऋष अति भाग वली, शिष्य मिलिया रायचंद नीका । गिरवा गहर गंभीर गुणागर, पूज्य प्रथम ही परीखा ॥ १२ ॥ बहु वर्षां लग मार्ग नी वृद्धि, जिन जी आगुं जाणी । भिक्खु रे अति भागबलो, ऋष-राय मिल्या शिष्य आणी ॥ १३ ॥ ऐसा भिक्खु

आप उजागर, शिष्य पिण मिल्या सरीखा । तस पग छेहड़े सन्त हुवा ते. सांभलिये सुबृद्धिका ॥ १४ ॥
ए गुणपचासमी ढाल अनुपम, मिल्या संत मन मान्यो । कहिस्ये धर्म वृद्धि नो कारण, जय जश करण सुजाणों ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

समत अठारै सतावने, जेठ मास में जोय ।
पिता पुत्र धर चरण पद, हर्ष घणो अति होय ॥ १ ॥
ताराचन्द जी तात सुत, डूंगरसी महा मण्ड ।
पिता भार्या परहरी, सुतन सगाई छण्ड ॥ २ ॥
वड वैरागी संत विहुं. सखरो कर संथार ।
भिक्खु स्वाम पछे उभय, समचित जन्म सुधार ॥ ३ ॥
अणशण इकतालीस दिन, तारा चंद उवेख ।
दश दिन अणसण दीपतो, डूंगरसी ने देख ॥ ४ ॥
तदनंतर संजम लियो, वरस्या बोहरा ताहि ।
जीवो मुनि तासोल नो, महा मोटा मुनिराय ॥ ५ ॥
सरल भद्र प्रकृति सखर, तीन पाट नो नाम ।
सेव करी साचे मने, धुन सुविनय में धाम ॥ ६ ॥
भिक्खु भारोमाल पाछै भलो, नेउए वर्ष निहाल ।
गोधुंदे अणशण गुणी, महा मुनि गुणमाल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ५० मीं ॥

(चेत चतुर नर कह तनें संत गुरु ए देशी)

जोगीदासजी स्वामी जोरावर, तदनन्तर त्रिया त्यागी । स्वाम भोपजी संजम दीधो, बाल

पणौ बड वैरागी । भ्रम छांड भिक्खु शिष्य भजले, तज मिथ्या मति तालंदा । कर्म जाल काटो करणी कर, पर्म ज्ञान पर्मानन्दा ॥ १ ॥ शहर केलवा रा वासी शुद्ध, जोगीदास साचा जोगी । सखर सौभागी ममता त्यागी, भल सुमति पिण नहीं भोगी ॥ २ ॥ अल्प काल में अचाण चक्री, शहर पीसांगण में सुणियो । चौविहार संथारो चोखो, थिर चित्त सूं मुनिवर थुणियो ॥ ३ ॥ गुणसठे वर्ष मुनि गुणवंतो, पूज्य छतां परभव पहुंतो । आतम तार्यो जन्म सुधार्यो हियै निर्मल ऋषराज हुंतो ॥ ४ ॥ तदनन्तर जोधो मारु ते, गाम केरड़ा नो गुणियो । स्वाम भिक्खु स्वहथ संजम शुद्ध, भारी तपसी तप भणियो ॥ ५ ॥ अढी मास तप आछ आगारे, तप उत्कृष्ट पणो तपियो । सरल भद्र मुनिवर सौभागी, जाप त्रिविध तन मन जपियो ॥ ६ ॥ दिन अड़तीस कोन्वले दीप्यो, संथारो सखरो सुणियो । स्वाम पछै परभव सुमति शुद्ध, जोधो धन माता जणियो ॥७॥ शहर खेरवा रा भगजी शुद्ध वर आज्ञा दे बहिन बड़ो । संजम भिक्खु स्वाम समाप्यो, सखर विनय थी शोभ चढ़ो ॥ ८ ॥ जाति बैद मूंहता जंश धारी, भगजी भक्ति करी भारी । भिक्खु भारीमाल ऋषराय तणी भल,

पेखत ही मुद्रा प्यारी ॥ ६ ॥ ऋषराय तणो वरतारे रूड़ो. पंडित मरण मुनि पायो । निनाणुवे आतम ने निन्दी, शुद्ध परिणामे शोभायो ॥ १० ॥

सोरठा ।

जोगड़ जाति सुजाण रे, वासी बोदासर तणुं ।
पूज समीप पिछाण रे, भागचन्द आवो करी ॥ १ ॥
वारु गुणसठे वासरे, चारित्र धारयो चूंप सूं ।
वर्ष किनेक विमास रे. कर्म जोग थी निकल्यो ॥ २ ॥
चन्द्रभाणजी माहिं रे, रह्यो पंच मास आस रे ।
भारीमाल पे आय रे. कहै मुझ ने ल्यो गण मझे ॥ ३ ॥
हूं रह्यो चन्द्रभाण माहिं रे. त्यां ने साध न श्रद्धियो ।
थे मोटा मुनिराय रे. साधु श्रद्धनो स्वाम गण ॥ ४ ॥
भारीमाल ऋषराय रे, छेद दियो षटमास रो ।
लियो तास गण माहिं रे. अवलोकी भिक्खु लिखत ॥ ५ ॥
आर्या मांहिली जाण रे, जाय चन्द्रभाणजी मझे ।
अल्पकाल पहिछाण रे, आहार पाणी भेलो करे ॥ ६ ॥
तिण आर्या ने साध रे, श्रद्धे शुद्ध मन सूं सही ।
श्रद्धे तास असाध रे. नवी दीख्या देणी न तसु ॥ ७ ॥
जथा जोग दंड जाण रे, दे लेणं तसु गण मझे ।
वर्ष सैंतीसे वाण रे, लिखत भिक्खु ऋष नो कियो ॥ ८ ॥
पहवो लिखत अवलोक रे, नवी दीख्या दीधी न तसु ।
छेद दे मेट्यो दोष रे, भारीमाल व्यवहार थी ॥ ६ ॥
पासत्था पास पिछाण रे, आहार आद लेवे देवे तसु ।
निशीथ वीस में जाण रे डंड चौमासी दाखियो ॥ १० ॥
चौमासी डंड स्थान रे, वार वार सेव्यां छतां ।
व्यवहार प्रथम कही वान रे, चौमासी प्राछित तसु ॥११॥

इम बहु न्याय विचार रे, वलि मर्याद् विमास ने ।
वारु देख व्यवहार रे, छेद देई माहें लियो ॥ १२ ॥
वीत्यो कितोयक काल रे, फिर छूटक थयो एकलो ।
इक शिष्य कीधो न्हाल रे, नाम भवानजी तेहनो ॥ १३ ॥
डंड ले आया माहिं रे, नपनो अभिग्रह आदरयो ।
नायो पालणी ताहि रे, तिण कारण थयो एकलो ॥ १४ ॥
काल केतोक वदीत रे, फिर आयो भारीमाल पैं ।
सन्त सत्यां ने सुरीत रे, कर जोड़ी वंदना करी ॥ १५ ॥
बोले बेकर जोड़ रे, मुझ ने लेवो गण मझे ।
अढ़ो द्वीप ना चोर रे, त्यां स्यूं हूं अधिको घणो ॥ १६ ॥
छठ २ तप पहिछान रे, जावजीव अदराय द्यो ।
कहो तो करू संथार रे, पिण मुझ ने ल्यो गण मझे ॥१७॥
भारीमाल बहु जाण रे, दीख्या दे माहिं लियो ।
संवत अठारे पिछाण रे, एकोनरे वर्ष आदरयो ॥ १८ ॥
मास खमण बहु वार रे, विकट तप मुनिवर कियो ।
संताणुवे सुखकार रे, जन्म सुधारी जश लियो ॥ १९ ॥

ढाल तेईज ।

भारो तपसी भोप हुवो भल, कोसीथल वासी कहियो. जाति तणो चपलोत जाणिजै. लाभ स्वाम हाथे लहियो ॥ ११ ॥ पालो में संजम ले प्रत्यज, मुनि तपसा काया मंडियो । कवहिक छासठ कवहिक अड़सठ ॐ चढ़त २ अधिको चढ़ियो ॥१२॥ कदहिक

ॐ नोट—मूल पद्त में 'अठावन' ऐसा पाठ है किन्तु गाथं के चतुर्थ चरण के भाव से 'अड़सठ' ही ठीक जंचता है तथा प्रथमावृत्ति में भी 'अड़सठ' ही छपा हुआ था । इस लिये अड़सठ रक्खा गया है ।

—संशोधक

चार मास में कीधा, सतंर पारणा सुमति सहु । ग्रन्थ बहुल भय तप वर्णन गुण, तिण कारण सहु ते न कहू १३ ॥ साड़ो चार पहोर संथारो, स्वाम पछै शुद्ध गति सारु । पालो धर्म उद्योत प्रगट हद, वर्ष छासठें मुनि बारु ॥ १४ ॥ मुनि महिमागर अधिक उजागर, गुण सागर नागर ज्ञानी । वचन सुधा वागर धर्म जागर, धर्म धुनि धर महा ध्यानी ॥ १५ ॥ अञ्जन मञ्जन चन्दन अञ्जन, शिव शञ्जन रञ्जन साधो । भ्रम भञ्जन भिक्खु गुरु भेटी, अरि गञ्जन मति आराधो ॥ १६ ॥ स्वाम शरण सुख करण तरण शुद्ध, तम भ्रम हरण स्वाम तरणी । शिव वधू वरण धरण दुधर सम कहा कहूं मुनि नी करणी ॥ १७ ॥ सुर गिर धीर गंभीर समीर, सदा सुख सोर सुतार सजै । तोड़ जंजीर वीर बड़ तुम हो, ऋष भिक्खु गुण हीर रजै ॥ १८ ॥ धर्म प्रतीत रीत प्रभु वच से, लोक वदीत अनीत लजै । ज्ञान संगीत नीत हद गुणियण, भल भिक्खु ऋष जीत भजै ॥ १९ ॥ वाण विमल अति निमल कमल वर, जमल अमल शिव मग जाणी । समल तमल मिथ्या मति सोषो, आप सुर्ति अघदल आणी ॥ २० ॥ आप तणै प्रसाद अनोपम, तंत मुनीश्वर बहु तरिया । आप सुरतरु आप गुणो दधि

आप घणा ना अघ हरिया ॥ २१ ॥ स्मरण स्वाम तणो नित साधूं, स्वाम तणो मुझ नित शरणो। आशा पूरण स्वाम अनोपम, निर्मल चित्त कीधो निरणो ॥ २२ ॥ सखरा स्वाम मुनि गुण सोचा, म्हे संक्षेप थको गुणिया। जल सागर किम झाले गागर, गुण अनन्त अथग अनघ गुणिया ॥ २३ ॥ निमल पचासमी ढाल निहाली, भल भिक्खु गुण सूं भरिया। जय जश सम्पति करण जाणजो, इण खण्ड भिक्खु अवतरिया ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

अड़तालीस मुनि अख्या, पूज छतां पहिछान।
चारित्र लीधो चित्त धरी, उज्झम अधिको आण ॥ १ ॥
अठ्वीस गण में सही, सखर रह्या सुजगीस।
गुरु छंदे गिरवा गुणी, अलग रह्या छै बीस ॥ २ ॥
बीसा मांहे एक वर, रूपचन्द शुद्ध रीत।
छेहड़े अणशण चर्ण लिय, पूज आण प्रतीत ॥ ३ ॥
पूज थकां चारित्र प्रगट, अब सतियां अधिकार।
कैईक बारे नीकली, पहोंती कैईक पार ॥ ४ ॥
एक साथ व्रत आदर्या, तीन जण्यां तिण वार।
कुशलां जी वड़ी करी, कुशल क्षेम अवतार ॥ ५ ॥

॥ ढाल ५१ मी ॥

(खम्यावंत जोय भगवन्त रो ज्ञान ए देशी)

पवर चरण शुद्ध पालताजी, कुशलांजीने विचार।

दीर्घ पृष्ठ गुदोच में जी ते डंसियो तिणवार. खिम्या-
वंत धिन सतियां अवतार ॥ १ ॥ जंत्र मंत्र झाड़ा
भणी जी. बंछ्यो नहीं तिण वार शुद्ध परिणामे
महासती जी. पोंहती पर लोक मझार ॥ २ ॥ मटूजी
मोटी सती जी, स्वाम आण शिर धार । पद आरा-
धक पामियोजी, ओ भिक्खु नो उपगार ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

अजबू प्रकृति अजोग रे, कर्म जोग सूं नीकली ।
प्रकृति कठिण प्रयोग रे, चारित्र खोवे छिनक में ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ।

नाम सुजाणा निरमलीजी, देऊजी दीपाय ।
स्वाम तणे गण में सही जी, परभव पोंहती जाय ॥४॥

॥ सोरठा ॥

तदनन्तर तिण वार रे, साधु पणो लीधो सही ।
नेउ नाम निहाल रे, कर्म प्रयोगे नीकली ॥ २ ॥

ढाल तेहिज ।

सती गुमाना शोभती जी, संजम वर संथार । इमज
कसूंबाजी अखी जी, अणशण अधिक उदार ॥५॥
जोऊजी बले जाणिये जी, स्वाम तणे गण सार ।
पोते बहुसुत परहरी जी, वासी रीयां रा विचार ॥६॥

काल किलेक पछै कियो जी, शहर पीपांड संथार।
इगतालो खंडी ओपती जी, मांढी करी तिवार ॥७॥

सोरठा।

फतू अखूजी न्हाल रे, अजवू चंदूजी अज्जा।
भेषधारयां में भाल रे, पछे चर्ण लियो पूज पे ॥ ३ ॥
समत अठारे मोय रे. वर्ष नेंतीसे वारता।
लिखत करी अवलोय रे, मुनि लीधो टोला मझे ॥ ४ ॥
आप मते अवधार रे मन छंदे रही मोकली।
अति तसु कठिण अपार रे, छांदे गुरां रे चालणो ॥ ५ ॥
अशुद्ध प्रकृति अविनीत रे, सुमते जाणो स्वामजी।
शिष्य भिक्खु शुद्ध रीत रे, तंतु धारयो तेहने ॥ ६ ॥
तुझ ने कल्पे तेह रे, ते तंतु लेवो तुम्हे।
इम कही कपड़ो देह रे, फतु आदि पांचां भणी ॥ ७ ॥
पूछ्यो तास प्रमाण रे, कहे मुझ अधिको को नहीं।
पूज करै पहिछान रे; निसुणो निरणय निर्मलो ॥ ८ ॥
अखैराम अणगार रे, मेल्यो कपड़ो मापवा।
तम थानक तिणवार रे, माप्यां अधिको निकल्यो ॥९॥
इम तंतु अति राख रे. झूठ बोली वले जाणनें।
शुद्ध नहीं संजम साख रे, नीत चरण पालण तणो ॥१०॥
च्यारू ते पहिछान रे, चेना भेली पंचमी।
यां पांचू ने जाण रे, छोड़ी चंडावल मझे ॥ ११ ॥

मेणाजी मोटी सती जी, त्यांसो पुरना विचार।
स्वाम कने संजम लियो जी, छांडो निज भरतार ॥८॥
पढ़ी भणी पंडित थई जी, बहु सूत्रा नो रे जाण।
साठे संथारो करैजो, कीधो जन्म किलयाण ॥ ९ ॥

सोरठा ।

धनू केलोजी धार रे, रत्तू नन्दूजी वलि ।
गाढा गांम मझार रे, छाडो यां च्यारां भणी ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज ।

रंगूजी रलियामणाजी, श्रीजोद्वारा ना सार । पोरवाल प्रगट पणे जी, संजम लियो सुखकार ॥ अड़तीसे व्रत आदर्‌यो जी स्वाम खेतसी रे साथ । शिरियारी चलता रह्या जी वारु भणी विख्यात ॥११॥ सदांजी मोटी सतीजो, तलेसरा तंत सार । श्री जी द्वाराना सहीजी, सखर कियो संथार ॥ १२ ॥ सुत वहु तज संजम लियोजी, कंटाल्या ना कहिवाय । अणशण लीढोती मझेजो, फूलांजी सुखदाय ॥१३॥ उत्तम अमरां आर्याजी, स्वाम तणे उपगार । जीतब जन्म सुधारियोजी सखरो कर संथार ॥ १४ ॥ ढाल एक पचासमो जी, भिक्खु ने गण भाल । बड़ी २ सतियां हुई जी । वारु गण सुविशाल ॥ १५ ॥

॥ सोरठा ॥

रत्तू ले चारित्र रे, छूटी खीयो चर्ण ने ।
पाली माहिं पवित्र रे, पछैं संथारो पचखियो ॥१॥
उपाय किया अनेक रे, भेषधारयां लैवा भणो ।
तो पिण राखी टेक रे, त्यां माहैं तो ना गई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शुद्ध चित्त सूं तेजु सती, पोरवाल पहिछाण ।
बासो ढील कंबोल रो । संजम लियो सुजाण ॥ ३ ॥
काल कितेक पछै कियो, संथारो सुविहाण ।
दिवस बेयाली दीपतो, कीधो जन्म किल्याण ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

धनांजी सुविचार रे, संजम लीधो शुद्ध मने ।
कर्म करी खुवार रे, टोला सूं न्यारो टली ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

वगतुजी बगडी तणा, वर कुल जाति सवेत ।
हीरो हीर कणी जिसी, भारीमाल ना नेन ॥ ६ ॥
नाम नगी गुण निर्मलो, वेणीरामजी री वहैन ।
एक दीवस तीनूं अजा, चर्ण धार चित चेन ॥ ७ ॥
चौमालीसे वर्ष स्वामजी, संजम दे इक साथ ।
सूंप्या रंगुजी भणी, चारु जश विख्यात ॥ ८ ॥
ए तीनूं भिक्खु पछै, संथारा कर सार ।
महियल मोटी महासती, पामी भवनो पार ॥ ९ ॥
सरूप भीम ऋष जीत नी अजबू भुवा सुजोग ।
चौमाले धार्यो चर्ण, अठासीये परलोग ।
शिरियारी ना महासती, पन्नाजी पहिछाण ।
संजम पाल्यो स्वाम गण संथारो सुविहाण ॥ ११ ॥

॥ सोरठा ॥

कांकोली री कहाय रे लालांजी संजम लियो ।
परवस सीत सुपाय रे, इण कारण गृह आविया ॥१२॥

बहु वर्षा सुविचार रे, श्रावक धर्मज साधियो ।
तप जप कियो उदार रे, फिर चारित्र नहीं पचखियो ॥१२॥

॥ ढाल ५२ मी ॥

(ज्यांरा इन्द्र चन्द्र रखवाला ए देशी)

गुमाना महा गुणवंती, तासोल तणी चित्त शांती । जीवा मुनि री बड़ी मा जाणी, सती संजम लियो सुखदाणी हो लाल ॥ सतियां नामज मोटी ॥ १ ॥ एक मास कियो अति भारी, दोय मास छेहड़े दिलधारी । शुद्ध राजनगर संथारो, सती सरल भद्र सुखकारो हो ॥ २ ॥ वर शहर बुंदी रा वासी, बारु श्रावगी कुल सुविमासी । खेरवे संथारो खंती, खेमा जी खेम करंती हो ॥ ३ ॥

सोरठा ।

जू परीषह थी जाण रे, छूटी जसु छिनक में ।
ओली दलो पिछाण रे, कांकोली री विहुं कही ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ।

सतजुगां री बहिन सुखवासी, ऋष रायचंदजी री मासी । पिउ पुत्र तज्या पहिछाणी, रूपांजी महा रलियाणी हो ॥ ४ ॥ संजम बावने सधीको, सतावने संथारो नीको । खुशालांजी री लघु बहिन कहियै, रूपांजी जग जश लहियै हो ॥ ५ ॥ रूपांजी

कंटाल्ये संथारो, अग्रवाल जाति अवधारो। माधो पुर ना बसवानो. सुत तीन तज्या व्रत ध्यानो हो॥ ६॥ वारजूजी बदीत विमासी, रूड़ो शील गुणा री रासो। तिण रो भिक्खु तोल बधायो, सती सुजश शासण में पायो हो॥ ७॥ बीजांजी महा वृद्धकारी, धर चरण शील सुखकारी। करड़ो तप छेहड़े कीधो, सती जग माहें जश लीधो हो॥ ८॥ वनाजी सुवि-नयवंती, शुद्ध चरण पालण चित्त शंती। सुखदायक गण सुविशाली, सतो आतम ने उजवाली हो॥ ९॥ शुद्ध यां तीना ने सिख्या, दोधी भिक्खु एक दिन दीख्या। सखरो छेहड़े संथारो, समणी हद मुद्रा सारो हो॥ १०॥

॥ सोरठा ॥

वीरां जाति कुंमार रे, संजम लीधो स्वाम पें।
प्रकृति अशुद्ध अपार रे, तिण कारण गण सूं टली॥ २॥

ढाल तेहिज।

उदांजी उद्यमवंती, सती जाति सोनार सोहंती। बहु वर्ष चरण सुविचारो, आंबेट माहें संथारो हो॥ ११॥ झूमांजी जाति पोरवाल, ओजो द्वारा ना सार। छपने वर्ष संजम लीधो, स्वाम पछै संथारो सिद्धो हो॥ १२॥ वर्ष सतावने सुविचारो, ऋषराय चरण

हितकारो । तिण बहुत हुवो उपगारो, तिणरो सांभल जो विस्तारो हो ॥ १३ ॥ संसार लेखे शोभाया, लख पती छोड़े सजनाया । मतिवंत हस्तु महि मंडी, लीधो चरण पिउ सुत छंडी हो ॥ १५ ॥ दुःख घरका बहुलो दीधो, सती अडिग पणे व्रत लीधो । सताणूवे लाहवे संथारो, हस्तु गुण ज्ञान भंडारो हो ॥१५॥ कुशलांजी रावलिया रा कहिये, सतजुगी री बहिन व्रत लहिये । ऋषरायचन्दजी नो माता, संजम ले पामो साता । ओतो जिन शासन में सुखदाता हो ॥ १६ ॥ भल हस्तुजीनी भग्नी, सती कस्तुरांजी शुभ लग्नी । सुत पिउ छांड व्रत धारो, सतंतरे उजैण संथारो हो ॥ १७ ॥ छ्हावा थी संजम लीधो, पिउ छांड पर्म रस पीधो । गणी बुद्धि अकल गुणवन्ती, जोतांजी महा जशवन्ती हो ॥ १८ ॥ शिरियारी रा सुमगन में, छोड्यो पिउ सती तिण छिन में । संथारो वहुतरे सिद्धो, नोरांजी जग जश लीधो हो ॥ १६ ॥ शुद्ध एक वर्ष में शिक्षा, दुर्मति तज लीधी दीक्षा, पांचां ही पिउ ने छंडी, त्यांरी प्रीत मुक्ति सूं मंडी हो ला० ॥ २० ॥ गुणसठे वर्ष गुणवंती, बहु चरण धार बुद्धिवंती । त्यांमें तीन जणयां एक साथे, हद दीक्षा भिक्खु ने हाथे हो ॥ २१ ॥ कुशलांजी नाथां

जी बोजांजी, पाली ना तिहुं भ्रम भांजी। तीनूं शीलामृत कूंपी, दीख्या देई ब्रजुजी ने सूंपी हो॥ २२॥ सतंतरे कुशालांजी संथारो, भारीमाल भेला सुविचारो। माधोपुर मास कार्तिक में, परलोके पोंहता छिनक में हो॥ २३॥ नाथांजी गाम जसोल न्हाली, वर संथारो सुविशाली। संसार लेखे ऋद्धि वंतो, समणी शुद्ध प्रकृति सोहंतो हो॥ २४॥ तप दिवस बतीस सु तपियो, जिन जाप बोजांजी जपियो। तीन दिवस तणो सन्थारो, वर्ष छियासीये अवधारो हो॥ २५॥ सरूप भीम जीत ना ताह्यो, कलुबै काकी कहिवायो। गुणसठ दीक्षा गुणवंतो, गोमांजी नेवुये पार पहोंती हो॥ २६॥ जशोदा खेरवा निवासी, डाहीजी नोजांजी विमासी। संजम भिक्खु छतां सारो, बहु वर्ष पाछे संथारो हो॥२७॥ ए स्वाम तणो गण सारु, छपन गण चर्ण प्रकारु। सतरे छुटक हुई अजा, छोड़ी लोकिक लोकोत्तर लजा हो॥२८॥ रही गुणचालीस गण राची, पिउ छांड सात व्रत जाची। दोय बहिन भार्यां रा जोड़ा, सतजोगी वैणीराम सु होडा हो॥२९॥ ऋष रायचन्द सा साथे, संजम लीधो पूज हाथे। आख्यो समणी नो अधिकारो, ओ तो भिक्खु तणो उपगारो हो॥ ३०॥ आगे

संत कह्या अड़ताली, अजा छपन इहां भाली। सहु थया एक सौ चार, स्वामी गण लीधो चरण सुखकार हो॥ ३१॥ बीस सतरे गण बारी, अठवीस गुण चालीस सुधारी। बीसा में रूपचन्द शुद्ध रीत, राखी स्वाम तणी प्रतीत हो॥ ३२॥

छन्द भुजंगी।

थया संत मोटा वड़ा सु थिरपालं १ भलूं नंद नीको फतेचन्द भालं २। विनयवंत चारु सु टोकर विशालं ३ निजानंदकारी हरनाथ न्हालं ४॥१॥ भला धर्म धोरी मुनी भारीमालं ५ चल्या आप चारू वड़ा नी सुचालं। अखे स्थान काजे अखेराम आछा ६ सदानंदकारी सुखाराम साचा ७॥२॥ शिवानन्द सारू शिवो स्वाम शोशं ८ नगो स्वाम नीको नगेन्द्र नमीशं ९ भला स्वामजी संत हुवा सुभारी १० सही खेतसी जी सदा शन्तिकारी ११॥३॥ ऋषिराम रूड़ो भिक्खू शीश राजे १२। वलि नान जी स्वामी स्वामी निवाजे १३॥४॥ निभै नेम जाचा मुनि नेम नामं। वड़ो संत ज्ञानी भला वेणीरामं १५॥५॥ वलि संत मोटो वड़ो वद्ध-मानं १६। सुखो स्वाम साचो शुभ ध्यान सुज्ञानं १७॥६॥ हदां हेम जेसा सु हेमं हजारी १८। उदैराम आछो तपेस्वी उदारी॥७॥ ऋषि पाट थाप्यो मुनि रायचन्दं २०। दीपै तेज तीखो सुमेरु दिनन्दं २१॥८॥ भला संत तारासुचन्द्र भणीजे २१। गिरेन्द्र समो संत डूंगर गिणीजै २२॥९॥ जयो जीवराजं २३ अरु जोगीदासं २२। दमीश्वर जोधो तपे देह त्रासं २५॥१०॥ भगो नाम नीको भिक्खु शीश भारी २६। सही भागचन्द पछैहि सुधारी २७॥११॥ थयो भोप भारी तपे ध्यान थापी २८। पका संत शूरा भिक्खु ने प्रतापी॥१२॥ रह्या स्वाम आण धुरा छेह रूड़ा। सही केटली ने थया फेर शूरा॥१३॥ आख्या संत नाम अठावीस आछा। जिके जोव तासा भिक्खु स्वाम जाचा॥१४॥

॥ छप्पय ॥

इसा भिक्खु अणगार, सार जिण मार्ग शोधी।
अधिक कियो उपगार, बहु भवि ने प्रतिबोधी॥
श्रमणी संत सुजाण, सखर कीधा सुखकारी।
पर्म धर्म पहिछाण, धुरा जिन आणा धारी॥
अरु देश व्रत धारक अधिक, नित्य कृत भजन तूं नामको।
सुख करण शरण हद जग सुजश, सखर भीखणजी स्वामको॥१॥

॥ दोहा ॥

अट्ठवीस मुनिवर अख्या, सखरा गण शिणगार।
वीस थया गण बाहिरें, तास नाम अवधार॥ १॥
वीरभाण १ लिखमो २ वलि, अमरोजी ३ अभिधान ४।
तिलोक ५ मौजीराम जी ५, चन्द्रभाण जो ६ जान॥ २॥
अणंदोजी ७ पनजी ८ अख्या, सन्तोष ६ शिवजीराम १०।
शंभु ११ संघजी १२ रूपजी १३, लघुरूपजी ताम १४॥३॥
सूरतोजी १५ संघ सूं टल्यो, मयाराम १६ पहिछाण।
वीगतो कुलाश जी वलि, ओटो १६ नाथू २० जाण॥४॥
केईका ने न्यारा किया, केइक टलिया आप।
अब कहिये छै आर्जिका, चतुर सुणो चुपचाप॥ ५॥

॥ छप्पय ॥

कुशलां १ मटु २ कहाय, सुजाणा ३ कहिये साची।
देउ ४ गुमाना ५ देख, कसुंबांजी ६ नहिं काची।
जीऊ ७ मेणा ८ जहाज, रंग ६ सदां १० फूलां ११ सुखकारी।
अमरा १२ तेजु १३ आण, वलि वगतु १४ वृद्ध कारी॥
हीरां हीर कणी जिसी १५, सती शिरोमणि शोभती।
निकलंक नगां १६ अजवू १७ निमल, महियल ए मोटो सती॥१॥

पन्ना १८ सती पिछाण, गुमानां १६ खेमां २० गुणिये ।
रूपांजी २१ वर रीत सरूपां २२ समणीं सुणिये ॥
वरजू २३ वीजां २४ विशाल, वनां २५ उदां २६ हद वारु ।
झूमां २७ हस्तु २८ जिहाज, कुशालां २६ गण सुखकारु ॥
कस्तुरां ३० जैनां जी ३१ कही, शुद्ध संजम नौरां सजी ।
इक वर्षे माहिं व्रत आदर्या, पांचूं यां प्रीतम तजी ॥ २ ॥
सखर खुशालां ३३ सती, पवर नाथां ३४ पुनवंती ।
विनय वीजां ३५ सुविनीत, घणूं गोमां ३६ गुणवंती ॥
चणं यशोदा ३७ चित्त, हिये माहीं ३८ हरषंती ।
नोजां निमल निहाल ३६, स्वाम आणां समरंती ॥
ए गुण चालीस अजा गण में अखी, एक सोनार सुजाणिये ।
कुलवंत इतरी सतियां कही, वड़ी वैराग वखाणिये ॥३॥

॥ दोहा ॥

सतरै छुटक नाम तसु, अजवू १ नेतू २ ताय ।
वलि फतू ३ नै अखू ४, फिर अजवू ५ कहिवाय ॥ १ ॥
चन्दूजी चैना ७ छुटक, धंनु ८ केली धार ६ ।
रत्तू १० नंदू ११ फिर रतु १२ वना १३ थई गण वार ॥२॥
लालां १४ परत्रम नीकली, जसु १५ चोखी १६ वीरां १७ जान ।
सतरैं छुटक सांभली, गण गुण्याली सुजान ॥ ३ ॥

ढाल तेहिज ।

भिक्खु हुवा उजागर भारी, हद करणी री बलिहारी । नित याद आवे मुझ मन, तन मन अति होय प्रसन्न हो ॥३३॥ सुमतागर शासण स्वामी, जशधर अन्तरजामी, सखरो कुण स्वामी सरषो, पूज गुण

सुखम दृग परखो ॥ ३४ ॥ आशा पूरण आपो, जपूं आप तणां नित जापो । पूर्ण मुझ आप सूं प्रीतं, निरमल शुद्ध आपरी नीतं ॥ ३५ ॥ कही ए बावनमी ढालं. वर जय जश करण बिशालं । मोने भाग प्रमाणे मिलिया, मननाज मनोर्थ फलिया । मुंह मांग्या पासा ढलिया ॥ ३६ ॥ तीजो खण्ड कह्यो तहतीको, निर्मल भिक्खु गण नीको । शासण सुखदाय सधीको. जय जश वृद्धि शिव नो टीको हो लाल ॥ ३७ ॥ सोरठा २ गाथा ३७ ॥

॥ कलश ॥

मुनि सुगुण माला वर विशाला, सुमति पाल सुजाणिये । तम कुगति ताला भ्रम ज्वाला परम दयाल पिछाणिये ॥ सुख सद्म संत महंत सुन्दर भ्रान्त भंजन अति भलो, सुमति सुसागर अमल आगर निमल मुनि गण गुण निलो ॥ १ ॥

चतुर्थ खण्ड ।

॥ सोरठा ॥

समरूं गोथम स्वाम रे, सुधर्म जम्बू आद मुनि ।
बले भिक्खु गुरु नाम रे, चौथो खण्ड कहूं चूंप सूं ॥ १ ॥
मुरधर देश मेवाड रे, हाडोती ढूंढाड़ में ।
चावा देशज चार रे, समचित विचरया स्वामजी ॥ २ ॥
मेरुलालजी व्यास रे, श्रावक तेरां मांहिलो ।
ते कछ देशे गयो तास रे, टीकम ने समझावियो ॥ ३ ॥
टीकम डोसी श्राम रे, देश कच्छ में दीपतो ।
तेपने गुणसठे ताम रे, पूज्य कने आयो प्रगट ॥ ४ ॥
प्रगट तेह प्रयोग रे, कछ देशे धर्म प्राभियो ।
स्वाम तणे संजोग रे, जीव हजारां उद्धरा ॥ ५ ॥
धर्म कल्याण पिछाण रे, इण भव आश्री जाणजो ।
सुणजो चतुर सुजाण रे, पूज भिक्खु नो प्रगट हिव ॥६॥

॥ दोहा ॥

पाचूं इन्द्रयां परवरी. न पड़ी कांई हींण ।
वृद्ध पणे पिण पूजनी, शीघ्र चाल शुभ चीन ।
थाणे कठेई ना थया, उद्यमी अधिक अपार ।
चारु चरचा करण चित्त, पूज तणे अति प्यार ॥ २ ॥
उठे गोचरी आप नित, अतिशय कारी एन ।
पूज्य सुमुद्रा पेखतां, चित्त में पामें चैन ॥ ३ ॥
छेहला २ गाम फर्शता, छेहलाई करता विहार ।
चाणोद सूं पींपाड लग, विचरया स्वाम उदार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५३ मी ॥

(संल्हा मारुनां गीतनी ए देशी)

भ्रम भय भंजन हो जन रंजन गुण जिहाज. सुमति सुमंडन स्वाम शोभाविया। कुमति विहंडन मिथ्या खण्डन काज, विचरत २ सोजत आविया ॥ १ ॥ चोहटे चार हो छत्री छै सुविचार, आज्ञा लेईं ने स्वाम तिहां उतरया। जन मन हर्ष हो निरख्यो पूज्य दिदार, जाणौ के श्रीजिन आप समवसरया ॥२॥ दर्शण कारण हो धारण चर्चा बोल, संत सतो बहु स्वाम पै आविया। आज्ञा लेवा हो चौमासा री अमोल, पर्म पूज्य पे आवी सुख पाविया ॥ ३ ॥ दम सम सागर हो स्वामी पर्म दयाल, भलाया चौमासा संत सत्यां भणी। एटले आयो हो हुकमचन्द आछो न्हाल, पूज दर्शण कर प्रीत पामी घणी ॥ ४ ॥ वेकर जोड़ी हो मान मरोड़ो बोलंत, विविध विनय करि कर रह्यो विनतो। स्वामी चौमासो शिरियारी करो संत, सुजनी छै पको हाट मुझ शोभतो ॥ ५ ॥ गुण निधि ज्ञानी हो गिरवा आप गम्भीर. ऋषपति अर्ज करूं हूं रीत सूं। चारु वचने हो विनती कीधी वजीर, सुगरु प्रसन्न हुवै शिष्य सुविनीत सूं ॥ ६ ॥ स्वामी मानी हो विनती तसु सार, विहार करो ने बगड़ो

आविया। निर्मल चित्त सूं हो अर्ज करे नर नार, शहर कंटाल्ये बगड़ी सुशोभाविया ॥ ७ ॥ गति गयवर-सी हो इर्या धुन गुण जिहाज, प्रवर संतां कर मुनिवर प्रवस्त्रा। प्रत्यक्ष कहिये हो ऋषि भव दधि नी पाज, शहर शरियारी में स्वाम समवसर्‍या ॥ ८ ॥ शहर शरियारी हो शोभै कांठा नी कोर, दोलो मगरो गढ़ कोट ज्यूं दीपतो। जन बहु बस्ती हो महाजनारो जोर, जूना २ केई पुर भणी जोपतो ॥९॥ निर्भय नगरी हो ऋद्धि समृद्धि निहोर, ज्यां धर्म ध्यान घणो तप जापनो। राज करै छै हो दौलतसिंह राठोड़, कूंपावत कहिये करड़ी छापनो ॥ १० ॥ तिहां मुनि आया हो सत ऋषि तंत सार, जय जश धर्‍यां कर्‍यां मन जीपता। स्वामी शोभे हो गण नायक सिरदार, दमीश्वर पूज्य भीखणजी दीपता ॥ ११ ॥ भरत क्षेत्र में हो भिक्खु साम्प्रत भाण, आज्ञा लेई ने पकी हाट उतर्‍या। जन बहु हर्ष्या हो पूज पधार्‍या जाण, धर्मानुराग करि तन मन भर्‍या ॥ १२ ॥ बखाण बाणी में हो आगे बाण विशाल, थिर पद पूज भीखण जी थापियो। भार लायक हो शोभे मुनि भारीमाल पद युवराज पहिलाही समापियो ॥ १३ ॥ सखर सेवा में हो खेतसीजी सुवनीत, सतजुगी नाम

अपर शोभावियो। पूर्णं त्यांरे हो पूजजी री प्रतीत चार तीर्थ माहिं जश तसु छावियो ॥ १४ ॥ उदैराम जी तपसी अधिक उदार, ऋष रायचन्दजी बालक वय राजता। जीवो मुनि हो भगजी गुण नां भण्डार, स्वाम तणी हद सेवा सुसाझता ॥ १५ ॥ ए तो आखी हो तीन पचासमी ढाल शरियारी में स्वाम आया सुख कारणा। रूड़ी निसूणो हो आगल बात रसाल जय जश करण भिक्खु जन तारणा ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

श्रावण मासे स्वामजी, पूनम लगे पिछाण।
सखरी गोचरी शहर में, आप करी अगवाण ॥ १ ॥
आवसग अर्थ अनोपम, लिख लिख ने अवलोय।
शिष्य ने आप सिखावता, जश धारी मुनि जोय ॥ २ ॥
श्रावण सुद छेहड़े सही, मुनि तणे तन माहीं।
कांईक कारण ऊपनो. फेरा तणोज ताही ॥ ३ ॥
तो पिण उठे गोचरी, गाम माहिं मुनिराय।
दिसा बाहिर जावे सही, लांबी गिण तीन काय ॥ ४ ॥
औषध लियो अणाय ने, कारण मेटण काम।
पिण कारण मिटियो नहीं, पूज समा परिणाम ॥

॥ ढाल ५४ मीं ॥

(केते पूजी गोरज्या केते ईस पदेशी)

धर्म कल्याण चतुर सुणो, मास भाद्रवा मांयो ए सुखदायो ए। धर्म वृद्धि अति धर्म नो क भवियण

ए ॥ १ ॥ पजुसणा में परवड़ा, वारु हुवे वखाणो ए सुविहाणो ए । दरशे तीन टंक देशना क मुनिवर ए ॥ २ ॥ सुन्दर वाणा सुहामणी, निसुणे बहु नर नारो ए । सुखकारो ए । चौथज आई चांदणी क ॥ मु० ॥ ३ ॥ पिंजर तन हीणो पड्यो, पर्म पूज्य पहिछाण्यो ए । मन जाण्यो हे आउ नेड़ो उनमानथी क ॥ मु० ॥ ४ ॥ स्वाम कहे सतजुगी भणी, थे सखर शिष्य सुविनीतो ए धर प्रीतो ए । साझ दियो संजम तणो क ॥ मु० ॥ ५ ॥ टोकर जी तीखा हुंता. विनय वंत सुविचारी ए । हितकारी ए । भक्ति करी भारी घणी क ॥ मु० ॥ ६ ॥ भारमल जी सूं मेलप भली, रहीज रूड़ी रीतो ए । अति प्रीतो ए । जाण के पाछल भव तणी क ॥ मु० ॥ ७ ॥ सखर तीनां रा साझ सूं, वर संजम उजवाल्यो ए । म्हें पाल्यो ए । प्रत्यत्त ही शूरा पणै क ॥ मु० ८ ॥ चित्त समाधि रही घणी म्हारा मन मझारो ए । हुंशियारो ए । थां तीनां रा साझ थी क ॥ मु० ॥ ६ ॥ शिष्य सुवनीत हुवै सही गुरु रहे आणंदो ए । चित्त चंदो ए । देव जिनेंद्र दाखियो क ॥ मु ॥ १० ॥ गुण ग्राही एहवा गुणी, पूज्य भीखण जी पेखो ए । दिल देखो ए । स्वाम गुणज्ञ सुहामणा क ॥ मु० ११ ॥ ऐसी कीजे प्रीतड़ी

जैसी भिक्खु भारी मालो ए। सुविशालो ए। सत जुगी टोकरजी सारिषी क ॥ मु० ॥ १२ ॥ जोड़ी वीर गोयम जिसी, पवर स्वाम शिष्य प्रीतो ए। हद रीतो ए। चाल सखर चौथा तणी क मु० १३ ॥ ए चोपनमी ढाल में, सखरो कह्यो संबंधो ए। प्रबंधो ए। स्वाम भिक्खु नो शोभतो क॥ मु० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

साध श्रावक ने श्राविका, बहु सुणतां तिणवार।
सीखामण दे स्वामजी, हद सखरी हितकार ॥ १ ॥
वीर जी मोक्ष विराजिया, वारु किया वखाण।
सोलह पहोरं रे आसरे, सीख दीधी सुविहाण ॥२॥
इण दुखम आरा मझे, स्वाम भीखणजी सार।
प्रत्यक्ष श्री जिन नी परै, आखो सीख उदार ॥ ३ ॥
सखर बुद्धि वाणी सखर, सखर कला सुखकार।
नीत सखर चित निरमले, वचन वदै सुविचार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५५ वीं ॥

(आगे जातां अटवी आवे ए देशी)

जिम मुझ ने जाणता, म्हांरी प्रतीतो रे। तिम हिज राखज्यो, भारमालजी री रीतो रे। सीख स्वामी तणी ॥ १ ॥ सहु सन्त सत्यां रा. भारीमाल जी नाथो रे। आज्ञा आराधज्यो, मत लोपज्यो बातो रे ॥२॥ यांरी आण लोपी ने, निकले गण बारो रे। तसु

गिणज्यो मति, चिहुं तीर्थ मझारो रे ॥ ३ ॥ यांरी आण आराधे, सदा रहे सुविनीतो रे। तसु सेवा करो, ए जिन मग रीतो रे ॥ ४ ॥ मैं पदवी आपी, भारलायक जाणी रे, भारमलजी भणी, शुद्ध प्रकृति सुहाणी रे ॥ ५ ॥ नीत चर्या पालण री, भल ऋष भारीमालो रे शंक म राखज्यो, शुद्ध साधु नो चालो रे ॥ ६ ॥ शुद्ध श्रमण सेवजो, अणाचारयां सूं दूरा रे। सीख दोनूं धरयां, हुवै मुगत हजूरा रे ॥ ७ ॥ अरिहत गुरु आज्ञा लोपे कर्म जोगो रे। अपछन्दा तिके, नहीं वंदण जोगो रे ॥ ८ ॥ उसन्ना ने पासत्था, कुशीलया प्रमादी रे। अपछंदा इणा, जिण आण विराधी रे ॥ ९॥ यां ने वीर निषेध्या, ज्ञाता में विशालो रे। संग करणो नहीं, बांधी जिनपाला रे ॥ १० ॥ आणंद लियो अभिग्रहो, जिण गण थी न्यारु रे। तसु वादूं नहीं, पहलो वचन उचारु रे ॥ ११ ॥ अन्यमति ना देव गुरु, अथवा जमाली रे। तास नमूं नहीं, नहिं वंदूं न्हाली रे ॥ १२ ॥ बलि बिगर बोलायां, बोलण रो नेमो रे, आहार आपूं नहीं, अभिग्रह लियो एमोरे ॥ १३ ॥ अभिग्रह जिन आगल, आणंद, ए लीधो रे। सप्तम अंग में शुद्ध पाठ प्रसिद्धो रे ॥ १४ ॥ रीत एहिज राखणी, चिउं

संग ने चारु रे। टालोकड़ तणी, संग दूर निवारु रे॥ १५॥ ए रीत आराध्यां पामो भव पारो रे। श्रीजिन सीखड़ी सरध्यां सुख सारो रे॥ १६॥ सहु साध साधवी. वर हेत विशेषो रे रूड़ो राखजो, धरणुं नहीं द्वेशो रे॥ १७॥ वलि जिल्लो न बांधणो. गुरु आण सुगामी रे। सीख प्रथम सही. दी भिक्खु स्वामी रे॥ १८॥ गुरु आज्ञा लोपी. बांधे जे जिल्लो रे। अति अविनीत तें, दियो कर्मां टिल्लो रे॥१६॥ ए कुल सूं ई खोटो. इसड़ो अविनीतो रे। तसु समझायने राखणो शुद्ध रीतो रे॥२०॥ दिल देख देखने दीख्या शुद्ध दीजो रे। वलि जिण तिण भणी, गण में म मुंडीजो रे॥ २१॥ श्रद्धा आचार रो, कल्प सूत्र नो बोलो रे। गुरु बुद्धिवंत री राखो प्रतीत असोलो रे॥ २२॥ कोई बोल न बैसे, केवलियां ने भलावी रे।. ताण कीजो मती मन ने समझावी रे॥ २३॥ अपछंदे विण आज्ञा, नहिं थापणो बोलो रे गुरु आज्ञा थकी, सीखो गण तोलो रे॥ २४॥ एक दो तीन आदि, निकले गण बारे रे। साध म सरधजो, शुद्ध सीख श्रीकारो रे॥ २५॥ इक आज्ञा में रहिजो ए रीत परंपर रे। लिखत आगै कियो सहु धरजो खरा खर रे॥ २६॥ कोई दोष लगावी, बलि

बोलै कूड़ो रे। प्रांछित ना लिये, तिण ने कर दीज्यो दूरो रे॥ २७॥ शासण प्रवर्तावण, सिख दीधी स्वामी रे। और कारण नहीं, भल अन्तर जामी रे॥ २८ सुणतां सुखदाई स्वामी ना बोलो रे। बहु सुणतां कह्या, आछा ने अमोलो रे॥ २६॥ ऐसा स्वाम अनोपम गण तारक ज्ञानी रे। कहा कहिये तसु वतका सुविहानी र॥ ३०॥ पचावनमी वारु कहि ढाल रसालो रे। बात सुणो वलि, जय जश सुविशालो रे॥ ३१॥

॥ दोहा ॥

सीखावण दी स्वामजी, आछी अधिक अनुप।
हलुकर्मो धारे हिये, लखरी सीख सद्रुप॥ १॥
नीर गंगा ज्यू निर्मला, पूज तणा परिणाम।
निर्मल ध्यान निकलंक चित, समता रमता स्वाम॥ २॥
पद युवराज सु आदि मुनि, पूछा करै सुजोय।
अछे खेद सूं आपरे, स्वाम कहे नहिं कोय॥ ३॥
निर्मल चर्ण पर कर्ण निज, विमल सुधा सम वाण।
अमल दिये उपदेश अरु सुणजो चतुर सुजाण॥ ४॥

॥ ढाल ५६ मी ॥

(सायर लहर सूं जाणे मींडक ए देशी)

भारीमाल शिष्य भारीजी, आदि साधां भणी, स्वाम कहे सुविचारीजी। वाण सुहामणी॥ १॥

परभव निकट पिछाणो जी। दीसै मुझ तणूं, मुझ भय मूल म जाणोजी हर्ष हिये घणो ॥ २ ॥ घणा जीवां रे घट माह्यों जी। सम्यक्त रूपियो, म्हे बीज अमोलक वाह्यो जी। मग ओलखावियो ॥ ३ ॥ देश व्रत दीपायो जी, लाभ अधिक लियो। साधपणो सुखदायो जी. बहु जन ने दियो ॥ ४ ॥ म्हें जोड़ां करी सूत्र न्यायो जी, शुद्ध जाणे सहो। म्हारे मन रे मांह्यों जी। उणायत ना रही ॥ ५ ॥ थे पिण थिर चित्त थापी जी, प्रभु पंथ पालजो। कुमति कलेश ने कापी जी, आतम उजवालजो ॥ ६ ॥ रायचन्द ब्रह्म-चारी ने जाणी जी, सीख दे शोभती। तूं बालक छै बुद्धिमानो जी, मोह कीजै मती ॥ ७ ॥ ब्रह्मचारी कहे वाणी जी, शुद्ध वच सुंदरु। आप करो जन्म रो किल्याणो जी, हूं मोह किम करूं ॥ ८ ॥ बले स्वामी सीख दे सारोजी, सहु संता भणी। आराधजो आचारो जी, मत चूको अणी ॥ ९ ॥ इरिया भाषा उदारो जी, अधिकी एषणा। वस्त्रादि लेतां विचारो जी, परठत पेखणा ॥ १० ॥ सखरी पांच सुमति जी, गुप्त गुणी धरो। दय सत शील सुदती जी, ममता मत करो ॥११॥ शिष्य शिष्यणी पर सोयो जी, उपग्रण ऊपरे। मुर्छा म कीजो कोयो जी. प्रमाद

ने परहरो ॥ १२ ॥ पुद्‌गल ममत प्रसंगो जी, तन मन सूं तजो । संजम सखर सुचंगो जी, भल भावे भलो ॥ १३ ॥ आछो सीख अनूपी जी, अति अभिराम जी । अमृत रसनो कुंपीजी, दीधो स्वामजी ॥ १४ ॥ आखी ढाल उदारो जी, षट पचासमी । जय जश करण श्रोकारो जी, स्वामी मति समी ॥१५॥

॥ दोहा ॥

सीख सखर दे स्वामजी, हद वाणी हितकार ।
स्वाम वचन सुणतां छतां, चित पामे चमत्कार ॥ १ ॥
समता खमता सखर चित, दमता रमता देख ।
नमता जमता निमल मुनि, वमता बंक विशेष ॥ २ ॥
भव समुद्र तिरवा भणी, भिक्खु भलेज भाव ।
वृद्धि भाव हद वीर रस, जाणे तिरणरो दाव ॥ ३ ॥
वर वायक वाणी विमल, दायक अभय दयाल ।
पद लायक भिक्खु प्रगट, नायक स्वाम निहाल ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५७ मी ॥

(धन धन जंबू स्वामी ने ए देशी)

शिष्य भारीमाल सोहामणा, पर्म भक्ता पहिछाण हो मुणंद पण्डित मर्ण पेखो पूज रो, बोलैएहवी वाण हो मु० धन धन भिक्खु स्वाम ने ॥१॥ धन धन निर्मल ध्यान हो मु० धन धन पवर शूरापणुं, धन धन स्वामी नो ज्ञान हो ॥ २ ॥ सखर स्वाम ना संग थी,

मन हुंशियारी माहिं हो मु० अबै विरहो पड़ै आपरो जाणै श्री जिणराय हो ॥३॥ प्रभु गोयम री प्रीतड़ी चौथे आरे पिछाण हो मु० प्रत्यक्ष आरे पंचमें भिक्खु भारीमाल री जाण हो ॥ ४ ॥ तिण कारण भारीमालजी, आखी अल्प सो बात हो विरह तुमारो दोहिलो, जाणै श्री जगनाथ हो मु० ॥ ५ ॥ भिक्खु बलता इम भणै, थे संजम पालसो सार हो, निर अतिचारे निर्मलो, होसो देव उदारो हो ॥ ६ ॥ महा विदेह क्षेत्र मझे, मुझ थकी मोटा अणगार हो मु० अरिहंत गणधर आद दे देखजो तसु दिदार हो ॥७॥ सतजुगी भाखै स्वाम ने, आप जांता दिसो झंड माहिं हो मु० स्वामी कहे सुणो साधजी, चित्त में झंड तणी नहीं चाहि हो ॥ ८ ॥ सुख स्वर्गादिक ना सहु, पुद्‌गल रूप पिछाण हो मु० पामला सुख पोचा घणा, ज्यांने जाणूं जहर समान हो ॥ ९ ॥ बार अनंती भोगव्या, अधिका सुख अहमंद हो मु० तो पिण नहीं हुवो तृपतो, तिण कारण ए सुख फंद हो ॥ १० ॥ तिण सूं म्हारे झंड तणी, वंछा नहीं लिगार हो मु० मुझ मन एकंत मोक्ष में, शाश्वता सुख श्रीकार हो ॥ ११ ॥ वैरागो एहवा मुनिवरु, जाणयो पुद्‌गल जहर हो मु० स्वाम सम्बंध सुणावतां, आवै

संवेग नी लहर हो ॥ १२ ॥ सखर सतावनमी सांभली, ढाल रसाल अपार हो मु० स्मरण भिक्खु स्वाम नो, जय जश करण श्रीकार हो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सुख कारण तारण सुजन, कुगति निवारण काम ।
विघन विडारण अति पवर, सीख समापो स्वाम ॥ १ ॥
पंडित मरण सुकरण पर, धरण आराधक धाम ।
शिव बधू वरण रु तरण शुद्ध, पूज पर्म परिणाम ॥ २ ॥
निर्मल नीत शुद्ध रीत निज, पूज प्रथमहि पेख ।
अंतकाल आयां छतां, धारु अधिक विशेष ॥ ३ ॥
समय जाण स्वामी सखर, आलोवण अधिकार ।
आतम शुद्ध करे आपरी, ते सुणजो विस्तार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ५८ मी ॥

(कोसी जल नहिं भेदे तिम ज्यारे ए देशी)

स्वाम भिक्खु तिण अवसरै रे, आउ नेड़ो आयो जाण । करै आलोवण किण विधे रे, सखर रीत सुविहाण । भविक रे भिक्खु गुण रा भंडार ॥ १ ॥ तस थावर जीवां तणी रे, हिंसा करी हुवै कोय त्रिविध २ कर तेहनो रे, मिच्छामि दुकडं मोय ॥ २ ॥ क्रोध मान माया करी रे, लोभ वशे अवलोय । भूठ लागो हुवै जेहनो रे, मिच्छामि दुकड़ं मोय ॥ ३ ॥ अदत्त जे कोई आचर्यो रे, ज्यांरा भेद अनेक

सुजोय । हद जिन आज्ञा लोपो हुवै रे, मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥ ४ ॥ ममत धरो हुवै मैथुन सूं रे, सुता जागता सोय । मन वचन काय माठा तणो रे मि० ॥ ५ ॥ परिग्रह नवूं प्रकार नो रे शिष्य शिष्यणी उपधि पर सोय । त्रिविध २ ममता तणुं रे मि० ॥ ६ ॥ किणहि सूं क्रोध कियो हुवे रे, वलि क्रोध वशे वच कोय । करड़ो सीख किण ने कही रे ॥ मि० ॥ ७ ॥ मान माया लोभ मन में धर्यो रे. दिल धर्या राग द्वेष दोय । इत्यादिक पाप अठार नो रे ॥ मि० ॥ ८ ॥ राग कियो हुवे रागी थको रे, द्वेषी सूं धर्यो हुवे द्वेष । मन साचै हिवे मांहरै रे, वर मिच्छामि दुकडं विशेष ॥ ६ ॥ पांचूं आस्रव पाडुवा रे, लागो जांणयो किण वार । संभाल २ स्वामी जो रे, आ-लोया अतिचार ॥ १० ॥ पंच सुमति तीन गुप्ति में रे, पंच महाव्रत मझार । याद करे अतिचार ने रे आलोवै भिक्खु अणगार ॥ ११ ॥ सहु जीवाजोनि संसार में रे, चउरासी लाख सुचिन्त । ज्यांरा भेद जू जूआ जाणजो रे, खमावूं धर खंत ॥ १२ ॥ वडा शिष्य सुविनीत छै रे, अंतेवासो अमोल । आगै लहर आई हुवै रे, खमावे दिल खोल ॥ १३ ॥ वले संत अने सतियां मझेरे, कैकां ने करड़ा देख । कठिण

सीख कड़वो कह्यो रे, खमावूं सु विशेष ॥ १४ ॥ श्रावक ने वले श्राविका रे, केई कठिण प्रकृति रा कहाय । कठिण वचन कह्यो हुवै रे, खांत करी ने खमाय ॥ १५ ॥ केई गण बारै निकल्या रे, साध साधवी सोय । करड़ो काठो कह्यो हुवै रे, ज्यां सूं खमत खामणा जोय ॥ १६ ॥ चन्द्रभाणजी थना मभ्फे रे, तिलोकचंदजी ताम । कहिजो खमत खामणा मांहरा रे त्यां सूं पड़ियो बोहलो काम ॥ चरचा कीधी चूंप सूं रे, घणा जण सूं बहु ठाम । वच कठण कह्या जाणया तसु रे, खमावै ले नाम ॥ १८ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुंता रे छिद्र पेही अध्य-वसाय । त्यां ऊपर खेद आई तिका रे, सगलां ने देऊं खमाय ॥ १६ ॥ चऊ तीर्थ शुद्ध चलायवा रे, सीखा-मण देता सोय । कठिन वचन जो कह्यो हुवे रे, मुझ खतम खामणा जोय ॥ २० ॥ इण विध करि आलो-वणा, रे गिरवा महा गुणवंत । स्वाम भीखणजा शोभता रे, पदवीधर पूज महंत ॥ २१ ॥ एहवी आलोवण कानां सुणयां रे, आवै अधिक वैराग । करे त्यांरो कहिवो किसूं रे, त्यारे माथे मोटा भाग ॥ अठावनमी शोभतो रे, आखो ढाल सुएन । जय जश करण भिक्खु भला रे चित्त सुणतां पामै चैन ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

इण विध करी आलोवणा, निर्मल निरतिचार ।
स्वाम हुवा शुद्ध रीत सूं, अब अणशण अधिकार ॥ १ ॥
भाद्र शुक्ल पंचम भली, सम्वत्सरी नो सार ।
स्वाम कियो उपवास शुद्ध, चित्त उजल चोविहार ॥ २ ॥
अतुल तृषा नो ऊपनी, अधिक असाता आम ।
सखर आण शूरा पणो, समचित सहिज स्वाम ॥ ३ ॥
पूज कियो छठ पारणो, औषध अल्प आहार ।
पिण ते समो न परगम्यो, वमन हुवो तिण वार ॥ ४ ॥
तिण दिन तीनूं आहारना, त्याग किया तहतीक ।
पुद्गल स्वरूप पिछाणियो, निर्मल स्वाम निरभीक ॥५॥

॥ ढाल ५६ मी ॥

(राजा राघव रायारा राय ए देशी)

सातम आठम भिक्खु स्वाम जो, अल्प सो लियो अहारो । तत खिण त्याग किया मन तोखै, हद पूजरो मन हुंशियारो ॥ भिक्खु स्वामी आप जिन मत अधिक जमायो ॥ १ ॥ खेतसीजी स्वामी कहै खांच कर, तरकै न करणा त्यागो । पूज कहे देहो पतली पाड़णी, वारू विशेष चाहिजे वैरागो ॥ २ ॥ भाद्र शुक्ल नवमी दिन भिक्खु, कहे करूं आहार ना पचखाण । कहे खेतसीजी मुझ कर केरो, चर्म आहार लो पिछाण ॥ ३ ॥ अल्प आहार खेतसीजी आणियो, चाख किया पचखाणो । वारु मन राख्यो शिष्य

सुविनीत गे, पिण वहुल इछा मत जाणो ॥ ४ ॥ दशम दिन भारीमालजी विनवै, स्वामी आहार कीजै सुविहाणो । चाली चावल दश मोठ रे आसरे, चाख किया पच्चखाणो ॥ ५ ॥ इग्यारस आहार त्याग दियो मुनि, अमल पाणी उपरंतो । मुझ हिव आहार लेतो मत जाणजो, कह्यो वयण अमोलक तंतो ॥ ६ ॥ बारस दिन बेलो कियो पूज, तीन आहार तणा किया त्यागो । सखर संथारो करण सूं स्वामी नो. वारु चढ़तो वैरागो ॥ ७ ॥ सामली हाट सूं उठ मुनीश्वर, चलिया २ आयो । पकी हाट ने पका मुनीश्वर पको संथारो सुहायो ॥ ८ ॥ सयण शिष्यां कीधो सुखदाई, वारु पूज लियो विसरामो । इतले ऋष रायचन्दजी आय ने, रूडा वचन वदै अभिरामो ॥ ६ ॥ स्वामी कृपा कीजे दर्शण दीजिये, वदै ब्रह्मचारीजी विख्यातो । पूज स्हामुं जोवे नेत्र खोल ने. हद मस्तक दीधो हाथो ॥ १० ॥ पूज ने कहै प्राक्रम हीण पड़िया, ऋषराय तणी सुण वायो । भिक्खु पहिलां तन तोल त्यारी था, सुण सिंह ज्यूं उठ्या मुनिरायो ॥ ११ ॥ भिक्खु कहे बोलावो भारीमाल ने. वले खेतसी जी ने विचारो । याद करंताई संत दोनूं ई, झट आय उभा है तिवारो ॥ १२ ॥ नमोथुणो कियो अरिहंत

सिद्धा ने, तीखे वच्च बोल्या तामो। बहु नर नारी सुणतां ने देखतां, संथारो पचख्यो भिक्खु स्वामो ॥ १३ ॥ शिष्य परम भगता कहै स्वामी ने, क्यूं न राख्यो अमल रो आगारो। पूज कहै आगार किसो हिवै, किसी करणी काया नो सारो ॥ १४ ॥ भाद्रवा सुदि बारस भली, तिथी सोमवार सुविचारो। अण शण आदस्यो वैराग आणी ने, शुद्ध छेहलो दुघड़ियो सारो ॥ १५॥ घणा जन आवंता गुण गावंता, बोलत वेकर जोड़ो। धिन २ हो थे मोटा मुनीश्वर कीधी बडां बडेरां री होडो ॥ १६ ॥ केई सनमुख आया ने प्रणमें पाया, विकसत होवै विलासं। खांत करी ने स्वामी ने खमावता, हिवड़ै आण हुलासं ॥ १७ ॥ धिन २ पूज रो धीरापणुं धिन २ पूजरो ध्यानो। धिन २ स्वाम शूरा घणा सदरा, मन कियो मेरू समानो ॥ १८ ॥ आखी ए गुणसठमी ओपती, शुद्ध ढाले स्वाम संथारो। भल जय जश कर स्वाम भिक्खु नो, स्मरण महा सुखकारो ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

केकां अभिग्रह पहवो कियो, यां शुद्ध मत काढ्यो सार।
छेहड़े अणशण आवसी, पको उतरसी पार ॥ १ ॥
इण विध अभिग्रह आदर्यो, भोला लोकां ताम।

वात सुणी कहै पचखियो, अणशण भिक्खु स्वाम ॥ २ ॥
द्वेषी था जिन धर्म ना, चित्त पाम्या चिमत्कार।
जाण्यो ए मारग खरो, कई वांदे वारुं वार ॥ ३ ॥
अति नर नारी आवतां, गावत मुनि गुणग्राम।
बाजार मांहि अमावता, सरावता भिन स्वाम ॥ ४ ॥

॥ ढाल ६० वीं ॥

(राम को सुजश घणो ए देशी)

स्वाम तणो संथारो सुणी हो, आवे लोक अनेक। कोड करी ने करै घणा हो, वारु वैराग विशेष॥ स्वामी नो सुजश घणो ॥ १ ॥ कोई कहै संथारो सीझै स्वामी नो हो, त्यां लग काचा पाणी ना त्याग। कोई करै त्याग कुशील रा हो, वर चित आण वैराग ॥ २ ॥ केई अन्न आरम्भ न आदरै हो, केई करै हरी ना पचखाण। केकां रात्रि भोजन तज्यो हो, इत्यादि वैराग वखाण ॥ ३ ॥ केई धर्म तणा द्वेषी हुंता हो, ते पण अचरज पाम्या तिणवार। अनमी कई आवी नम्या हो, स्वाम तणे संथार ॥ ४ ॥ पडिकमणो कीधां पछै हो, स्वाम भिक्खु सुविहाण। भारीमाल आदि शिष्य भणी हो, कहै वारु करो वखाण ॥ ५ ॥ शिष्य सुविनीत कहै सही हो संथारो आपरे सोय। वखाण नो सूं विशेष छै हो, तब पूज्य बोल्या अव-लोय ॥ ६ ॥ किणहि आरजियां अणशण कियो हुवै

हो, तो करो वखाण त्यां जाय । मुझ अणशण माहें देशना हो, नहिं करो थे किण न्याय ॥ ७ ॥ वखाण कियो विस्तार सूं हो, शिष्य सुविनीत अंगीकार । भागवली भिक्खु तणो हो, मिलियो जोग उदार ॥ ८ ॥ परिणाम चढ़ता पूज रा हो, इण विध निकली रात । दिन तेरस हिव दीपतां हो, प्रगटियो प्रभात ॥ ९ ॥ गांम २ रा आवै घणा हो, दर्शण करवा देख । जाणक मेलो मंडियो हो, वारु हर्ष विशेष ॥ १० ॥ गुण स्वामी ना गावता हो, आवता अति जन वृन्द । हिवड़े हर्ष हुलसावता हो, पामता परमानन्द ॥ ११ ॥ जश करमी था जीवड़ा हो, जय जश करता जन । पर्म पूज मुख पेखने हो, तन मन होय प्रसन्न ॥ १२ ॥ धुर ही थी धर्म छाण ने हो, शुद्ध मग लियो सार । अंत तांई उजवालियो हो, जिन मारग जयकार ॥ १३ ॥ धोरी थे जिन धर्म ना हो, इम बोलै नर नार । शूर पणै सखरो कियो हो, स्वामी थे संसार ॥ १४ ॥ ए साठमी गुण आगली हो, रूड़ी ढाल रसाल । जय जश करण स्वामी तणो हो, वारु गुण विशाल ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

पाणी पीधो पूज जी, आफे चित्त उजमाल ।
पोहर दिवस जाझो प्रगट, आयो थो तिण काल ॥ १ ॥

साध वैठा सेवा करै आणो हर्ष अपार ।
श्रावक श्राविका स्वाम नो, देख रह्या दिदार ॥ २ ॥
भिक्खु अष शुद्ध भाव सूं. ध्यावत निर्मल ध्यान ।
सकैनौ जाणो स्वाम नै, उपनो अवधि सुज्ञान ॥ ३ ॥
साध श्राविक होवे सही, वैमानिक विख्यात ।
अवधि ज्ञान तसु उपजै, आगम वचन आख्यात ॥ ४ ॥
दिन चढ्यो पोहोर दोढ़ आसरै, सांभलतां सहु कोय ।
वचन प्रकाशे किण विधे, भल सुणिये भवि लोय ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६१ मी ॥

हेमराज जी स्वामी कृत ।

(नमो अरिहंताणं नमो सिद्ध निरवाणं ए देशी)

साधु आवै साहमां जावो, मुनि प्रकाशे वाणं । वले साधवियां आवे बागै, स्वामी बोलै वचन सुहाणं ॥ भवियण नमो गुरु गिरवाणं, नमो भिक्खु चतुर सुजाणं ॥ १ ॥ के तो कह्यो अटकल उनमाने, के कह्यो बुद्धि प्रमाणं । के कोई अवधि ज्ञान उपनो, ते जाणे सर्व नाणं ॥ कैई नर नारी मुख सूं इम भाखै, स्वामी रा जोग साधां में वसिया । इतले एक मुहूर्त्त आसरे, साध आया दोय तिसिया ॥ ३ ॥ विकसत २ साधु वांदे, चर्ण लगावै शीशं । नर नारी जाणे अवधि उपनो, साचो विश्वावीसं ॥ ४ ॥ स्वामी साधु आया जाणी, मस्तक दीधो हाथं । एटले दोय मुहूर्त्त आसरे, आयो साधवियां रो साथं ॥ ५ ॥ वैणी

रामजो साध वदीता, साथे खुसाल जी आया। साध वियां वगतुजी जुमां डाहीजो, प्रणमे भिक्खु पाया ॥ ६ ॥ परचा ज्यूं ज्यूं आय पुगै छै नर नारी हर्षन्त थावै। धिन हो धिन थे मोटा मुनीश्वर, आप तुले कुण आवै ॥ ७ ॥ आया ते साधु गुण गावे भांत २ प्रणाम चढ़ावे। थे मोटा उपगारी महिमा भागे, सखरो सुजश सुणावे ॥ ८ ॥ थे पका २ पाखण्डी हटाया, सूत्र न्याय वताया। दान दया आछा दीपाया। वुद्धिवंता मन भाया ॥ ९ ॥ सावद्य निर्वद्य भला निवेड़ा, कीधा बुद्धि प्रमाणं। सूत्र न्याय श्रद्धा शुद्ध लीधो, धारी अरिहंत आणं ॥ १० ॥ साधां जाणयो स्वामी सुता ने, घणी हुई छै वारं। आप कहो तो वैठा करां हिव, जव भरियो कांय हुंकारं ॥ ११ वैठा कर साधु लारे वैठा, गुण स्वामी रा गावै। वहु नर नारी दर्शण देखी, मन में हर्षत थावै ॥१२॥ आयो आऊखो अण चिन्तवियो, वैठा २ जाणं। सुखे समाधे वाह्य दिसत, चट दे छोड्या प्राणं॥ १३ ॥ अणशण आयो सात भगत नो, तीन भग्त संथारं। सात पोहोर तिण माहें वरत्या, पको उतारयो पारं ॥ १४ ॥ मांहडी सींवे दरजी पूगा, कहै सूई पग में घाली। अचरज लोक पाम्या अधिको, चट स्वामी

गया चालो ॥ १५ ॥ सम्वत अठारै साठे वर्षे, भाद्रवा सुद् तेरस मंगलवार । पूज पोंहता परलोक शिरि-यारी, गुण गावै नर नार ॥१६॥ दिन पाछलो दोढ पोहर आसरे, उण बेलां आऊखो आयो ।दिवसे मरवो रात्रि जनमवो, कहै बिरला ने थायो ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

संथारो कीधो सखर, सखर स्वाम श्रीकार ।
शूर पणे सिझ्यो सखर, सखर सुजश संसार ॥ १ ॥
साधां तन वोसिरायनें, चिउं लोगस्स चित्त धार ।
कियो तदा शुद्ध काउसग्ग, अरु तिण दिन तज आहार २॥
पूज तणो विरहो पड्यो, कठिण अधिक कहिवाय ।
याद कियां अरिहंत ने, समभावे सुख पाय ॥ ३ ॥
अहो अथिर संसार ए, संजोग जठे विजोग ।
पूज सरीषा पुरुष था, पोंहता आज पर लोग ॥ ४ ॥
देख्या भिक्खु दिलकरी, वारु निसुणो वाण ।
याद करे ते अति घणा, जन गुण ग्राही जाण ॥ ५ ॥
चिउं तीर्थ आवी मिल्या, स्वाम तणे संथार ।
मास भाद्रवा रे मझै, अचरज ए अधिकार ॥ ६ ॥
प्रवल पुन्य ना पोरसा, प्रवल गुणागर जाण ।
पूज हुंता प्रगट पणे, परभव कियो पयाण ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६२ मी ॥

(आनंदा रे ए देशी)

स्वाम संथारो सीझियां गुणधारी रे, म्हेल्या मांढो रे मांहिं ॥ स्वाम सुखकारी रे ॥ तेरह खंडी

मांहढ़ो तणो गु० महिमा कोधो अथाय स्वा ॥ १ ॥ रुपया सैंकड़ा लगाविया गु० अनेक उछाल्यां लारे भिक्खु ऋष भारी रे ॥ ए सावद्य किरतब संसारना गु० तिण में नहीं ततसार स्वा ॥ २ ॥ बात हुई जिसी वरणवे गु० समभावे सुविचार स्वा० तिण मांहें पाप म ताणजो गु० दंभ तजो दिलधार स्वा० ॥ ३ ॥ अति घन जन वृंद आविया गु० आदरे सूंस अनेक स्वा० विविध वैराग बधावता गु० वारु आण विवेक स्वा० ॥ ४ ॥ पूज संथारो पेखने गु० गावै जन गुण ग्राम स्वा० धिन २ भिक्खु स्वामजी गु० नित्य प्रत लीजे नाम स्वा० ॥ ५ ॥ आदेज वचन सु ओपतो गु० स्वामो सिंघ सरूप स्वा० खिम्यावंत स्वामी खरा गु० सखरा स्वाम सद्रुप ॥ ६ ॥ नीत स्वाम नी निरमली गु० प्रीत स्वाम गुण पूर स्वा० जीत लिया जन दुरमती गु० स्वाम वदीत सनूर ॥७॥ स्वाम बुद्धि ना सागरू गु० निरमल मेल्या न्याय स्वा० प्रत्यक्ष आरे पांचमें गु० जिन मत दियो जमाय ॥ ८ ॥ उद्यमी स्वामी अति घणा गु० स्वाम सुमति सुखदाय स्वा० स्वाम गुपति हद शोभती गु० निरमल स्वाम नरमाय ॥ ९ ॥ मणिधारी स्वाम महा मुनि गु० स्वाम प्रवर संतोप स्वा० जग तारक

स्वामें जाण जो गु० पूरण स्वाम नो पोष ॥ १० ॥ दिशावान स्वाम दीपतो गु० अधिकी बुद्धि उत्पात स्वा० मिथ्या तिमिर सुमेटवा गु० सूर्य स्वामे साख्यात ॥ ११ ॥ सखर भिक्खु नाम सांभलो गु० पाखण्ड भय पामंत स्वा० जश भिक्खु नो जगत में गु० देश २ में दीपंत ॥ १२ ॥ स्वाम तिलक शासण तणो गु० स्वाम आज्ञा सु उवेख स्वा० स्वाम समी हद शोभता गु० स्वाम दमोसर देख ॥ १३ ॥ स्वाम सुदान दीपावियो, गु० स्वाम सुज्ञान सरद्ध स्वा० स्वाम सुजान शोभावियो गु० स्वामें सुमान मरद ॥ १४ ॥ द्रव्य भाव स्वाम देखाविया गु० स्वाम आस्रव ओल० खाय स्वा० पुन्य पाप ने परखने गु० स्वाम दिया सरधाय ॥ १५ ॥ स्वाम संवर अरु निरजरा गु० बंध मोक्ष पहिछाण स्वा० स्वाम जीवादिक जूजुआ गु० स्वाम देखाया सुजाण ॥ १६ ॥ स्वाम दया ओल- खाय ने गु० अति घन कीध उद्योत स्वा० स्वाम सावद्य निरवद्य सोधने गु० घण घट घाली जोत ॥ १७ ॥ शुभ जोगां ने स्वामं जी गु० ओलखाया हद रीत स्वा० आसता स्वाम नी आदर्यां गु० जाय जमारो जीत ॥ १८ ॥ इन्द्रीवादी ओलखावियो गु० कर कालवादी निकंद स्वा० प्रज्ञावादी पिछा-

णियो गु० स्वाम साचेलो चन्द ॥ १९ ॥ आचार सरधा ऊपरे गु० स्वाम शोध्या शुद्ध न्याय स्वा० स्वाम सूत्र वच शिर धरी गु० व्रत अव्रत बताय ॥ २० ॥ सोध्या तो लाधे नहीं गु० स्वाम सरीषा साध स्वा० करोड़ो काम पड्यां चरचा तणो गु० आवेला भिक्खु याद ॥ २१ ॥ स्वाम भीखण जी सारीखा गु० भरत क्षेत्र रे मांहि स्वा० हुआ ने होसी बले गु० हिवड़ा नहिं देखाय ॥ २२ ॥ ऐसा भिक्खु ऋष ओपता गु० याद करे नर नार स्वा० पूज गुणा रो पंजारो गु० स्वाम सकल सुखकार ॥ २३ ॥ स्वाम तणो नाम सम्भरयां गु० आवे हर्ष अपार स्वा० तो प्रत्यक्ष नो कहिवो किसूं गु० पामे तन मन प्यार ॥ २४ ॥ शरियारी में स्वामजी गु० साठे वर्ष संथार, मास भाद्रवा में भलो गु० जीत गर्भ में जिवार ॥ २५ ॥ पंचम काले हूं ऊपनो गु० पिण इक मुझ हर्ष पर्म स्वा० आप शुद्धमग धारयां पछै गु० जन्म थई पायो धर्म ॥२६॥ आशा पूरण आपछो गु० मेटण सकल संताप स्वा० समरण नित्य प्रति स्वाम नो गु० जपूं तुम्हारो जाप ॥२७॥ वासठमी ढाल ओपती गु० समरया स्वाम सुजाण स्वा० जय जश करण भिक्खु भला गु० पूरण प्रीत पिछाण ॥२८॥

॥ दोहा ॥

वरष तयालीस विचरिया, जाम्को कांयक जोय ।
चारित्र पाल्यो चूंप सूं, हर्ष हिये अति होय ॥ १ ॥
अधिक बल इंद्रयां तणो, निरमल देह निरोग ।
भिक्खु सूरत अति भली, अरु तीखो उपयोग ॥ २ ॥
सखर चौमासा स्वम ना, वारु अधिक विशाल ।
सांभलजो भविग्रण सहु, वरस सहित चौमाल ॥ ३ ॥
आठ चौमासा आगे किया, असल नहिं अणगार ।
सतरा सूं साठा लगे, वरत्यो शुद्ध व्यवहार ॥ ४ ॥
किहाँ २ चौमासा किया, जूजुआ नाम सुजाण ।
संक्षेपे निरणय सहु, आंखू उज्कम आण ॥ ५ ॥

॥ ढाल ६३ मी ॥

(सीता आवे रे धर राग ए देशी)

शहर केलवे षट चौमासा, सतरे इकवीसे सोय । पचीसे अड़तीसे गुणपचासे अठावने अवलोय ॥ भिक्खु भजले रे धर भाव ॥ १ ॥ चारु एक चौमासो बड़लु बरस अठारै विचार । राजनगर वीसे शुद्ध रीते, कियो घणो उपकार ॥ २ ॥ दोय चौमासा किया दीपता, पवर कंटाल्ये पिछाण । चौवीसे अठावीसे चारु जन्म भूमि निज जाण ॥ ३ ॥ बगड़ी तीन चौमासा बारु, सतवीसै सुविशेष । तीसै अरु छतीसै त्यां द्रव्य दीख्या महोछब देख ॥ ४ ॥ गढ़ रिणतभंवर किलारी तलेटी , नगर माधोपुर न्हाल ।

दोय चौमासा किया दीपता, इकतीसे अड़ताल ॥५॥
दोय चौमासा किया दीपता, प्रगट शहर पींपार ।
चउतीसै पैंतालीसै वर्षे, कियो घणो उपगार ॥ ६ ॥
एक चौमासो शहर आंवेट में, वर्ष पैंतीसे विचार ।
सैंतीसै पादु सुखदाई, भिक्खु गुण भंडार ॥ ७ ॥
सोजत शहरे कस्या स्वामजी, वारु एक चौमास ।
बर उपगार तेपने धर्म वृद्धि हेम चरण तिण वास ॥
८ ॥ श्री जी दुवारे तीन चौमासा, तसु धुर वरष तयाल । पवर पचासै छपनै पूरण,बर उपगार विशाल ॥ ६ ॥ पुर में दोय चौमासा प्रगट, स्वाम किया सुविहाण । सैंतालीसे वर्ष सतावने, जुओ छोडायो जाण ॥ १० ॥ शहर खेरवे पांच चौमासा, छावीसै बतीसे छाण । वर्ष इकताले अरु छयाले, बलि चौपने जाण ॥ ११ ॥ सात चौमासा पाली शहरे, तेवीसे तेतीसे थाट । चालीसै चमाले बावने, पंचावने गुण-साठ ॥ १२ ॥ सात चौमासा शरियारी में उगणीसै बावीसै सार । गुणतीसे गुणाल वयाल एकावने, साठे कियो संथार ॥ १३ ॥ पनरे गाम चौमासा पगट, स्वाम किया श्रीकार । ज्ञान दिवाकर घण घट पाली, मेट्यो भ्रम अंधार ॥ १४ ॥ श्री वर्द्धमान तणो शासण, सखरो दीपायो स्वाम । बहु जीवां ने प्रति-

बोद्धि ने, पोंहता परभव ठाम ॥ १५ ॥ सुख कारण तारण भव सारण, विघन विदारण वीर। नरक निवारण जनम सुधारण, सखरा स्वाम सधीर ॥१६॥ समता दमता खमता रमता, नमता जमता न्हाल। तमता भ्रमता बमता तन मन गमता वचन विशाल ॥ १७ ॥ आप उजागर गुण मणि आगर, साघर स्वाम सुजाण। वयण सुधावागर धर्म जागर, नागर नाथ निध्यान ॥ १८ ॥ भरम विहंडन दुरमति खंडन महि मंडन मुनिराज। कुमति निकंदन मने आनंद पूज भवो दधि पाज ॥ १९ ॥ सुमती करण अघ हरण स्वामजो, शिव वधू वरण सनूर। भव दधि तरण करण सुख सम्पति, चरण धरण चित्त शूर।२०।परम धरम भज भरम करम तज, शरम नरम उभ साज। शिव पद अचरम आप आराधण, रूडै भिक्खु ऋषराज ॥ २१ वर वायक पद लायक वारु, नायक नाथ निहाल बोद्धि पमायक धरम वधायक, दायक स्वाम दयाल ॥ २२॥ ज्ञान गम्भीरा सखर सधीरा, षट पीहरा तज खार। हिवड़ै स्वाम अमोलक हीरा, तोड़ जंजीरा तार ॥ २३ ॥ जप तपनी तरवारे झटको पाखण्ड पटको पैल। समय सुलटको गुण नो गटको मटको मन को मेल ॥ २४ ॥ ऐसा भिक्खु आप ओजागर

अवतरिया इण आर। स्वाम जिसा चौथै आरे पिण, विरला संत विचार ॥२५॥ जन्म किल्याण कंटाल्यो जाणो, शरियारी चरम किल्याण। द्रव्य दीख्या महोछव वगड़ी में जोड़ै ए त्रिहुं जाण॥ २६ ॥ स्वाम भिक्खु हिवड़े संभरियां हियो तन मन हुल-साय। सूक्ष्म बुद्धि करी सुविचार्यां विमल कमल विकसाय॥ २७ ॥ भाद्र शुक्ल तेरस दिन भिक्खु परभव कियो पयान। तिथे चउदश धरती धूजी अति, न्याय जाणै बुद्धिवान॥ २८ ॥ तीन प्रकारे धरती धूजै, ठाणांग तीजै ठाण। भेद जुजुआ श्री जिन भाख्या, समझै सखर सयाण॥ २९ ॥ घर में वर्ष पचीस आसरै, आठ भेष में तास। पछै संजम ले परभव पोंहता, चमालीस में वास॥ ३० ॥ सर्व आउ सतंतर वरष आसरे, साझ्यो भिक्खु स्वाम। जीव घणा समझाविया रे, कीधो उत्तम काम ॥३१॥ साध साधवी स्वाम छतां आसरे, एक सौ चार वोद्धि। देशव्रत दीधो बहुने, सखरी रीत सुशोध ॥ ३२ ॥ अड़ती सहंस आ जरे कीधी, युक्ति न्याय सूं जोड़। मुरधर मेवाड़ ढूंढार हाडोती, विचर्या शिरमणि मोड़ ॥ ३३ ॥ राम नाम ज्यूं रटे स्वाम ने मुझ मन अधिक निहोर। हंसा मानसरोवर हरखे,

चित्त जिम चन्द चकोर ॥ ३४ ॥ चात्रक मोर पपईया घन चिन, गरजी ध्यान गगन । राग विलासी राग आलापे, मुझ भिक्खु में मन ॥ ३५ ॥ पतिव्रता समरे जिम पिउ ने, गोप्यां रे मन कान्ह । तंबोली रा पान तणी पर, धरूं स्वाम नो ध्यान ॥ ३६ ॥ आशा पूरण आप तणा गुण, कह्या कठा लग जाय । सागर जल गागर किम मावै, किम आकाश मिणाय ॥ ३७ ॥ श्री वीर तणे पट स्वाम सुधर्मा, भिक्खु पट भारीमाल । रायचन्द ऋष तीजै पाटे, दाख्यो आगुंच दयाल ॥ ३८ ॥ आप तणा गुण हूं किम विसरूं, आप तणो आधार । स्मरण आप तणो नित्य समरूं, आप दयाल उदार ॥ ३६ ॥ नाम आपरो घट भीतर मुझ जपूं आपरो जाप । तुझ नामे दुख दोहग दूरा, कटै पाप संताप ॥ ४० ॥ मन वंछित मिलिये तुझ स्मरण, साध्यां सेती सोय । भजन तुम्हारो भय भव भंजन, हर्ष अनोपम होय ॥ ४१ ॥ मंत्राक्षर जिम स्मरण मोटो, परख्यो म्हें तन मन । इह भव परभव में हितकारी, भिक्खु तणो भजन ॥ ४२ ॥ नमो २ भिक्खु ऋष निरमल, मोक्ष तणा दातार । स्मरण स्वाम तणो शुद्ध साध्यां शिव सुख पामें सार ॥ ४३ ॥ हूंस घणा दिन सूं मुझ

हूंती, आज फली मन आश। भिक्षु जश रसायण नामें, ग्रंथ रच्यो सुविलास ॥ ४४ ॥ विस्तार रच्यो भिक्खु मुनिवर नो, सुणियो तिण अनुसार। भिक्षु दृष्टन्त हेम लिखाया, देखी ते अधिकार ॥ ४५ ॥ वैणीरामजी हेम कृत वर, भिक्खु चरित सुपेख। इत्यादिक अवलोकी अधिको, ग्रंथ रच्यो सुविशेष ॥ ४६ ॥ अधिको ओछो जे कोई आयो, विरुद्ध आयो हुवे कोय। सिद्ध अरिहंत देव री साखे, मिच्छामि दुक्कड़ं मोय ॥४७॥ संवत उगणीसै आठे आसोज, एकम सुदि सार। शुक्रवार ए जोड़ रची, बीदासर शहर मझार ॥ ४८ ॥ तेसठमो ढाले स्वामी समरया, कर्म काटण रे काम। कर जोड़ी ऋष जीत कहै, नित्य लेऊं तुम्हारो नाम ॥ ४९ ॥

॥ कलश ॥

मतिवंत संत महंत महा मुनि, तंत भिक्खु ऋष तणा। गुण सघन गाया परम पाया, हद सुहाया हियै घणा ॥ तज जंत्र मंत्र सुतंत्र लौकिक, भज ए मंत्र मनोहरु। सुख सद्म पद्म सुकरण जय जश नमो भिक्खु मुनि वरु ॥

॥ सम्पूर्णम् ॥

१६, सोनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।

हिन्दी साहित्य का चमकता हुआ रत्न—

साहित्य प्रभाकर।

इस में शृङ्गार, हास्य, करुण आदि नवों रसों नायिका भेद, राजनीति धर्म, उपदेश देशप्रेम इत्यादि विविध विषयों पर प्राचीन और नवीन करीब २५१ कवियों की कमनीय कविताओं का सुन्दर संग्रह किया गया है जो कि प्रायः सभी प्रकार की रुचि वाले पाठकों के लिये एकसा रुचिकर, मनोरञ्जक एवं शिक्षा प्रद है। कविताओं का चुनाव ऐसा उत्तम हुआ है कि पढ़ते ही तबियत फड़क उठती है—दिल बाग़ बाग़ हो जाता है।

इस में कितने ही ऐसे प्राचीन कवियों की रचनाओं का समावेश किया गया है जिन की कविताओं के पढ़ने का सौभाग्य सर्व साधारण को अभीतक प्राप्त नहीं हुआ। अत्यन्त परिश्रम और प्रचुर अर्थ-व्यय करके उन का संग्रह किया गया है और नवीन कवियों की भी ऐसी ही अप्रकाशित कविताओं को बड़े प्रयत्न से प्राप्त कर इस में स्थान दिया गया है। फुट नोट में कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं। अन्त में ४४ पृष्ठों का साहित्य-कुञ्ज दिया गया है जिसको पढ़ कर चित प्रसन्न हो जाता है। हम यह ज़ोरके साथ कह सकते हैं कि इतना बड़ा संग्रह इसके पहिले प्रकाशित नहीं हुआ जिस में ८०० वर्ष के कवियों की कविता एक ही पुस्तक में मिल सके। सारांश यह कि आज तक की निकली हुई इस प्रकार की पुस्तकों से यह पुस्तक सभी अंशों में श्रेष्ठ है। यदि आप को कुछ भी साहित्य से अभिरुचि है, विविध कवि-कोविदों कृत भांति २ की मनोहर रचनाओं को पढ़ कर मनोरञ्जन और शिक्षा प्राप्त करना है और सैकड़ों कविता-पुस्तकोंके बंडल को एक ओर रख कर एक ही पुस्तक से अपनी

इच्छा की तृप्ति करना है, तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़िये। मूल्य ३॥) इस में निम्न लिखित कवियों की सर्वश्रेष्ठ और चुनी हुई कवितायें दी गई है:—

प्राचीनों में—

चंदवरदाई, विद्यापति ठाकुर, कबीरदास, कमाल, गुरु नानक, सूरदास, मलिक मुहम्मद जायसी, नरोत्तम दास, मीरा बाई, हित हरिवंश, नरहरि, टोडरमल, बीरबल, तुलसीदास, गंग, गोप, निपट निरंजन, कृपाराम, अकबर, बलभद्र मिश्र, जमाल, रहीम, केशवदास, रसखान, तानसेन, नन्ददास, पृथ्वीराज और चम्पादे, मुबारक, उसमान, बनारसी, सेनापति, प्रवीणराय, सुन्दरदास, विश्वनाथ, बिहारी, अहमद, सुन्दर, चिन्तामणि, भूषण, मतिराम, कुलपति मिश्र, घासीराम, राजाराम, जसवंतसिंह, बनवारी, मणिमंडन मिश्र 'मंडन', बेनी, सुखदेव मिश्र, राजकवि, नीलकण्ठ, शिवनाथ, ताज, सबलसिंह चौहान, नृप शम्भु, भरमि, कालीदास, आलम और शेख, लाल, गुरु गोविन्द सिंह, देव, वृन्द, श्रीपति, भैया भगवतीदास, बैताल, अनन्य, उदयनाथ कवीन्द्र, घनश्याम शुक्ल, नेवाज, देवीदास, सैयद गुलाम नबी, घन आनन्द, कुन्दन, घाघ, भिखारीदास, नागरीदास, रसनिधि, रघुनाथ, गुमान, दुलह, भूधरदास, किसन, गिरिधर, बैरीसाल, शीतल, ऋषिनाथ, गंजन, बक्सी हंसराज, तोष, सुन्दरि कुंवरि, ठाकुर, राजा गुरदत्त सिंह, 'भूपति' दलपतिराय तथा वंशीधर, शिवदासराय, सोमनाथ, शिव, देवकीनन्दन, किशोर, रामजी भट्ट, पुखी, कुमारमणि भट्ट, बोधा, शंभुनाथ मिश्र, भगवंतराय खींची, बिहारी (द्वितीय) पद्माकर, चन्दन, सूदन, जसुराम, बालकृष्ण, सहजोबाई, हीरालाल, नाथ, हरिसिंह, भंजन, सन्नम, रामचन्द्र, वृन्दावन, थान, बेनी बेंतीवाले, कान्ह, गुनदेव, चन्द्रशेखर बाजपेयी, करन, मून,

मिलने का पता—ओसवाल प्रेस,

अज्ञात कालिक—

ऊमरदान, करसनदास, करनेश, किशनिया केशरी सिंह गद्द, गिरिधर (तृतीय) गोपाल, जीवाभक्त, नेष्ठलाल, तोपनिधि, द्विजराज, धर्मधुरन्धर, नवनीत, नीलकंठ, प्रधान, फकीरुद्दीन, बाजींद, ब्रह्मानंद, वंशगोपाल, भवानी प्रसाद, भावनादास, भोजराज, मनोहर, मीरन, मौडजी, रघुनन्दन, रनछोड़, रसिराज, रविराम, रससिन्धु, राज, राजिया, लाल, शालिग्राम, शीतल, संगम स्वरूपदास, हमीर, हरचरन, हरिकेस हरिदास, हाफिज, हेम क्षेम।

ब्रह्मचर्यका अद्वितीय आदर्श—

सुदर्शन-चरित्र।

यह उन्हीं स्वनाम धन्य, प्रातः स्मरणीय सेठ सुदर्शन का जीवन चरित्र है जिन्होंने मरणान्त दुःख सहकर भी अपने ब्रह्मचर्य्य व्रतको भंग नहीं किया। पहले वे कपिला की कसौटी में कसे गये, फिर अभया रानी ने अभय होकर अपनी काम कतरनी से जांचा, इसके बाद उन्होंने (तीन दिन तक अनशन रहकर) वेश्या हथौड़ी के हाव भाव की चोटें खायीं और अन्त में भूतनी के भभकते हुए उपद्रव-अग्नि कुण्ड में तपाये गये, किन्तु खरे सोने की भांति उनकी प्रभा बढ़ती ही गई। इस पुस्तक को यदि आप आद्योपान्त पढ़ जायंगे तो फिर कभी कामनी की काम कतरनी के दांव पर न आयंगे। नवयुवकों को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये। इसकी आख्यायिकायों में "त्रिय चरित्र जानै नहीं कोय, खसम मार कर सत्ती होय" वाली कहावत का पूरा पूरा खाका खींचा गया है। ऐसी विलक्षण पुस्तक आपने शायद आजतक कभी

गुरुदत्त शुक्ल, सूर्यमल्ल, पजनेस, सेवकराम, वेनीप्रवीण, दीन-दर्वेश, रामसहाय दास, ग्वाल, रघुराजसिंह, महाराज मानसिंह, प्रताप सिंह, राजा लक्ष्मणसिंह, दीनदयाल गिरि, मोतीराम, नवीन, गुलाब सिंह, लेखराज, शंकरसहाय अग्निहोत्री, छिड़द सिंह (माधव) बलदेवप्रसाद अवस्थी, लछिराम, अयोध्याप्रसाद वाजपेयी, ललिताप्रसाद त्रिवेदी, सरदार, श्रीधर भौन, रामचन्द्र शुक्ल।

नवीनों में—

गोविन्द गिल्लाभाई, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अनीस, बद्रीनारायण चौधरी, विनायक राव, प्रतापनारायण मिश्र, ईश्वरीसिंह चौहान, ला० सीताराम बी० ए० भूप, अम्बिकादत्त व्यास, लालबिहारी मिश्र, नाथूराम 'शंकर', जगन्नाथ प्रसाद भानु, श्रीधर पाठक, सुधाकर द्विवेदी, युगलकिशोर मिश्र, शिवसम्पति, महावीर प्रसाद द्विवेदी, राधाकृष्णदास, बालमुकुन्द गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय, किशोरीलाल गोस्वामी, पं० भगवानदीन मिश्र लाला भगवानदीन, जगन्नाथदास रत्नाकर, राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' भैरवप्रसाद वाजपेयी मिश्र बन्धु, रामचरित उपाध्याय, सैयद अमीरअली 'मीर' छितिपाल, पं० कामताप्रसाद गुरु, जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी, हरिकृष्ण जौहर, पं० गिरिधर शर्मा, मेहरावण, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', रूपनारायण पाण्डेय, सत्यनारायण कविरत्न, मन्नन द्विवेदी 'गजपुरी', बद्रीनाथ भट्ट, माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिलीशरण गुप्त, लोचनप्रसाद पाण्डेय, लक्ष्मीधर वाजपेयी, रामनरेश त्रिपाठी, जयशंकर प्रसाद, शिवकुमार केडिया, गोपालशरण सिंह, मुरारिदान, चन्द्रकला, वियोगी हरि, सूर्यकान्त त्रिपाठी, अमृतलाल माथुर, गुलाब, सुमित्रानन्दन पन्त।

नहीं पढ़ी होगी। रोचकता के कारण इसके पढ़ने में उपन्यास का सा आनन्द आता है।

अगर आप व्यभिचार के विषधर कीड़े से देश को बचाना चाहते हैं, और स्त्री चरित्र के गूढ़ रहस्यों को जानना चाहते हैं तो इस आदर्श महापुरुष के जीवन चरित्र को अवश्य पढ़िये। इससे मनुष्य सच्चरित्र, बलवान तथा ऐश्वर्यवान बनने के साथ साथ ब्रह्मचर्य्य के महत्त्व को भली प्रकार जान सकता है और संसार के झूठे आनन्द को छोड़ जीवन के सच्चे पवित्र आनन्दामृत का पान कर मानव जीवन को सफल बना सकता है स्त्रियों के लिये भी इसमें अच्छा उपदेश दिया गया है।

उपयुक्त स्थानों में रंग बिरंगे १२ चित्र दिये गये हैं जिनमें २ तो बहुत ही बढ़िया तीन रंगे हैं और बाकी भिन्न भिन्न रंगों में इक रंगे हैं जिनके अवलोकन मात्र से ही कथा का आशय चित्त पर अङ्कित हो जाता है। चित्रोंकी सफाई छपाई अत्यन्त मनोरम होने के कारण पुस्तक की शोभा विचित्र बढ़ गई है। मूल्य १॥) रेशमी सुनहरी जिल्द सहित २)

धूर्त्ताख्यान।

इसमें पांच महाधूर्त्तों के पांच विचित्र आख्यान हैं, जो आश्चर्य्य और मनोरंजकता में एक दूसरे से बढ़ चढ़ कर हैं। पुस्तक पढ़नी शुरू करते ही तो आप समझेंगे कि इसमें निरी चंडूखाने की गप्पे हैं, पर एक ही आख्यान के पढ़ लेनेपर समझ जायंगे कि, इन गप्पों में भी कुछ गूढ़ार्थ भरा हुआ है। बीसों पौराणिक कथाओं की जानकारी आपको केवल इसी एक छोटीसी पुस्तक के पढ़ने ही से हो जायगी। आप कैसे ही गंभीर प्रकृति के मनुष्य क्यों न हों इस के किसी किसी स्थल को पढ़-

कर हांसी को किसी तरह नहीं रोक सकेंगे। आख्यानों का आशय भली प्रकार प्रकट करने के लिये उपयुक्त स्थानों में विवध रङ्गों के ६ हाफटोन चित्र भी दिये गये हैं यह हिन्दी साहित्य में अपने ढङ्ग की पहली पुस्तक है। मूल्य केवल ॥)

साहित्य परिचय।

इस पुस्तक में साहित्य-काव्य के प्रायः सभी अङ्गों का संक्षिप्त परिचय दिया गया है जिनके जानने से साधारण से साधारण आदमी भी कविता के मर्म को अच्छी तरह समझ सकता है। इसमें निम्नलिखित निबन्ध हैः—१ कविता क्या है? २ कविता की आवश्यकता ३ कविता से कवि को लाभ ४ कविता से समाज को लाभ ५ कविता निर्माण ६ कविता की भाषा ७ रस निरूपण ८ नायिका भेद ९ अलङ्कार वर्णन १० छन्द परिचय ११ शब्द और उसकी शक्तियां १२ ध्वनि १३ गुण और दोष। प्रत्येक विषय को समझने के लिये इतने अधिक उदाहरण दिये गये हैं और वे इतने रोचक हैं कि पुस्तक पढ़ते समय ऐसा मालूम होता है मानो कोई संग्रह पुस्तक पढ़ रहे हैं विशेषतः रस निरूपण और नायिका भेद वाले निबन्ध पढ़कर तो तबियत एक दम ही फड़क उठती है। यह पुस्तक काव्यप्रेमियों के लिये हृदयका हार, विद्यार्थियों के लिये पाठ्य पुस्तक और सर्व साधारण के लिये साहित्य-क्षेत्र तक पहुंचाने वाली शीघ्रगामी मोटर है। इस एक ही पुस्तक के भली प्रकार पढ़ लेने और मनन कर लेने पर एक साधारण से साधारण आदमी भी काव्य-मर्मज्ञ, कवि और समालोचक सभी कुछ हो सकता है। मूल्य १) रु०

वीरांगना वीरा।

इस पुस्तक में उदयपुर के महाराणा उग्रसिंह की उपपत्नी "वीरा" के उस समय के अद्भुत वीरत्व का वर्णन किया गया है. जिस समय महाराणा ने सम्राट अकबर को सात बार युद्ध में पराजित किया था। महाराणा की सफलताके कारण स्वरूप कृष्णसिंह, जयमल और वीरांगना 'वीरा' की अपूर्व वीरता देखनी हो और वीर क्षत्रानियों के रण-कौशल और अद्भुत कृत्यों का ऐतिहासिक वर्णन पढ़ना हो तो इस पुस्तक को अवश्य मंगाइये। इसकी पद्य रचना वर्त्तमान लोकरुचि के अनुकूल खड़ी बोली में हरीगीतिका (भारत भारती के तरह के) छन्दों में की गई है। कविता सरस एवं भाव पूर्ण है। प्रत्येक पद से वीर रस चुआ पड़ता है। मू० ।।)

नित्य नियमावली।

इस पुस्तक के विषय में अधिक लिखने की कोई आवश्यकता नहीं। क्योंकि बहुत थोड़े समय में इसका दूसरा संस्करण ही इसके सर्वोपयोगी होने का प्रमाण है। जहां अधिकांश पुस्तकें बिना मूल्य वीतरण होती हो वहां मूल्यवाली पुस्तक धड़ाधड़ बिकने लगे तो समझना होगा कि पुस्तक उपयोगी एवं लोक प्रिय है इस में सन्देह नहीं। प्रथमावृत्ति की अपेक्षाय इस प्रस्तुत आवृत्ति में ३२ पृष्ठ अधिक है। कितनी ही उपदेशिक एवं तपस्वियों के गुणों की ढालें इस में संग्रह कर दी गई है। यही इस द्वितीयावृति की प्रथमावृति से विशेषता हैं। इतने पर भी दाम नहीं बढ़ाया गया। नित्य-नियम के लिये यह एक ही पुस्तक पर्याप्त हैं। श्रावक मात्र के पास इस की एक २ कापी

रहनी परमावश्यक है। श्रावक के लिये स्वाध्याय करने योग्य है। बिना जिल्द वाली पुस्तकें कम बिकने के कारण इसबार सिर्फ जिल्द वाली ही तय्यार कराई गई है पृष्ठ संख्या २१४ मूल्य रेशमी सुनहरी जिल्द ॥)

मिलनेका पता—

ओसवाल प्रेस।

१९. सोनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।

॥ श्रीः ॥

भिक्षु जश रसायण ।

संशोधक—

महालचन्द बयेद

प्रकाशक—

ओसवाल प्रेस ।

नं० १६, सीनागोग ष्ट्रीट, कलक

मिलनेका पता—

कस्तूरचन्द सूरजमल चौधरी ।

जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी ।

मु० बड़ नगर (मालवा) ।

वीर निर्वाणाब्द २४५४ ।

द्वितीयावृत्ति २५००]   [मूल्य २) रुपया ।

प्रकाशक—

महालचन्द बयेद।

ओसवाल प्रेस।

१६ सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।

मुद्रक—

महालचन्द बयेद।

ओसवाल प्रेस

१६ सीनागोग स्ट्रीट, कलकत्ता।

भूमिका ।

श्वेताम्बर जैन धर्मावलम्बियों में तेरापन्थी सम्प्रदाय वालों के लिये इस पुस्तक का परिचय प्रदान अनावश्यक है।

प्रातः स्मरणीय श्रीमदाचार्य्य स्वामी भिक्षुजी महाराज एक क्षण जन्मा महापुरुष थे। पुरातन शिथिलाचारों को दूर करके सनातन सत्य प्रकाश के लिये उन्होंने जो सङ्कल्प किया उसको कितनी बाधा विपत्तियां सहते हुए भी पूर्ण किया सो इस पुस्तक में वर्णन किया गया है।

यह पुस्तक महापुरुष का अलौकिक जीवन वृत्तान्त तो है ही; साथ साथ उनके सम सामयिक धर्ममतों का पता भी इस से चल सकता है। इस के कर्ता श्रीमद् जीतमलजी स्वामी हैं। जो आचार्य्य श्री के चतुर्थ पट धर हुए।

भाषा मारवाड़ी है। वर्त्तमान काल के ढंग से यह नहीं लिखा गया है। पर हमारी समझ में यही इसका विशेषत्व है। ऐतिहासिक वा भाषा तत्वविद् पण्डितों के लिये इस पुस्तक का समादार इसी लिये होना चाहिये। क्योंकि कोई धर्म मत के प्रचारक महात्मा की जीवनी, उनकी जीवनकालिक घटनावली तथा उसकी उपदेशावली यथा सम्भव उसी समय की भाषा में होने से उसका यथार्थ स्वरूप ठीक २ मालूम हो सकता है।

तेरापन्थी मात्र इस पुस्तक को सादर अपनावेंगे इसमें कोई शंका नहीं, परन्तु अन्यान्य मत वाले इस पुस्तक से तेरापन्थी मत के प्रति-

ष्टाता के धार्मिक जटिल प्रश्नों पर सरल व सहज दृष्टान्त द्वारा समाधान की शैली देख के मुग्ध होंगे।

स्थानक वासी सम्प्रदाय से अलग होने के वक्त पूज्यपाद श्रीमद् भिक्षु स्वामी के अनुयायी साधु व श्रावक बहुत ही थोड़े थे। साम्प्रदायिक व धार्मिक मत भेद से भारत के जल वायु के प्रभाव से भीषण ईर्षा द्वेष उत्पन्न होता है, यह इस देश के लोगों का स्वभाव सा ही है। परन्तु प्रबल बाधा के सम्मुखीन होकर जो महा पुरुष अपने ध्येय व लक्ष्य पर अटल अचल रहकर पहुंचते हैं वे क्रमशः लोगों के वन्दनीय व नमस्य हो जाते हैं। भारत के या जगत के प्रसिद्ध २ जितने धर्म मतप्रचारक महापुरुष आविर्भूत हुए हैं प्रायशः प्रथम जीवन में उनको विषम बाधाओं का सामना करना पड़ा है। पर यह सब बाधायें उनका अन्तर्निहित अदम्य तेज को अधिकतर प्रज्वलित किया ज्यों ज्यों बाधाये बढ़ी है त्यों त्यों महापुरुषों का महत्व का अधिकाधिक परिचय मनुष्य मात्र पाकर चकित विस्मित व पुलकित हुए हैं। जो लोग प्रारम्भ में विद्वेषी थे वही शेष में महापुरुषों का धैर्य, क्षमा, अदम्य अध्यवसाय, दृढ़चित्तता, सत्यपरआस्था और अलौकिक भावों से मुग्ध हो उनके भक्तों में सम्मिलित हुए हैं ऐसा दृष्टान्त इतिहास में बहुत मिलते हैं और यह पुनः आचार्य्य प्रवर श्रीमद् भिक्षु स्वामी के जीवन में भी परिस्फुट है।

भारत की आर्य्य-भूमि आध्यात्मिक उन्नतिप्रयासी महापुरुषों का आविर्भाव क्षेत्र है। युग युगान्तर से यह बात बार बार सिद्ध हो चुका है। अवश्य कुछ लोकमान्य महापुरुष नवीन मत के प्रवर्तक होकर अनेक शिष्य व भक्त पाये हैं और अब भी उन लोगों का मत प्रचलित है। परन्तु जैन धर्म जैसा "अहिंसा" का दृढ़ भित्ति पर स्थापित सनातन शाश्वत धर्म को शताब्दियों का शिथिलाचार से मुक्त करके प्रबल प्रतिद्वन्द्वियों के सामने खड़ा होनेका साहस अकेला भिक्षु स्वामी ही किया था। सिंह विक्रम से उन्हों ने सबका कुतर्क-जाल छिन्न भिन्न करके अपना मत का प्रचार किया। जहां पहले फकत १३ साधु

व इतने ही श्रावक थे आज वहां सैकड़ों श्रमण श्रमणी व लाखों श्रावक श्राविका श्री पूज्य भिक्षु स्वामी के मार्गको अङ्गीकार किये हुए हैं।

जैन आगमोंका रहस्य सरल सुबोध्य भाषा में साधारण मनुष्य के समझाने के उद्देश्य से ढाल दोहा चौपाई आदि नाना छंदों में आचार्य प्रवर के भाषणों का सार संग्रह करके रचा गया है। साधारण अल्प ज्ञान वाले निरक्षर व्यक्ति भी सुललित पद्यबंध धर्म ग्रन्थ को सहज में कण्ठस्थ रख सके इस लिये प्रायशः साधारण जनता में इसका आदर होता है। हिन्दीमें तुलसीदास जी का रामायण, बङ्गला में कृत्तिवासी रामायण काशीरामदास का महाभारत, चैतन्य चरितामृत आदि ग्रन्थ जैसा आबाल वृद्ध वनिता आदर की दृष्टि से देखते हैं वैसे ही जैन समाज में भी धार्मिक कथा व उपदेशावली अधिकतर पद्य में ढाल दोहा चौपाई आदि में होने के सबब आदरनीय है।

इस ग्रन्थ का कर्त्ता परम पूज्य श्री १००८ श्री जीतमलजी स्वामी (जो "जय गणि" नाम से प्रख्यात है) का संक्षेप में परिचय देना यहां अप्रासंगिक न होगा। आपका शुभ-जन्म "मारवाड़ में रोयट ग्राम में ओसवाल वंश में गोलेछा जाति में सं० १८६० । आश्विन शुक्ला २ को हुआ था। श्रीमद् भिक्षु स्वामी का स्वर्गवास १८६० भाद्र शुक्ल १३ को हुआ था। अतः ग्रन्थकर्त्ता श्री मज्जयाचार्य्य भिक्षु स्वामी के जीवन-चरित्र जो भिक्षु यश रसायण नामसे प्रकाशित किया वह प्रमाणिक होने में कोई सन्देह नहीं हो सकता। साधुओंकी रीति अनुसार आचार्य्य के जीवन की प्रधान प्रधान घटनावली का उल्लेख करके रखा जाता है। इसके अलावे श्रीमद् भिक्षु स्वामी के समसामयिक साधु मुनिराजों से श्रवण करके ग्रन्थ रचा गया इस लिये इसमें वर्णितघटनावली बड़ी ही प्रमाणिक मानी जाती है।

श्री मज्जयाचार्य्य का पांण्डित्य का वर्णना करना मादृश अल्प बुद्धि वालों के लिये असंभव है। उनका रचा हुआ "भ्रम विध्वंसन" ग्रंथ जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी मत का एक बड़ा ही अमूल्य ग्रंथ है।

तेरापन्थी मत से दूसरे सम्प्रदाय वालों का जो जो बातों में फरक है उसका समाधान शास्त्रीय प्रमाणों से बड़ा ही विस्तार से करके हर-एक की शंका दूर करने का सहज व सरल उपाय रख गये। आप श्री भगवतीसूत्र की भाषा में जोड़ करके अपनी अपूर्व प्रतिभा व पाँण्डित्य का निदर्शन रख गये हैं। आपका रचा हुआ लगभग ३-३॥ लाख गाथा होगा। इसीसे आपका विद्वत्व ; कवित्व व पांण्डित्य का सामान्य दिग्दर्शण हो जायगा।

इस ग्रंथ की भाषा मैंने ऊपर में ही कहा है कि "मारवाड़ी" है। इसलिये शुद्ध संस्कृत बहुल हिन्दी भाषा जाननेवाले इसके बहुत से शब्दों के वर्णविन्यास से चौंक न उठें, मारवाड़ी भाषा के अनुसार ही शब्दों के वर्ण विन्यास है। व्याकरण दोष नहीं है।

हिन्दी व बङ्ग भाषा के विद्वानों से प्रार्थना है कि वे मारवाड़ी भाषा के इस महापुरुष की जीवनी पठन व अध्ययन करके अन्यान्य भाषा के चरित्र ग्रंथ से इसको तुलनात्मक समालोचना करें। धर्म मत के परीक्षा के लिये नहीं परन्तु मतप्रचारक के जीवन से उनके उपदेशावली से लाभ उठाने के उद्देश्य से इसे अपनावें। जैनमत के खास कर तेरापन्थी सम्प्रदाय के आचार्य्य तथा साधु महाराजों के बनाये हुए बहुत से ग्रंथ विद्वानों के देखने व मनन करने लायक है। इन ग्रंथों से ऐतिहासिकों को भाषा तत्वविदों को धर्म्म मत समालोचकों को. दार्शनिकों को बहुत सी सामग्री उनके गवेषणा के लिये मिलेगी। तेरापन्थी सम्प्रदाय के वर्त्तमान आचार्य्य श्रीमद् भिक्षु स्वामी के अष्टम पट्टधर परमपूज्य श्री १००८ श्री कालूरामजी स्वामी का व उनके शिष्य वर्ग का दर्शन सेवा करने से अन्य मतावलम्बी विद्वानों को जैन श्वे० तेरा पन्थी सम्प्रदायके अमूल्य ग्रंथराजि का परि-चय पा सकेंगे। साथ साथ साधुओं का दैनन्दिन कार्य्य कलाप व उपदेश व्याख्यान सुनकर कृतार्थ होंगे। जिन महापुरुष की जीवन कथा को दृष्टान्त में रखके जिनका जश रसायण से उत्तरोत्तर अधिक तर पाण्डित्य व प्रतिभाशाली अधिक तर तपस्वी, वैरागी, त्यागी,

मुनिराजों ने वर्त्तमान में तेरापन्थी संप्रदाय को अलङ्कृत कर रखा है उनके दर्शण की आकांक्षा इस वर्त्तमान पुस्तक के पठन से होगा यह स्वभाविक है। तेरा पंथी संप्रदाय के साधु-मुनिराज संसार से बिलकुल विरक्त रहते हैं। पुस्तकादि कुछ छपवाते नहीं। समस्त ग्रन्थ हस्तलिखित रखते हैं। कोई कोई श्रावक अध्यवसाय पूर्वक उनको कंठस्थ कर दूसरा हस्तलिखित प्रति बनवा के पीछे छपाते हैं। श्रीयुक्त महालचंदजी बड़ा ही परिश्रम व उद्योग करके यह पुस्तक छपाया है। आशा है समाज में तो उनका इस पुस्तक का आदर होगा ही परन्तु दूसरे समाज वाले इसका यथोचित पठन व आलोचना करके इस पर योग्य सम्मतियां देंगे एवं तेरापंथी समाज के अन्यान्य प्रकाशित हस्तलिखित ग्रन्थराजि पर औतसुक्य प्रगट करेंगे।

निवेदक—

छोगमल चोपड़ा।

प्रकाशक के दो शब्द ।

यद्यपि यह ग्रन्थ पहले भी बम्बई के किसी छापेखाने में छप चुका है। किन्तु वह किसी प्रयोजन का नहीं हुआ। छपा न छपा एक सा ही रहा। प्रूफ संशोधन तो नाम मात्र का भी नहीं हुआ। कहीं २ तो पंक्तिये और गाथे भी छूटे हुए हैं। सारांश यह कि सम्पूर्ण ग्रन्थ में दो चार पंक्तियें भी शुद्ध मिलनी मुश्किल है। ऐसी दशा में स्वामी जी के शिक्षा वाक्य और दृष्टान्तों का वास्तविक आनन्द इस पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ से प्राप्त होना और जीवनकालिक घटना का जानना एक प्रकार दुर्लभ सा हो गया है। ऐसी दशा इस ग्रन्थ रत्न की देख कर इच्छा हुई कि यदि मूल पड़त से मिलान कर इसका संशोधित संस्करण प्रकाशित किया जाय तो श्रावकों के लिये एक परम उपयोगी वस्तु होगी। क्योंकि संसार में शायद ही कोई ऐसा बुद्धिमान मनुष्य होगा जिनको अपने धर्माचार्य्य की जीवनकालिक-घटना-जानकारी की अभिलाषा न हों। इस ग्रन्थ से स्वामीजी की जीवन घटनावली की जानकारी तो होगी ही साथ २ स्वामीजी के दृष्टान्त, चरचा करने में बहुत कुछ सहायक होंगे।

संशोधन करना तो अपने वश की बात थी सो कर लिया गया। किन्तु प्रकाशित करनेका साहस किसी प्रकार नहीं हुआ। होता भी कैसे जहां भ्रमविध्वंसनम् और सुदर्शन चरित्र जैसे उत्तम ग्रन्थों की क्रमशः २, ४ वर्षों में ३०० और १०० पुस्तकों की खपत हों वहां प्रकाशक का साहस कहांतक हो सकता है यह पाठक ही विचारें। हर्ष की बात है कि श्रीयुक्त बाबू ईशरचन्दजी चौपड़ा, मगन भाई जवेरी दानचन्दजी चौपड़ा, रायचन्दजी सुराना, कस्तूरचन्दजी सूरजमलजी चौधरी और कुम्भकरणजी टीकमचन्दजी चौपड़े ने अपनी २ इच्छानुसार थोक पुस्तकें लेनी स्वीकार की। यह उपरोक्त उत्साही सज्जनों की सद्प्रेरणा का ही फल है कि आज मैं इस ग्रंथ रत्न का संशोधित संस्करण लेकर आप लोगों की सेवा में उपस्थित हो सका हूं।

इस पुस्तक के संशोधन करने में, भरसक सावधानी से काम लिया गया है; तथापि भूल करना मनुष्य का स्वभाव है अतः थोड़ी या बहुत भूलें प्रायः प्रत्येक मनुष्य से हो हो जाती है। यदि प्रमादवश या मेरी अल्पज्ञता के कारण कुछ भूल चूक या त्रुटियां रह गई हों तो उदारहृदय पाठक मुझे क्षमा करें।

निवेदक—महालचन्द बयेद ।

॥ श्रीजिनाय नमः ॥

भिक्षु जश रसायण

॥ दोहा ॥

सिद्ध साधु प्रणमी सखर, आणी अधिक उलास ।
सुख दायक आखूं सरस, चारू भिक्खु बिलास ॥१॥
गुणवंतना गुण गावतां, उत्कृष्ठ रसायण आय ।
पद तीर्थंकर पामिये, कह्यो सुज्ञाता मांय ॥२॥
शासन वीर तणे शमण, कह्या अधिक अधिकाय ।
गुण बुद्धि तप अरु ज्ञान करि, चउदश सहस सुहाय ॥३॥
सर्वज्ञ जिन मुनि सप्त सय, अवधि तेर सय आण ।
मन पज्जव सय पञ्च मुनि, चिउंसय वादी पिछाण ॥४॥
पूर्वधर तिण सय पनर, वैक्रे सप्त सय साध ।
समणी सहंस छतीस शुद्ध, चउदश सय निरुपाधि ॥५॥
सुधर्म्म जम्बू तिलक शिव, अन्य मुनि अमर विमाण ।
हिवडाँ पञ्चम कालमें, भिक्खु प्रगट्या भाण ॥६॥
चतुर्थ आरा ना मुनि, नयणाँ देख्या नांय ।
धन २ भिक्खु चरण धर, प्रत्यक्ष दर्शन पाय ॥७॥